वाह! ड्रामा वाह!

ड्रामा न्यायकारी है, कल्याणकारी है, एक्यूरेट है

वाह! ड्रामा वाह!

ड्रामा न्यायकारी है, कल्याणकारी है, एक्यूरेट है

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

यह पुस्तक केवल बी.के. भाई-बहनों की स्वउन्नति के लिए है।
(1969 से 2005 तक की अव्यक्त वाणियों के ज्ञान बिन्दु)

प्रथम संस्करण :

24 जून, 2014

प्रकाशक :

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आबू पर्वत– 307501 (राजस्थान)

मुद्रक :

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन
शान्तिवन, तलहटी,
आबूरोड – 307510 (राजस्थान)
फोन: 02974-228126

पुस्तक मिलने का स्थान:

साहित्य विभाग
शान्तिवन,
पाण्डव भवन,
ज्ञानसरोवर

दो शब्द

सृष्टि रूपी ड्रामा 5 हज़ार वर्षों में हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। यह अनगिनत बार पुनरावृत्त हो चुका है और होता ही रहेगा। हम जो पार्ट प्ले कर रहे हैं वो हमने पहले भी प्ले किया है, अब केवल उसे रिपीट करना है अत: मन की स्थिति ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे, ज़रा भी हिले नहीं, यह है श्रेष्ठ अवस्था।

इस अवस्था की प्राप्ति के लिए प्यारे बापदादा ने समय-समय पर ज्ञान के अनेक गुह्य प्वाइन्ट्स दिए हैं। प्यारे बापदादा ने कहा है, "सृष्टि एक खेल है, माया की परीक्षाओं को भी खेल समझो। साक्षीपन की सीट पर सैट होकर, वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदा हर्षित रहेंगे। घबराने के बजाए गहराई में जाकर अनुभव के नए-नए रत्न परीक्षाओं के सागर से प्राप्त करेंगे। प्रकृति का कोई भी तत्व भी हलचल में नहीं लावे, साधनों के आधार पर स्थिति का आधार न हो। मायाजीत के साथ-साथ प्रकृतिजीत भी बनना है। त्रिकालदर्शी बन निश्चिन्त रहो। हर कदम में कल्याण है। जिस बात में अकल्याण दिखाई देता है उसमें भी कल्याण समाया हुआ है सिर्फ अन्तर्मुखी होकर देखो। ब्राह्मणों का कभी अकल्याण नहीं हो सकता क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ पकड़ा है। तन का रोग हो जाए, माया के अनेक प्रकार के वार भी हों लेकिन खेल अनुभव हों। खेल में दुख नहीं होता, खेल किया जाता है मनोरंजन के लिए। तो खेल समझने से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे।"

प्यारे बापदादा ने यह भी बताया है कि यह सृष्टि-ड्रामा एक्यूरेट, न्यायकारी और कल्याणकारी है। प्रस्तुत पुस्तिका में सृष्टि-ड्रामा से सम्बन्धित ज्ञान-बिन्दुओं की स्मृति और धारणा से हम बापपसन्द अचल-अडोल स्थिति को प्राप्त करें और यह प्रेरणादायक पुस्तिका सभी ब्रह्मावत्सों को सम्पूर्णता की ओर अग्रसर करे, यही मेरी हार्दिक शुभ कामना है।

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश

विषय-सूची

1. ड्रामा की पृष्ठभूमि में एक बहुआयामी चिंतन 9
2. ड्रामा न्यायकारी है, कल्याणकारी है, एक्यूरेट है 19
   (01) मन की स्थिति ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे 19
   (02) जो भी गए, छुट्टी लेकर नहीं गए, ब्राह्मण कुल की ड्रामा में यह रस्म है ..19
   (03) क्यों, क्या, कैसे – यह हुआ पानी का मन्थन 20
   (04) बीती को बल भरने के रूप से सोचो 20
   (05) कर्म से पहले निश्चय करो, विजय हमारी हुई पड़ी है 20
   (06) परीक्षाएँ खेल हैं 21
   (07) सीट पर सैट होकर हर पार्टधारी का पार्ट देखो 22
   (08) तूफान को तोहफा समझने से हुल्लास और हिम्मत बढ़ेगी 22
   (09) मास्टर ज्ञान सागर के गुण की कॉपी की है स्थूल सागर ने 23
   (10) क्यों का संकल्प चन्द्रवंशी की क्यू में लगा देगा 23
   (11) पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना 24
   (12) क्वेश्चन स्वयं के प्रति भी और अन्य के प्रति भी 25
   (13) महारथियों की निशानी 26
   (14) यह हर जन्म के संस्कारों का रिकार्ड भरने का समय है 28
   (15) ड्रामा कभी-कभी याद रहता है तो राज्य भी कभी-कभी करेंगे 29
   (16) ब्राह्मणों का कभी अकल्याण नहीं हो सकता 29
   (17) क्या हुआ, क्यों हुआ, ऐसे नहीं होता – यह है व्यर्थ चिन्तन 30
   (18) वाह बाप, वाह ड्रामा, वाह मेरा पार्ट – यह स्मृति बनाती है जीवनमुक्त . 30
   (19) 16000 का लक्ष्य नहीं, नंबरवन आने के पुरुषार्थ का लक्ष्य रखो 31
   (20) कुछ भी हो, अपनी चढ़ती कला है 32
   (21) शान से परे होते हो तो परेशान होते हो 33
   (22) अनुभवी आत्मा बुरे में बुराई को न देख अच्छाई ही देखेगी 34
   (23) मुश्किल लगने का कारण अपनी कमजोरी है 34
   (24) बातों से किनारा हो जाए तो सदा सहजयोगी हो जाएँ 35
   (25) शरीर ठीक नहीं, बुद्धि तो ठीक है न 36
   (26) बड़ी बात को छोटा बनाओ 36
   (27) संकल्प की तीली लगाने से बिन्दी से साँप हो जाता है 37
   (28) न स्वयं कमजोर बनो, न दूसरों की कमजोरियों को देखो 37

(29) साक्षीपन की स्टेज डबल हीरो बनाती है 38
(30) वाह रे मैं पुण्य आत्मा, वाह रे मैं शिवशक्ति – इस स्मृति में सदा रहो . 39
(31) ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता 39
(32) कानपुर का मकान (सेन्टर) जला – गंगे दादी से मुलाकात जलना भी खेल, बचना भी खेल 40
(33) अनेक बार विजयी बने हैं और बनने वाले भी हैं 41
(34) बिन्दु और सिन्धु – ये दो बातें स्मृति में रख श्रेष्ठ सर्टिफिकेट लेना है .. 42
(35) कल हाय-हाय के गीत गाते थे, आज वाह-वाह के गीत गाते हो 43
(36) बाहर का रूप देख घबराने से अच्छी सोच बदल जाती, कर्मबन्धन में फंस जाते 43
(37) सारा ज्ञान एक डॉट (बिन्दी) शब्द में समाया हुआ है 44
(38) क्वेश्चन मार्क का टेढ़ा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ ... 45
(39) व्यर्थ रचना को कन्ट्रोल करो 46
(40) सोचने से कुछ नहीं होता, करने से होता है 47
(41) फंसो नहीं, मजबूर भी न बनो, हंस-हंस के काम करो 48
(42) अपने पार्ट को कम नहीं समझो 48
(43) निश्चय का फाउंडेशन पक्का है तो तूफान हिला नहीं सकता 49
(44) साइडसीन्स अनेक बार पार किए हैं 50
(45) जिसको निमित्त बनाया उसका जिम्मेवार बाप है 50
(46) निमित्त के लिए कुछ भी कहना अर्थात् बाप के लिए कहना 51
(47) ब्लड कनेक्शन से पद्मगुणा ज्यादा आत्मिक कनेक्शन होता है 51
(48) पहले थे "हाय-हाय" के गीत, अभी हैं "वाह-वाह" के गीत 52
(49) कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पावर कम होने के कारण – तीन शब्द 53
(50) ब्राह्मणों की दृष्टि में बुरा होता नहीं, बुरा सुनाई देता नहीं 54
(51) समाचार सुनते कल्प पहले की स्मृति से समर्थ रहें 55
(52) बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती, यह कल्प-कल्प की नूंध निश्चित है 56
(53) अपने लिए सोचते, यह तो होता ही है, दूसरे के लिए सोचते, क्यों होता है? 57
(54) सन्तुष्टमणि अर्थात् जो भी प्रश्न अपने प्रति या किसके भी प्रति उठता, उसका उत्तर स्वयं को पहले आता 58
(55) ब्राह्मणों के चरण पड़ रहे हैं जगह-जगह पर, इसमें भी राज़ है..... 59
(56) (ड्रामा में) सदा एक सीन तो अच्छी लगती नहीं 60

(57) फुटबाल के खेल में बॉल की तरह विघ्न आएगा तभी तो ठोकर लगाएँगे 60
(58) कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है, सहनशक्ति को बढ़ा देता है 62
(59) परिस्थिति रूपी बड़े से बड़ा पहाड़ भी आ जाए, जचल रहना 63
(60) कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा निर्णय शक्ति को बढ़ाओ 63
(61) बाहर से दिखने वाली हलचल में भी गुप्त कल्याण समाया है..... 63
(62) प्रकृतिपति हो, प्रकृति के खेल को देख हर्षित रहो 64
(63) माया और प्रकृति के पाँच-पाँच खिलाड़ी खेल के बिना नहीं रह सकते,
आप एन्जवाय करो 65
(64) जो भूलना है, सेकण्ड में भूल जाए,
जो याद करना है वह सेकण्ड में याद आए 65
(65) अच्छाई उठाने से ही नम्बर मिलते हैं..... 66
(66) राजधानी में आना अर्थात् ब्राह्मण परिवार में सन्तुष्ट रहना 67
(67) माया द्वारा ऊपर-नीचे करने में भी कल्याण है,
आपको अनुभवी बना रही है 68
(68) बेफिक्र आत्मा बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन कर लेती है 69
(69) बुराई को, नॉलेजफुल रूप से समझने के बाद,
अपनी बुद्धि में धारण मत करो 69
(70) नई बात नहीं, बहुत पुरानी है 70
(71) बिन्दी लगाने से बिंदू रूप सहज याद आ जाता है 70
(72) कितनी भी बड़ी समस्या हो लेकिन आप तो मास्टर सर्वशक्तिमान हो ना!
तो बड़े हुए ना! बड़े के आगे समस्या नहीं है लेकिन खेल है 71
(73) क्वेश्चन तब उठता है जब अच्छा नहीं लगता है।
इसलिए संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकण्ड अच्छे ते अच्छा .. 72
(74) जो विश्व का कल्याण करने वाला है
उसका अकल्याण हो ही नहीं सकता 73
(75) अटल निश्चय तो अटल विजय होगी 74
(76) जो भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ आती हैं,
उनमें ड्रामा का ज्ञान अति आवश्यक है..... 76
(77) माया अपनी स्क्रीन द्वारा आत्मा के बजाय
व्यक्ति वा बातें बार-बार सामने लाती है जिससे आत्मा छिप जाती है .. 78
(78) "बदलने" शब्द को आध्यात्मिक भाषा में आगे बढ़ना मानो।
"बदलना" माना बढ़ना 79
(79) "मुझे करना है"

(80) ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआएँ मिलती हैं 79
(81) ये तूफान भी गिफ्ट बन जाती है अनुभवी बनने की,
तो तोहफ़ा बन गया ना 80
(82) बाबा कहा और बाप के साथ का अनुभव उसी सेकण्ड,
उसी संकल्प में होता है 81
(83) सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींची हुई है 81
(84) जैसा समय वैसा अपने को एडजेस्ट कर सको,
ऐसा अभ्यास आगे चलकर आपके बहुत काम आयेगा 82
(85) संगम पर सारा खेल ही तीन बिन्दियों का है 83
(86) जब व्हाई शब्द आये तो फ्लाय शब्द याद रखो 84
(87) बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें,
बंधन के वश नहीं 85
(88) "मैं आत्मा हूँ", यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खज़ाना जमा होना 87
(89) अगर विदेही बनते हो, अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो,
सबकी विधि बिन्दी है 88
(90) जमा का खाता बढ़ाने की विधि है "बिन्दी" और गंवाने का रास्ता है
लम्बी लाइन लगाना, क्वेश्चन-मार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना 89
(91) अभी तक भी जमा का खाता जितना चाहिए उतना नहीं है 89
(92) व्याधि को भी वाह-वाह कहो 90
(93) ब्रह्मा बाप का यही हर बात में शब्द था, "नथिंग न्यू" 90
(94) जब कोई कारण सामने बनता है तो कारण का सेकण्ड में निवारण सोचो 91
(95) समय भी ब्राह्मणों को बार-बार देखता रहता है कि ब्राह्मण तैयार हैं? .. 92
(96) निश्चयबुद्धि की निशानी है – समस्या के समय समाधान स्वरूप 92
(97) समय प्रमाण सन शोज़ फादर का पार्ट ड्रामा की नूंध थी 93
(98) एक सेकण्ड में कोई भी व्यर्थ बात, कोई भी निगेटिव बात,
कोई भी बीती बात, उसको मन से बिन्दी लगाना आता है? 94
(99) पैसे में भी बिन्दी की कमाल, श्रेष्ठ आत्मा बनने में भी बिन्दी की कमाल 95
(100) प्वाइंट याद रखो, प्वाइंट लगाओ, प्वाइंट बन जाओ 96

ड्रामा की पृष्ठभूमि में एक बहुआयामी चिंतन

बेहद विश्व के इस रंगमंच पर जिस महालीला का हमें दर्शन होता है उसके सभी पात्र यवनिका (रंगमंच का परदा) के पृष्ठभाग में पहले से ही उपस्थित रहते हैं। रंगमंच पर अभिनय के नियमानुसार जिस समय जिसकी उपस्थिति अपेक्षित होती है, उसका आगमन होता है और निर्धारित भूमिका अदा करने के पश्चात् वह पुन: परदे के पीछे चला जाता है अर्थात् रंगमंच पर अन्यत्र भूमिका अदा करने चला जाता है। अनन्त काल से अभिनय की मोहक यात्रा, जीवन में अनेकानेक कटु-मृदु अनुभवों से प्राणों को स्पन्दित करती रहती है। घात-प्रतिघात, उत्थान-पतन, संघार-सृजन आदि की न जाने कितनी कथा-यात्राएं अतीत के स्मृति प्रदेश को आन्दोलित करती रहती हैं। सृष्टिचक्र में होने वाली इस महालीला का निर्णायक बिन्दु कहाँ है? साधारण जन-मन को तो इसका पता भी कहाँ हो पाता है। अरमानों की सजी-संवरी आस्था को लेकर मानव, विकास-यात्रा में गतिशील होने का पुरुषार्थ तो करता ही रहता है परंतु उसके हर कदम बढ़ाने में अदृश्य नियति (भाग्य) की प्रबल शक्ति खड़ी रहती है, जो मानव की संकल्पित इच्छा को, उसकी योजना के विपरीत जिधर चाहे उधर मोड़ देती है और उसे न चाहते हुए भी मुड़ना पड़ता है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि सफलता के सारे बिखरे सूत्र हाथ आ गए लेकिन शीघ्र ही समय की वेगवती धारा में वे सूत्र बिखर कर ऐसे बह जाते हैं कि उनके अस्तित्व का कहीं पता भी नहीं चलता है और व्यक्ति हतप्रभ-सा, लुटा हुआ, असहाय किनारे पर खड़ा-खड़ा देखता रहता है। मानव जीवन के प्रांगण में क्षण-प्रति-क्षण, घटनाओं का संयोग-वियोग, अनुकूल-प्रतिकूल आदि अनेक अध्यायों का निर्माण होता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति का

अंतर्मन अकस्मात् अवांछनीय घटना को आत्मसात् नहीं करना चाहता है लेकिन न चाहने से कुछ भी नहीं होता है। पलकें पूरी तरह खुल भी नहीं पाती हैं कि सपना टूट जाता है। अशुभ की बात छोड़ भी दें तो भी व्यक्ति शुभ चाहते हुए भी कितना शुभ करता है और अन्ततः वो कितना पाता है, यह सबका अपना-अपना व्यक्तिगत अनुभव होगा जिसे नकारा नहीं जा सकता।

नियति का अर्थ

उस स्थिति से यह स्पष्ट होता है कि लीला-चक्र में जो हुआ था, हो रहा है और होगा वह पूर्व नियोजित है। यह लीला या ड्रामा बना बनाया है। यह हू-ब-हू पांच हजार वर्ष में रिपीट होता रहता है। इसके परिवर्तन में व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है। विश्व की विशाल पृष्ठभूमि पर जड़ और चेतन के अनेक संयोगों और निमित्त के साथ जुड़कर जो घटना अतीत में घटी है, वर्तमान में घट रही है और भविष्य में घटेगी – वह सब पूर्व नियोजित है अर्थात् बना बनाया है। इसमें रत्ती भर भी रद्दोबदल की कोई गुंजाइश नहीं है। ड्रामा का यह राज त्रैकालिक सत्य है। जो होना था वही हुआ, वही हो रहा है और वही होगा। इस सत्य को प्रदर्शित करने के लिए कई शब्द हैं जैसे – संयोग, होनी, होवनहार, प्रालब्ध, भाग्य, ड्रामा या लीला इत्यादि। इसे ही हम नियति कहते हैं। अविराम लीला निरंतर चल रही है। ज्ञान की परिपक्वता के अभाव में व्यक्ति यही कहता है कि यह हमने किया, यह मेरा परिवार है, संपदा है, इसे मैंने मारा, इसे मैंने बचाया और न जाने कितने व्यर्थ के दायित्व का क्षुद्र अहम् अपने पर लादे रहता है। समय की गति बड़ी धीमी और बड़ी निर्मल है, उसकी राहें कहीं सम हैं तो कहीं विषम हैं। लेकिन पूर्व नियति की प्रक्रिया में ही सबको चलना है। भूत, वर्तमान और भविष्य की सारी क्रियायें अदृश्य शक्तियों के आगे संचालित होती

रहती हैं जिसे दार्शनिक चिंतन की भाषा में ड्रामा या नियति कहते हैं।

अतीत की जितनी क्रियायें सम्पादित हो गई या वर्तमान की महालीला में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रही हैं या भविष्य में होने वाली क्रिया के प्रति आस्था और अनास्था का सेतु निर्मित करती हैं, वे सब पूर्व नियत हैं और रहेंगी। नियति से अलग कुछ भी नहीं है। अध्यात्म का धनी साधक, कर्त्ता-भाव से नहीं लेकिन साक्षी-भाव से घटना प्रवाह को एकरस दृष्टि से निहारता रहता है। अणु-अणु में हो रहे प्रकम्पन पूर्व नियोजित हैं। जीवन-मृत्यु की क्रियाएँ नियत हैं। भाव और संकल्प के रूप में जो प्रकम्पन उठते हैं वे भी पूर्व नियत हैं। तीनों कालों में, जड़-चेतन में जो स्थिति बनती है, जो भी परिवर्तन होता है, चाहे वह अनुकूल या प्रतिकूल, निमित्त या साधन से हो रहा है वह होकर ही रहता है। क्योंकि यह सबकुछ नियति की क्रमबद्ध व्यवस्था है। चर्मचक्षुओं से देखने पर ऐसा लगता है कि हर्ष-विशाद, हानि-लाभ, संयोग-वियोग आदि घटनाओं का घटना, परिस्थिति के प्रभाव से हो रहा है लेकिन ज्ञान-ज्योति से दीप्त साधक यह अनुभव करता है कि सब कुछ पूर्व नियोजित है। हाँ, नियति के अनुरूप व्यक्ति इधर या उधर निमित्त हो सकता है।

सर्व पूर्व नियोजित है

होनी प्रबल है। अनेकों प्रमाण बेहद के ड्रामा में आपको देखने को मिलेंगे। परमात्मा की बात छोड़ भी दी जाये तो भी ज्योतिष शास्त्र ऐसे अनेक अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि भावी प्रबल है। प्राय: लोगों का अनुभव रहा है कि उन्हें आगे होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास स्वप्नावस्था में हो जाया करता है। घटना घटित हो जाने के बाद लोग कहते हैं कि इसकी सूचना मुझे पहले से ही थी। प्रश्न है – यह कैसे संभव है? स्वप्न में चलचित्र की तरह अन-अस्तित्व में उभर आना, कार्य और कारण की

क्रमबद्ध शृंखला, नियति ही है। योगियों के जीवन में ध्यान के क्षणों में शुद्ध अनुभूति में जो भी, जब भी भावी कार्य प्रतिबिम्बित हुआ है वह आगे चलकर निश्चित समय पर किंचित हेर-फेर के बिना ही सम्पादित हुआ है। वर्तमान में नेस्तरदुम्स की भविष्यवाणी का अध्ययन यह प्रमाण देता है कि 400 साल पहले ही उसने, आज होने वाली घटना को देख लिखा था। यह पूर्व नियोजित नियति नहीं तो क्या है? खैर छोड़िये, इसके दूसरे पहलू को देखें।

इच्छा पुरुषार्थ और प्रमाण – ये नियति के अंग हैं। यदि कोई साधक, पक्ष-मुक्त होकर, जागते हुए, अपने जीवन और आसपास के जीवन में घटनाओं का अध्ययन और अवलोकन करे तो उसे पता चल जायेगा कि कैसे अदृश्य रहस्यमयी नियति अपने आपमें शाश्वत सत्य सिद्धांत है। फिर प्रश्न उठता है कि यदि सर्व पूर्व नियोजित है, जो होना है वही होगा तो व्यक्ति करने में स्वतंत्र नहीं है? क्या यह सिद्धान्त जीवन में कर्म-योग की तेजस्विता को नष्ट नहीं कर देगा? क्या व्यक्ति इस चिंतन से आलसी नहीं हो जायेगा? आदि-आदि बातों पर आइये, तटस्थ दृष्टि से चिंतन करें। एक क्रूर व्यक्ति अचानक छोटी-सी घटना से करुणा की मूर्ति बन जाता है। भयंकर क्रोधी, करुणा का नहीं, क्षमा का अवतार बन जाता है। कुख्यात हत्यारा सज्जनता की साकार प्रतिमूर्ति बन जाता है। तब नियति की सच्चाई और उसकी महिमा का पता उस व्यक्ति को चलता है। जीवन बदलना हो तो क्षण में बदल जाता है, वरना वर्षों लग जाते हैं। बिना पुरुषार्थ के इतना बड़ा परिवर्तन, नियति नहीं तो और क्या है? श्रेष्ठ और शुभ का इतना बड़ा परिवर्तन हो जाना यह नियति नहीं तो क्या पुरुषार्थ है? इसलिए नियति सर्वोपरि है।

नियन्ता-नियति के शीर्ष पर

सृष्टि के महान परिवर्तन में सब कुछ नियति ही नहीं है लेकिन नियति के भी शीर्ष पर नियन्ता बैठे हैं। जिन्हें हम परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं। वे नियन्ता हैं। सृष्टि की नियति में वे कोई अलग से बदलाव नहीं करते हैं लेकिन वे नियति की पकड़ से सदा-सर्वदा मुक्त हैं। इस महालीला में जो संयोग से दुख-सुख की घटनाएँ होती हैं वे मनुष्यात्मा और प्रकृति की बनाई क्रमबद्ध शृंखला हैं लेकिन नियन्ता नियति की सभी गतिविधियों को देखते और जानते हैं, उसके फल और परिणाम से सदा मुक्त अपना परम विशिष्ट स्थान रखते हैं। वह इस सृष्टि में हो रही महालीला में बहुत काल तक मुनष्य के सुख-शान्तिपूर्ण जीवन की नियति बनाने के निमित्त अपना पार्ट बजाने आते हैं। उनका यह कहना कि मैं भी ड्रामा के मीठे बन्धन में बंधा हूँ, उनकी परम निर्माणता है। अन्यथा वे तो हमारी तरह कर्म का फल नहीं लेते, पार्ट या नियति के अधीन शरीर से कभी बंधते नहीं हैं। जब चाहे आते हैं, जब चाहे जाते हैं, परम स्वतंत्र हैं। जबकि कोई भी व्यक्ति नियति से स्वतंत्र नहीं है। स्थान और समय की सीमा से पार जहाँ नियति की कोई पग-ध्वनि भी सुनाई नहीं देती, उस शांतिधाम में वे सदा मुक्त रहते हैं। नियति के कल्याण और अकल्याण से सदा दूर, वे सदा कल्याणकारी नियति का पार्ट बजाते हैं और आधाकल्प तक सृष्टि के कल्याण की नियति, सुख की नियति बनाने का पार्ट बजाने के निमित्त बनते हैं। इसीलिए भी हम उसे नियन्ता कहते हैं। जगत-नियन्ता परमपिता परमात्मा शिव ने हमें बताया है कि हे आत्माएँ! प्रत्येक मनुष्यात्मा को उसके पूरे जन्मों का तीन चौथाई भाग सुख की नियति है। ड्रामा अल्पज्ञता के कारण सुख और दुख का अनुभव कराता है लेकिन सत्य तो यही है कि यह अन्ततः कल्याणकारी नियति से जुड़ा है।

नियति के चिंतन से लाभ

नियति की समझ व्यक्ति को आलसी नहीं कर्मशाली बनाती है। नियति का चिंतन व्यक्ति को सभी प्रकार की दुश्चिन्ताओं से मुक्त कर देता है। इससे कभी भी किसी के प्रति ईर्ष्या या नफरत का भाव नहीं पनपता। होनी ही होगी, अनहोनी न कभी हुई है, न कभी होगी। शांतचित्त से कर्म करना है। यदि उसे समय पर होना है तो होकर रहेगा अन्यथा नहीं। अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही फल नियन्ता को समर्पित कर देने चाहिएँ। इसीलिए नियतिवाद का सिद्धांत मानव मन को निष्कलुष ज्ञान की तेजोमय आभा से हर क्षण दीप्त रहने का मंगल संदेश देता है। यह चिंतन वह प्रशांत सागर है जहाँ विकारों का हाहाकार करता तूफान शांत हो जाता है और एक परमशांत, स्निग्ध वातावरण की मंद सुगंध में आत्मा लीन हो जाती है। नियति और नियंता के इस रहस्य को सकारात्मक पहलुओं से जानकर एकरस स्थिति को उपलब्ध कर लेना, यह भी नियति है। आप समझ सकते हैं तो समझिये अन्यथा यह भी आपकी नियति है।

साक्षी

जीवन का लक्ष्य आनन्द की प्राप्ति है और सभी उसके लिये प्रयत्नशील हैं। लेकिन आनन्द के लिए निरंतर चेष्टारत रहने पर भी आज मानव मात्र दुखी एवं अशांत हैं। तो अवश्य मानना पड़ेगा कि मनुष्य का जीवन के प्रति दृष्टिकोण भ्रामक और गलत हो गया है। आनन्द की प्राप्ति के लिए हमने जो रास्ता पकड़ा है, उस पर आगे बढ़ते जाने से यदि निरंतर दुख ही मिले तो रुक कर सोचने की आवश्यकता होगी कि कहीं हमने गलत रास्ता तो नहीं पकड़ लिया है। वास्तव में आज हमारा जीवन के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण नहीं है।

सृष्टि एक विराट रंगमंच है जहाँ विविधतापूर्ण मनोरंजक नाटक चल

रहा है। नाटक का आनंद लेने के लिए साक्षी भाव अत्यावश्यक है। जिससे हम तादात्म स्थापित कर लेते हैं वह "संसार" बन जाता है और जिससे हम साक्षी का भाव रखते हैं वह "नाटक" हो जाता है। इतना ही तो अन्तर है संसार और नाटक में। यह अंतर मूलत: दृष्टिकोण का है। पीलिया के रोगी को सबकुछ पीला ही दिखलाई पड़ता है और सावन के अन्धे को हरा ही हरा। नेत्रों पर काला चश्मा होने पर वही वस्तु काली दिखलायी पड़ती है और लाल चश्मा होने पर लाल। तादात्म तथा आसक्ति की मनोवृत्ति होने पर संसार दुखदायक जटिल और जंजाल मालूम पड़ता है और साक्षी तथा अनासक्ति की मनोवृत्ति होने पर आनंददायक नाटक। अत: परिस्थिति नहीं स्वस्थिति को बदलने का पुरुषार्थ करना है। साक्षी की स्थिति में स्थित व्यक्ति के लिए यह संसार नाटक बन जाता है। वह अनेकानेक आत्माओं के विविध पार्ट को देखकर सदा हर्षित होता रहता है। मनोरंजन के लिये उसे किसी नाट्यशाला या सिनेमा हाल में जाने की आवश्यकता नहीं रहती। उसके सम्मुख सदा-सर्वदा मनोरम-मनोरंजक नाटक चलता रहता है। शत्रु-मित्र, स्वजन-परिजन के विभिन्न खेल को देखकर वह हमेशा हल्का और प्रफुल्लित रहता है। इसके विपरीत यदि तादात्म की मनोवृत्ति हो तो नाटक भी संसार जैसा फँसाने वाला बन जाता है। नाटक के कल्पित पात्रों से तादात्म स्थापित कर लेने के कारण कितने लोग सिनेमा हाल में बैठकर आँसू बहाते हैं तथा भारी हृदय से बाहर निकलते हैं।

नाटक के पात्र को सदा आन्तरिक अनुभूति रहती है कि वह जो भी अभिनय कर रहा है, उससे अलग है। परिणामस्वरूप वह सुख-दुख के खेल से अनासक्त रहता है तथा अभिनय का आनंद लेता है। वस्तुत: हम आत्मायें भी इस सृष्टि-नाटक से परे ब्रह्मलोक की रहने वाली हैं तथा

ज्योतिबिन्दु स्वरूप हैं। इस सृष्टि-नाटक में हम शरीर धारण कर खेल, खेल रही हैं लेकिन यथार्थत: हम शरीर नहीं वरन् उससे न्यारी आत्मा हैं। हम आत्माएँ इस विराट सृष्टिनाटक में भाँति-भाँति के चोले धारण कर विविधतापूर्ण हार-जीत का मनोरंजक खेल, खेल रही हैं। परमधाम से इस सृष्टि-नाटक में हम खेल का आनंद लेने के लिये आये हैं, न कि इसमें फँसकर दुखी व अशांत होने के लिये। खेल में हम शत्रु-मित्र, पिता-पुत्र, पति-पत्नी का या अन्य कोई भी अभिनय कर सकते हैं लेकिन आत्मा रूप में हम सभी निराकार परमपिता शिव की संतान होने के कारण भाई-भाई ही हैं। अत: नाटक के अभिनय का कोई प्रभाव हम आत्माओं के मूल संबंध पर नहीं पड़ना चाहिए। यही जीवन का यथार्थ दृष्टिकोण है जिसे भूलकर मनुष्य का जीवन इतना कटुतापूर्ण तथा दुख-अशांतिमय बन गया है।

साक्षी अवस्था ही शांति की जननी है

किसी भी सिद्धांत की सत्यता की कसौटी व्यवहारिक जीवन में उसका परिणाम है। आसक्तिपूर्ण मनुष्य का जीवन सदा चिंतित, तनावग्रस्त तथा उलझनपूर्ण होता है। इसके विपरीत, साक्षी भाव वाला मनुष्य सदा निश्चिंत, हल्का और हर्षितमुख रहता है। कठिन से कठिन परिस्थति तथा विपत्ति में भी वह चलायमान नहीं होता बल्कि कठिनाइयों को विविधतापूर्ण नाटक का एक अंग मानकर अचल-अडोल बना रहता है। यदि कोई अपमान करे और आप साक्षी होकर देखें कि यह आत्मा अज्ञानवश उल्टा कार्य कर रही है जिसका दुखद परिणाम इसे भोगना पड़ेगा, तो जो अपमान पहले आपके हृदय में तीर की तरह चुभ जाता था, वह अब आपको तनिक भी स्पर्श नहीं करेगा। उस अज्ञानी आत्मा के प्रति आपके हृदय में क्रोध की जगह करुणा का उद्वेग होगा। अत: जो कटु वाक्य

आपकी कई दिनों की नींद और आराम को हराम कर देते थे, अब कुछ भी प्रभाव नहीं डाल पायेंगे। आपकी आत्मा कमल पुष्प सदृश्य मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, सुख-दुख से सदा ऊपर रहकर आनंदित रहेगी।

यह अनादि, निश्चित सृष्टि-नाटक इतना युक्तियुक्त और न्यायपूर्ण बना हुआ है कि कोई किसी को अकारण दुख नहीं देता। जो भी सुख-दुख हमें मिलता है वह अपने पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के कारण। अत: साक्षी वृत्ति वाला मनुष्य कष्ट और दुख को अपने पूर्व कर्मों का फल मानकर प्रसन्न होता है कि इनके द्वारा अपने विकर्मों का खाता समाप्त हो रहा है तथा कर्मातीत बनने जा रहे हैं। साथ ही सुखद भविष्य के लिए वह श्रेष्ठ कर्म करने का पुरुषार्थ भी करता रहता है। बीमारियों को वह अपना कर्मभोग मानकर साहसपूर्वक तथा प्रसन्नतापूर्वक सहन करता है और दूसरों के लिए एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करता है। कठिन रोगों में भी वह आनंदपूर्वक, पतितपावन परमपिता परमात्मा शिव की पावन स्मृति में रहता है। इससे रोग भी उसे कष्ट नहीं दे पाते तथा उसके विकर्मों का खाता भी शीघ्र समाप्त हो जाता है।

कठिनाइयाँ हमारी कमजोर मनोवृत्ति की सूचक हैं। समुचित मनोवृत्ति वाला मनुष्य पर्वत सदृश्य बाधाओं को भी राई बना देता है और गलत मनोवृत्ति होने पर राई भी रास्ते में पर्वत बनकर खड़ी हो जाती है। वास्तव में कठिनाइयाँ हमें सहनशीलता, निर्भयता तथा हर्षितमुखता का पाठ पढ़ाने के लिये आती हैं। कठिनाइयों को सहर्ष सहकर ही हमारी आत्मा अष्ट शक्ति सम्पन्न तथा सर्वगुण सम्पन्न बनती है। लेकिन जो कठिनाइयों से घबरा जाता है वह सदा के लिए निर्बल बन जाता है। साक्षी दृष्टि वाला मनुष्य कठिनाइयों का सदा स्वागत करता है तथा रास्ते की चट्टानों को भी स्वर्ग जाने की सीढ़ी बना लेता है। तूफान उसके लिये दिव्य गुणों के तोहफे

लाते हैं तथा लहरों की चपेटों को आनंदपूर्वक सहन कर वह ठिक्कर से ठाकुर बन जाता है।

"साक्षी" – इन दो अक्षरों में धर्म का तथा आनंद का रहस्य छिपा हुआ है। जिसने साक्षीभाव को जीवन में ग्रहण कर लिया, वही सच्चा धार्मिक है तथा उसी का जीवन पूर्ण आनंदमय है। परमात्मा आनंद के सागर हैं क्योंकि वे सदा साक्षी हैं। सृष्टि के उत्थान-पतन के खेल को वे साक्षी बन देखते रहते हैं क्योंकि ज्ञान-सागर में सृष्टि-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का यथार्थ ज्ञान है। मनुष्यात्मायें भी सतयुग-त्रेता में आत्म-अभिमानी होने के कारण सुखी थी परन्तु द्वापरयुग तथा कलियुग में देह-अभिमान के कारण उन्होंने साक्षीभाव को खो दिया और छोटी-मोटी बातों में "क्या", "क्यों", "कैसे" आदि प्रश्नों की झड़ी लगने लगीं, फलस्वरूप, वे घोर दुखी-अशांत हो गई। ऐसे समय में ज्ञानसागर परमात्मा हमें फिर से अनादि-निश्चित ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर पूर्ण साक्षी बना रहे हैं। सृष्टि-नाटक को तथा अपने संकल्पों-विकल्पों को साक्षी होकर देखने वाला मनुष्य ही सच्चा योगी है।

ड्रामा न्यायकारी है, कल्याणकारी है, एक्यूरेट है

मन की स्थिति ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे

मनमनाभव का अर्थ बहुत गुह्य है। ड्रामा सेकण्ड बाय सेकण्ड जिस रीति से, जैसे चलता है उसी के साथ-साथ मन की स्थिति ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे, जरा भी हिले नहीं, चाहे संकल्प से वा वाणी से, ऐसी अवस्था हो।

जो भी गए, छुट्टी लेकर नहीं गए, ब्राह्मण कुल की ड्रामा में यह रस्म है

कोई भी ऐसा न समझे कि ना मालूम बिन हम बच्चों की छुट्टी के साकार बाबा को वतन में क्यों बुलाया। लेकिन छुट्टी दिलाते तो आप देते? इसीलिए ड्रामा में पहले भी देखा कि जो भी गये छुट्टी लेकर नहीं गये। इसलिए यह समझो कि ब्राह्मण कुल की ड्रामा में यह रस्म है। जो ड्रामा में नूंधी हुई है वह रस्म चली।

अभी सभी के दिल में यही संकल्प है कि अब जल्दी-जल्दी ड्रामा की सीन चलकर खत्म हो। लेकिन जल्दी होगी? हो सकती है? होगी या हो सकती है? भावी जो बनी हुई है, वही तो बनी हुई, बनी ही रहेगी।

स्नेह को देखते हैं तो ड्रामा तो याद आ जाता है। ड्रामा जब बीच में आता है तो साइलेन्स हो जाते हैं। स्नेह में आये तो क्या हाल हो जायेगा। नदी बन जायेंगे। लेकिन नहीं, ड्रामा। जो कर्म हम करेंगे वह फिर सभी करेंगे इसलिए साइलेन्स। अगर सभी साथ होते तो जो अन्तिम कर्मातीत अवस्था का अनुभव था वह ड्रामा प्रमाण और होता। लेकिन था ही ऐसे इसलिए थोड़े ही सामने थे। सामने होते भी जैसे सामने नहीं थे। स्नेह तो वतन में भी है और रहेगा। अविनाशी है ना। लेकिन जो सुनाया कि स्नेह

को ड्रामा साइलेन्स में ले आता है और यही साइलेन्स, शक्ति को लायेगी।

क्यों, क्या, कैसे – यह हुआ पानी का मन्थन

वर्तमान समय जो प्वाइंट ध्यान में रखनी है वह है यह होली की अर्थात् ड्रामा के ढाल की। जब ऐसे मजबूत होंगे तब यह रंग भी पक्का लग सकेगा। अगर होली का अर्थ जीवन में नहीं लायेंगे तो रंग कच्चा हो जाता है। पक्का रंग रंगने के लिए हर वक्त सोचो – हो ली, जो बीता, हो ही गया। ड्रामा की सीन पर मंथन करना – क्यों, क्या, कैसे – यह किस चीज़ का मंथन है? दही को जब मंथन किया जाता है तब मक्खन निकलता है। अगर पानी को मंथन करेंगे तो क्या निकलेगा? कुछ भी नहीं। रिजल्ट में यही होगा, एक तो थकावट, दूसरा, टाइम वेस्ट। इसलिए वह हुआ पानी का मंथन। ऐसा मंथन करने के बजाए ज्ञान का मंथन करना है।

बीती को बल भरने के रूप से सोचो

अगर बीती हुई बातों को सोचते रहेंगे तो यह भी एक समस्या हो जायेगी। समस्यायें तो बहुत आती हैं, यह भी एक नई समस्या खड़ी कर देंगे। बीती को परिवर्तन में जाने, बल भरने के लिए, उस रूप से सोचो। यह क्यों, कैसे हुआ, अब कैसे होगा, जम्प दे सकूंगा या नहीं, क्वेश्चन नहीं करो। क्वेश्चन-मार्क के बदली फुलस्टॉप, बिन्दी लगाओ।

कर्म से पहले निश्चय करो, विजय हमारी हुई पड़ी है

सदैव हर संकल्प निश्चयबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो, तो अब वही रिपीट नहीं करेंगे? वही बना

हुआ है लेकिन अब फिर से रिपीट कर ''बना-बनाया"जो कहावत है उसको पूरा करना है।

परीक्षाएँ खेल हैं

यह सृष्टि एक खेल है, यह तो मुख्य बात है लेकिन माया की भिन्न-भिन्न परीक्षायें, परिस्थितियाँ जो आती हैं इनको भी आप खेल समझो तो खेल में कभी परेशान नहीं होंगे, हंसते रहेंगे। तो परीक्षायें भी खेल हैं। तीसरी बात, खेल समझने से जो भी भिन्न-भिन्न वैरायटी संस्कारों का पार्ट देखते हो, उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात् खेल नूंधा हुआ है, यह स्मृति में आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी। सदैव एकरस अवस्था रहेगी। जब स्मृति में होगा कि यह वैरायटी पार्ट, ड्रामा अर्थात् खेल है तो वैरायटी खेल में पार्ट न हो, कभी यह हो सकता है क्या? जब नाम ही है वैरायटी ड्रामा। जैसे हद के सिनेमा में भिन्न-भिन्न नाम से भिन्न-भिन्न खेल होते हैं। समझो नाम ही है – खूनी नाहक खेल – फिर उसमें अगर कोई भयानक व दर्दनाक सीन देखो तो विचलित होंगे क्या? क्योंकि समझते हो कि खेल ही खूनी नाहक का है। पहले से ही ऐसा समझकर फिर उसे देखेंगे। वैसे ही मानो कोई लड़ाई, झगड़े, क्रोध की स्टोरीज़ हैं तो उनको देखकर हंसेंगे या रोयेंगे? जरूर हंसेंगे ना? क्योंकि जानते हो कि यह एक खेल है। ऐसे ही इस बेहद के खेल का नाम ही है वैरायटी ड्रामा तो उसमें वैरायटी संस्कार, वैरायटी स्वभाव, वैरायटी परिस्थितियाँ देखकर कभी विचलित होंगे क्या? या उसे भी साक्षी हो एकरस स्थिति में स्थित हो देखेंगे? तो अगर यह समझो व याद रखो कि यह एक वैरायटी खेल है तो जो पुरुषार्थ करने में मुश्किल समझते हो, क्या वह सहज नहीं हो जायेगा?

सीट पर सैट होकर हर पार्टधारी का पार्ट देखो

जब मेले को भी और खेल को भी भूल जाते हो तो स्वयं को परेशान करते हो क्योंकि स्मृति अर्थात् साक्षीपन की सीट छोड़ देते हो। सीट को छोड़कर अगर कोई ड्रामा को देखे तो फिर क्या हाल होगा उसका? तो सीट पर सैट होकर, वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे। मुख से वाह-वाह निकलेगी। वाह मीठा ड्रामा! यह ''क्या हुआ, क्यों हुआ'' यह नहीं निकलेगा बल्कि ''वाह-वाह'' शब्द मुख से निकलेंगे अर्थात् सदा खुशी में झूमते रहेंगे। सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिमान अनुभव करेंगे। क्या ऐसे स्वयं को प्रैक्टिकल में अनुभव करते हो?

तूफान को तोहफा समझने से हुल्लास और हिम्मत बढ़ेगी

चढ़ती कला की निशानी क्या है, क्या वह जानते हो? सदा लगन में मग्न और विघ्न-विनाशक, ये दोनों निशानियाँ क्या अनुभव में आ रही हैं? विघ्नों को देख विघ्न-विनाशक बनने के बजाय, अपनी स्टेज से नीचे तो नहीं आ जाते हो? क्या अनेक प्रकार के आये हुए तूफान आप की बुद्धि में तूफान तो पैदा नहीं करते हैं? जैसे कोई के द्वारा तोहफ़ा मिलता है तो बुद्धि में हलचल नहीं होती है बल्कि हुल्लास होता है। इसी प्रकार आये हुए तूफान हुल्लास बढाते हैं या हलचल बढाते हैं? अगर तूफान को तूफान समझा तो हलचल होगी और तोहफा समझा व अनुभव किया तो उसी से हुल्लास और हिम्मत अधिक बढ़ेगी। यही है चढ़ती कला की निशानी। घबराने के बजाय गहराई में जाकर अनुभव के नये-नये रत्न इन परीक्षाओं के सागर से प्राप्त करेंगे। तो क्या ऐसे अनुभव करते हो? यह क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है और ऐसे कैसे चलेगा? ये जो संकल्प चलते हैं इनको हलचल कहा जाता है। हलचल के अंदर रत्न समाये हुये हैं।

ऊपर-ऊपर से बहिर्मुखता की दृष्टि और बुद्धि द्वारा देखने से हलचल दिखाई देगी अथवा अनुभव होगी लेकिन उसी आयी हुई बातों को अंतर्मुखी दृष्टि व बुद्धि से देखने से अनेक प्रकार के ज्ञान-रत्न अर्थात् प्वाइन्ट्स प्राप्त होंगे।

मास्टर ज्ञान सागर के गुण की कॉपी की है स्थूल सागर ने

अगर कोई भी बात को देखते या सुनते हुए आश्चर्य अनुभव होता है तो यह भी फाइनल स्टेज नहीं है। ऐसा तो होना नहीं चाहिए, ऐसा संकल्प उत्पन्न होता है तो इसको भी अंश मात्र की हलचल का रूप कहेंगे। अब तक यह क्यों-क्या प्रश्न का अर्थ है – हलचल। विघ्न आना आवश्यक है यह बुद्धि में रहेगा तो महारथी हर्षित रहेगा। नथिंग-न्यू, यह है फाइनल स्टेज। यदि कोई भी हलचल का कर्तव्य करते हो व पार्ट बजाते हो तो सागर समान ऊपर से हलचल भले ही दिखाई दे रही हो अर्थात् चाहे कर्मेन्द्रियों की हलचल में आ रहे हों लेकिन स्थिति नथिंग-न्यू की हो। एकाग्र, एकरस, एकमत अर्थात् एक रचयिता और रचना के अंत को जानने वाले। त्रिकालदर्शी की स्टेज पर क्या आराम से स्थित हैं या कर्मेन्द्रियों की हलचल आंतरिक स्टेज को भी हिलाती है? जब स्थूल सागर दोनों ही रूप दिखाता है तो क्या मास्टर ज्ञान सागर ऐसा रूप नहीं दिखा सकते? यह प्रकृति ने पुरुष से कॉपी की है, आप तो पुरुषोत्तम हो, जो प्रकृति अपनी क्वालिफिकेशन दिखा सकती है, तो क्या वह पुरुषोत्तम नहीं दिखा सकते?

क्यों का संकल्प चन्द्रवंशी की क्यू में लगा देगा

"क्यों" का संकल्प चंद्रवंशी की क्यू में लगा देगा। पहले तो सूर्यवंशी का राज्य होगा न? चंद्रवंशियों का नंबर पीछे होगा। तो उनका, राज्य के

तख्तनशीन बनने की क्यू में नंबर आयेगा। इसलिए एकरस स्थिति में स्थिति होने का अभ्यास निरंतर हो। समस्या की सीट को संभालने नहीं लग जाओ लेकिन सीट पर बैठ समस्या का समाधान करना है। अब तो समस्या सीट (स्वस्थिति) की याद दिलाती है।

पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना

कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें सिवाए कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर संकल्प, हर कार्य के प्रति और वर्तमान या भविष्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा। घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। इसका मतलब यह तो नहीं समझते हो कि होना नहीं है। ड्रामा में जो होता रहा है, समय-प्रति-समय, उसमें माखन से बाल ही निकलता है न? कोई मुश्किल हुआ है? बापदादा नयनों पर बिठाये, दिलतख्त पर बिठाये पार करते ले आ रहे हैं ना? क्या कोई अंत तक साथ निभाने का या किसी भी परिस्थिति से पार ले जाने का वायदा व कार्य निभायेंगे? नहीं। साथ ले ही जाना है न। सर्वशक्तिमान साथ होते हुए भी (व्यर्थ संकल्प) होना – उसको क्या कहेंगे? ऐसे व्यर्थ संकल्प समाप्त कर, जिस स्थापना के कार्य के निमित्त हो, बापदादा के मददगार हो, उस कार्य में मग्न रहो।

माया के अनेक प्रकार के चक्करों की निशानी क्या होगी? जैसे चक्रधारी आत्मा लाइट की ताजधारी होगी और बाप के वर्से के अधिकारी होगी वैसे माया के अनेक प्रकार के चक्कर में आने वाले की निशानी

क्या होगी? जैसे उनके सिर पर लाइट का ताज है, वैसे उनके सिर पर अनेक प्रकार के विघ्नों का बोझ होगा। ताज नहीं। सदैव किसी-न-किसी प्रकार का बोझ उनके सिर पर अर्थात् बुद्धि में महसूस होगा। ऐसी आत्मा सदैव कर्जदार और मर्जदार होगी। उनके मस्तक पर, मुख पर, सदैव क्वेश्चन मार्क होंगे। हर बात में क्यों, क्या, कैसे, यह क्वेश्चन मार्क होंगे। एक सेकण्ड भी बुद्धि एकाग्र अर्थात् फुलस्टॉप में नहीं होगी। फुलस्टॉप की निशानी बिन्दी (.) होती है अर्थात् मनसा में भी बिन्दु स्वरूप की स्थिति नहीं होगी। वाचा और कर्मणा में भी बीती सो बीती, नथिंग न्यू, जो होता है वह कल्याणकारी है, ऐसा फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी लगानी नहीं आएगी। क्वेश्चन मार्क की निशानी देखने में भी टेढ़ी आती है, फुलस्टॉप लिखना सहज है। फुलस्टॉप लिखने से क्वेश्चन मार्क लिखना जरा मुश्किल होता है। तो अनेक प्रकार के क्वेश्चन करना, चाहे स्वयं से अथवा दूसरों से या बाप से – यह निशानी है कि यह आत्मा स्वदर्शन चक्रधारी सो छत्रधारी नहीं।

क्वेश्चन स्वयं के प्रति भी और अन्य के प्रति भी

ऐसी आत्मा हर संकल्प में सदा स्वयं से भी क्वेश्चन करती रहेगी कि क्या मैं सफलतामूर्त बन सकती हूँ? मैं सर्व संपर्क में सफलता प्राप्त कर समीप आत्मा बनूँगी? मैं सर्व के स्वभाव, संस्कारों में चल सकूँगी? सर्व को संतुष्ट कर सकूँगी? ऐसे अनेक प्रकार के क्वेश्चन स्वयं के प्रति भी होंगे और अन्य के प्रति भी होंगे। यह मेरे से ऐसे क्यों चलते हैं, मुझे विशेष सहयोग क्यों नहीं मिलता – मेरा नाम, मेरा मान क्यों नहीं होता? इसी प्रकार के अन्य प्रति क्वेश्चन होंगे। ऐसे ही बाप के प्रति भी क्वेश्चन होंगे। जब बाप शक्तिवान हैं तो मेरी बुद्धि क्यों नहीं पलटाते? नज़र से निहाल

करने वाले मेरी तरफ नज़र क्यों नहीं रखते? जबकि बाप हैं तो जैसी भी हूँ, कैसी भी हूँ, उनकी ही हूँ, उनकी जिम्मेवारी है मुझे पार कराना – जब दाता हैं तो मैं चाहती हूँ वह क्यों नहीं देते? त्रिकालदर्शी हैं। मेरे तीनों कालों को जानते हैं तो मुझे स्वयं ही अपनी शक्ति से श्रेष्ठ पद क्यों नहीं दिलाते? ऐसी मीठी-मीठी शिकायतें बाप के आगे रखते हैं। एक तरफ जन्म-जन्म का बोझ, दूसरी तरफ बाप के बच्चे होने के नाते, बाप द्वारा प्राप्त हुये सर्व अधिकार का रिटर्न करने का फर्ज़ न पालन करने के कारण फर्ज के बजाय कर्ज बन जाता है। कर्ज का बोझ आत्मा की सर्व कमजोरियों के मर्ज का रूप ले लेता है। ऐसे डबल बोझ वाले, स्वदर्शन चक्रधारी कैसे बन सकेंगे?

महारथियों की निशानी

महारथियों के महान स्थिति की विशेष निशानी, जिससे स्पष्ट हो जाये कि यह महारथी-पन का पुरुषार्थ है, वह क्या होगी? एक तो महान पुरुषार्थी अर्थात् महारथी जो भी दृश्य देखेंगे व समझेंगे, ड्रामा प्लैन अनुसार अनेक बार का अब फिर से रिपीट हो रहा है, वह नथिंग न्यू लगेगा। कोई नई बात अनुभव नहीं होगी जिससे क्यों और क्या का क्वेश्चन उठे। और दूसरा ऐसे अनुभव होगा जैसे प्रैक्टिकल में, स्मृति स्वरूप में, अनेक बार देखी हुई सीन अब सिर्फ निमित्त मात्र रिपीट कर रहे हैं। कोई नई बात नहीं कर रहे हैं। स्मृति लानी नहीं पड़ेगी। कल्प पहले जो हुआ था वही अब हो रहा है। लेकिन जैसे एक सेकण्ड की बीती हुई बात बहुत स्पष्ट रूप से स्मृति में रहती है वैसे वह कल्प पहले की बीती हुई सीन ऐसे ही स्मृति में होगी जैसे की एक सेकण्ड पहले बीती हुई सीन स्मृति में रहती है। क्योंकि एक साक्षीपन, दूसरा त्रिकालदर्शी यह दोनों स्टेज महारथियों की होने के

कारण कल्प पहले की स्मृति बिल्कुल फ्रेश व ताजी रहेगी। इसलिये नथिंग न्यू और दूसरा क्या होगा? कोई भी कितनी भी विकराल रूप की परिस्थिति हो या बड़े रूप की समस्या हो लेकिन अपनी स्टेज ऊँची होने के कारण वह बिल्कुल छोटी लगेगी। बड़ी बात अनुभव नहीं होगी और न विकराल अनुभव होगी। जैसे ऊँची पहाड़ी पर खड़े होकर नीचे की कोई भी चीज़ को देखो तो बड़ी चीज भी छोटी नज़र आती है ना। बड़े से बड़ा कारखाना भी एक मॉडल रूप-सा दिखाई पड़ता है। इसी रीति महारथी के महान पुरुषार्थ के सामने उसे कोई भी बड़ी बात अनुभव नहीं होगी। तो महावीर अर्थात् महारथी के महान पुरुषार्थ की ये दो निशानियाँ हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाता है, सूली से कांटा अनुभव होंगी। ऐसे महावीर के मुख से जो होनी होगी सदैव वही बात निकलेगी। इसको ही सिद्धि स्वरूप कहा जाता है। जो बोल निकलेगा, जो कर्म होगा वह सिद्ध करने वाला होगा, व्यर्थ नहीं होगा। महारथी की निशानी है विकर्मों का खाता समाप्त तो होता ही है लेकिन व्यर्थ का खाता भी समाप्त होगा। यह है महारथियों के पुरुषार्थ की निशानी।

प्रश्न: सर्व प्वांइन्ट्स का सार एक शब्द में सुनाओ?

उत्तर: प्वांइन्ट्स का सार - प्वांइन्ट्स रूप अर्थात् बिन्दु रूप हो जाना।

प्रश्न: बिन्दु रूप स्थिति होने से कौन-सी डबल प्राप्ति होती है?

उत्तर: बिन्दु रूप अर्थात् पावरफुल स्टेज जिसमें व्यर्थ संकल्प नहीं चलते हैं और बिन्दु अर्थात् बीती सो बीती। इससे कर्म भी श्रेष्ठ होते हैं और व्यर्थ संकल्प न होने के कारण पुरुषार्थ की गति भी तीव्र होगी। इसलिए बीती से बीती को सोच-समझ कर करना है। व्यर्थ देखना, सुनना व बोलना बंद। समर्थ आँखें खुली हों अर्थात् साक्षीपन की स्टेज पर रहो।

यह हर जन्म के संस्कारों का रिकार्ड भरने का समय है

मुख्य संस्कार भरने का समय अभी है। आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकार्ड इस समय भर रहे हो। तो रिकार्ड भरने के समय सेकण्ड-सेकण्ड का अटेन्शन रखा जाता है। किसी भी प्रकार के टेन्शन का अटेन्शन, टेन्शन में भी अटेन्शन रहे। अगर किसी भी प्रकार का टेन्शन होता है, तो रिकार्ड ठीक नहीं भर सकेगा। सदाकाल के लिये श्रेष्ठ नाम के बजाय, यही गायन होता रहेगा कि जितना अच्छा भरना चाहिए, उतना नहीं भरा है। इसलिए हर प्रकार के टेन्शन से परे, स्वयं और समय का, बाप के साथ का अटेन्शन रखते हुए, सेकण्ड-सेकण्ड का पार्ट बजाओ। मास्टर सर्वशक्तिमान, आलमाइटी अथॉरिटी की संतान, ऐसी नॉलेजफुल आत्माओं में टेन्शन का आधार दो शब्द हैं। कौन से दो शब्द? क्यों और क्या। किसी भी बात में, यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ, जब ये दो शब्द बुद्धि में आ जाते हैं, तब किसी भी प्रकार का टेन्शन पैदा होता है। लेकिन संगमयुगी श्रेष्ठ पार्टधारी आत्माएँ क्यों, क्या का टेन्शन नहीं रख सकती हैं, क्योंकि सब जानते हैं। साक्षी और साथीपन की विशेषता से, ड्रामा के हर पार्ट को बजाते हुए हर सेकण्ड के संस्कारों का रिकार्ड नंबरवन स्टेज में भरते जाओ। प्रकृति के अधीन तो नहीं हो ना? प्रकृति का कोई भी तत्व हलचल में नहीं लावे। आगे चलकर तो बहुत पेपर आने हैं। किसी भी साधनों के आधार पर, स्थिति का आधार न हो। मायाजीत के साथ-साथ प्रकृतिजीत भी बनना है। प्रकृति की हलचल के बीच – यह क्या? यह क्यों हुआ? यह कैसे होगा? आदि जरा भी संकल्प में टेन्शन हुआ अर्थात् अटेन्शन कम हुआ, तो फुल पास नहीं होंगे। इसलिए अचल होना है

ड्रामा कभी-कभी याद रहता है तो राज्य भी कभी-कभी करेंगे

सदैव साक्षीपन की सीट पर स्थित रहते हुए भी हर एक्ट अपनी और दूसरों की देखते हो। कोई ड्रामा की सीन देखनी हो तो सीट पर स्थित हो देखने में मज़ा आता है। कोई भी सीन, सीट के बिना नहीं देखा जाता। तो साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहते हो? यह बेहद का ड्रामा सदा चलता रहता है। यह दो-तीन घन्टे का नहीं, अविनाशी है तो सदा देखने के लिए सीट भी सदा चाहिए। ऐसे नहीं कि दो घंटे सीट पर बैठो फिर उतर जाओ। सदा साक्षी हो देखेंगे तो कभी भी हार और जीत के दृश्य देखकर डगमग नहीं होंगे। सदा एकरस रहेंगे। ड्रामा याद रहे तो सदा एकरस रहेंगे। ड्रामा को भूले तो डगमग रहेंगे। अगर ड्रामा कभी-कभी याद रहता है तो राज्य भी कभी-कभी करेंगे। अगर साक्षी कभी-कभी रहते तो स्वर्ग में साथी भी कभी-कभी होंगे। नॉलेजफुल तो हो ना? सब जानते हो लेकिन जानते हुए भी साक्षीपन की स्टेज पर न रहने का कारण है अटेन्शन में अलबेलापन। अपना समय स्वचिंतन के बजाय व्यर्थ बातों में गँवा देते हैं। स्वचिंतन में न रहने वाला साक्षी नहीं रह सकता। परचिंतन को समाप्त करने का आधार क्या है? अगर हर आत्मा के प्रति शुभचिंतक होंगे तो परचिंतन कभी नहीं करेंगे। सदा शुभचिंतन और शुभचिंतक रहने से सदा साक्षी रहेंगे। साक्षी अर्थात् अभी भी साथी और भविष्य में भी साथी।

ब्राह्मणों का कभी अकल्याण नहीं हो सकता

निश्चयबुद्धि की निशानी है सदा निश्चिंत। जो निश्चिंत होंगे वही एकरस रहेंगे। कुछ भी हुआ, सोचो नहीं। क्यों-क्या में कभी नहीं जाओ। त्रिकालदर्शी बन निश्चिंत रहो। हर कदम में कल्याण है, जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता है उसमें भी कल्याण समाया हुआ है। सिर्फ

अन्तर्मुख होकर देखो। ब्राह्मणों का कभी अकल्याण नहीं हो सकता क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ पकड़ा है ना! वह अकल्याण को भी कल्याण में चेन्ज कर देगा इसलिए सदा निश्चिंत रहो।

क्या हुआ, क्यों हुआ, ऐसे नहीं होता – यह है व्यर्थ चिन्तन

सदा अपने को निश्चयबुद्धि निश्चिंत आत्मा अनुभव करते हो? जो निश्चयबुद्धि होगा वह निश्चिंत होगा। किसी भी प्रकार का चिंतन वा चिंता नहीं होगी। क्या हुआ, क्यों हुआ, ऐसे नहीं होता – यह व्यर्थ चिंतन है। निश्चयबुद्धि निश्चिंत रहेगा और व्यर्थ चिंतन नहीं करेगा। सदा स्वचिंतन में रहने वाले, स्वस्थिति में रहने से परिस्थिति पर विजय प्राप्त करते हैं। दूसरे तरफ से आई हुई स्थिति को स्वीकार क्यों करते हो? परिस्थिति को किनारे करो तो स्वचिंतन में रहेंगे और जो स्वस्थिति में रहता है वह सदा सुख के सागर में समाया हुआ रहता है।

जब किसी भी प्रकार का पेपर आता है तो घबराओ नहीं। क्वेश्चन मार्क में नहीं आओ कि यह क्यों आया? इस सोचने में समय खराब मत करो। क्वेशन मार्क समाप्त और फुलस्टॉप लगे तब क्लास चेन्ज होगा अर्थात् पेपर में पास हो जायेंगे। फुलस्टॉप देने वाला फुल पास होगा क्योंकि फुलस्टॉप है बिंदी की स्टेज। इसलिए देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो, बाप ने जो दिया वह देखो। इस प्रैक्टिस से फुल पास होंगे।

वाह बाप, वाह ड्रामा, वाह मेरा पार्ट – यह स्मृति बनाती है जीवनमुक्त

सदा अपने भाग्य का सुमिरण करते खुशी में रहते हो? वाह मेरा भाग्य, यह गीत सदा बजता रहता है? वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट – सदा इसी स्मृति में हर कार्य करते ऐसे अनुभव होता है

जैसे कर्म करते हुए भी कर्म के बंधन से मुक्त, सदा जीवनमुक्त हैं। सतयुग की जीवनमुक्ति का वर्सा तो प्राप्त होगा ही लेकिन अभी के जीवनबंध से, जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव सतयुग से भी ज्यादा है। तो अभी भी अपने ज्ञान और योग की शक्ति से जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करते हैं कि अभी भी बंधन है? बंधन सब समाप्त हो गये और जीवनमुक्त हो गए। कुछ भी हो जाये लेकिन जीवनमुक्त होने के कारण ऐसे अनुभव होता है जैसे कि एक खेल कर रहे हैं, परीक्षा नहीं लेकिन खेल है। तन का रोग हो जाए – माया के अनेक प्रकार के वार भी हों लेकिन खेल अनुभव हों। खेल में दुख नहीं होता, खेल किया जाता है मनोरंजन के लिए, दुख के लिए नहीं। तो खेल समझने से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे।

ड्रामा के हर सीन को देखते हुए वाह ड्रामा वाह की स्मृति से चलते हो वा घबराते हो? जब ड्रामा का ज्ञान मिल गया तो वर्तमान समय भी कल्याणकारी युग है। जो भी दृश्य सामने आता है उसमें कल्याण भरा हुआ है। वर्तमान न भी जान सको लेकिन भविष्य में समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जायेगा। "वाह ड्रामा वाह" याद रहे तो सदा खुश रहेंगे। पुरुषार्थ में कभी उदासी नहीं आयेगी। स्वत: ही आप द्वारा अनेकों की सेवा हो जायेगी।

16000 का लक्ष्य नहीं, नंबरवन आने के पुरुषार्थ का लक्ष्य रखो

सभी प्रकृतिजीत या मायाजीत बने हो? ये पांच तत्व भी अपनी तरफ आकर्षित न करें और पांच विकार भी वार न करें। ऐसे दोनों ही पेपर में पास हो? प्रकृति के पेपर में जरा भी हलचल में आना अर्थात् फेल। ये क्या? ये क्यों? ये क्वेश्चन भी होगा तो रिजल्ट क्या होगी? अगर जरा भी प्रकृति की समस्या वार करने वाली बन गई तो फेल हो जायेंगे। कुछ

भी हो लेकिन अंदर से सदा ये आवाज निकले, "वाह मीठा ड्रामा वाह!" इतना ड्रामा का ज्ञान पक्का किया है? या जब अच्छी बात है तो ड्रामा और हलचल की बात है तो हाय, हाय। "हाय क्या हुआ?" ये संकल्प भी न आये, ऐसे मजबूत हो? क्योंकि आगे चलकर प्रकृति द्वारा भी ऐसी समस्याएं आने वाली हैं। प्राकृतिक आपदायें तो दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली हैं न? तो संकल्प में भी हलचल न हो, ऐसी अचल-अडोल स्थिति हो। अगर बहुत समय का मायाजीत और प्रकृतिजीत का अभ्यास नहीं होगा तो क्या रिजल्ट होगी? एक सेकण्ड का पेपर आना है। उस समय अगर तैयारी में लग गए तो रिजल्ट निकल जायेगी। एक सेकण्ड में पास हो जायें, इसका अभ्यास चाहिए। अगर ये भी सोचा कि योग लगायें, याद में बैठें तो सेकण्ड तो बीत गया और युद्ध में ही शरीर छोड़ देंगे। पुरुषार्थी जीवन में युद्ध करते-करते ही शरीर छूटा तो रिजल्ट क्या होगी? चंद्रवंशी बन जायेंगे। इसलिए हर एक सदैव 108 की माला में आने का लक्ष्य रखो। लक्ष्य श्रेष्ठ होगा तो लक्षण ऑटोमेटिकली आ जायेंगे। 16,000 का लक्ष्य कभी नहीं रखना। नंबरवन आने के पुरुषार्थ का लक्ष्य रखो।

कुछ भी हो, अपनी चढ़ती कला है

ड्रामा अनुसार कलियुगी दुनिया का दुख और अशांति का नज़ारा देख बेहद के वैरागी बनते जायेंगे। कुछ भी होता है, अपनी चढ़ती कला है, क्योंकि दुनिया के लिये हाहाकार है और आपके लिए जयजयकार है। आप तो जानते हो कि यह दुनिया हाहाकार होने वाली है अर्थात् जाने वाली है। इसलिये किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं। हमारे लिये तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार के खेल देखो, कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने में मज़ा आता है। "क्या होगा?" ये क्वेश्चन भी नहीं उठता। "ये होना ही है" ऐसे अटल हो न। अनेक बार ये सब हलचल देखी

है और अब भी देख रहे हो। दुनिया में क्या भी हो लेकिन याद की भट्ठी में रहने वाले सदा सेफ और डबल लाइट रहते हैं।

शान से परे होते हो तो परेशान होते हो

बात बदल जाए लेकिन आप न बदलो – यह है निश्चय। कभी माया से परे-शान तो नहीं होते हो? कभी वातावरण से, कभी ब्राह्मणों से परेशान होते हो? अगर अपने शान से परे होते हो तो परेशान होते हो, तो शान की सीट पर रहो। साक्षीपन की सीट शान की सीट है, इससे परे न हो तो परेशानी खत्म हो जायेगी। प्रतिज्ञा करो कि कभी भी कोई बात में न परेशान होंगे, न करेंगे। जब नॉलेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये तो परेशान कैसे हो सकते। संकल्प में भी परेशानी न हो। क्यों शब्द को समाप्त करो। क्यों शब्द के पीछे बड़ी क्यू है।

मेला देखकर खुशी हो रही है ना? यह भी ड्रामा में जो कुछ होता है वह अच्छे ते अच्छा होता है। अभी तो बहुत आयेंगे, यह तो कुछ भी नहीं है। प्रबंध बढ़ाते जायेंगे, बढ़ने वाले बढ़ते जायेंगे। जब मधुबन में भीड़ लगे तब भक्ति में यादगार बने। जितना बनाते जायेंगे उतना बढ़ते ही जायेंगे, यह भी वरदान मिला हुआ है। यही यादगार में कहानियाँ बनाकर दिखाते हैं कि सागर तक भी पहुँच गये, फिर भी छोटा हो गया। अभी आबू रोड तक तो पहुँचो, तब गायन हो। आबूरोड से माउन्ट तक बैठें तब प्रत्यक्षता होगी। सोचेंगे, यह क्या हो रहा है। अटेन्शन तो होता है ना। ब्रह्माकुमारियाँ कहाँ तक पहुँच गई हैं। अभी यह तो बच्चों का मेला है लेकिन बच्चे और भक्त मिक्स हो जायेंगे तब क्या हो जायेगा। अभी तो बहुत तैयारी करनी है। जब बाप का आना है तो बच्चों का भी बढ़ना है। वृद्धि न हो तो सेवा काहे की। सेवा का अर्थ ही है वृद्धि।

अनुभवी आत्मा बुरे में बुराई को न देख अच्छाई ही देखेगी

जैसे ड्रामा की प्वाइंट देते हैं, तो एक होता है नॉलेज के आधार पर प्वाइंट देना, दूसरा होता है अनुभवीमूर्त होकर प्वाइंट देना। ड्रामा की प्वाइंट के जो अनुभवी होंगे वह सदा साक्षीपन की स्टेज पर स्थित होंगे। एकरस, अचल और अडोल होंगे। ऐसी स्थिति में स्थित रहने वाले को अनुभवीमूर्त कहा जाता है। रिजल्ट में, बाहर के रूप से भले अच्छा हो वा बुरा हो लेकिन ड्रामा के प्वाइंट की अनुभवी आत्मा कभी भी बुरे में बुराई को न देख अच्छाई ही देखेगी अर्थात् स्व के कल्याण का रास्ता दिखाई देगा। अकल्याण का खाता समाप्त हुआ। कल्याणकारी बाप के बच्चे होने कारण, कल्याणकारी युग होने कारण अब कल्याण का खाता आरंभ हो चुका है।

मुश्किल लगने का कारण अपनी कमजोरी है

"आप और बाप" इन दो शब्दों में ज्ञान और योग आ जाता है। इसलिये टाइटल ही है सहज राजयोगी। सहज होते भी मुश्किल लगने का कारण अपनी ही कमजोरी है। कोई न कोई पुराना संस्कार सहज रास्ते के बीच में बंधन बन रुकावट डालता है और शक्ति न होने के कारण पत्थर को तोड़ने लग जाते हैं और तोड़ते-तोड़ते दिलशिकस्त हो जाते हैं। लेकिन सहज तरीका क्या है, पत्थर तोड़ना नहीं लेकिन पत्थर को जंप लगा के उड़ना। ये क्यों हुआ? ये होना नहीं चाहिए, आखिर ये कहाँ तक होगा? ये तो बड़ा मुश्किल है, ऐसा क्यों? ऐसे व्यर्थ संकल्प करना ही पत्थर तोड़ना है लेकिन एक शब्द "ड्रामा" याद आ जाता तो इस शब्द के आधार से हाई जम्प दे देते हैं। उसमें कुछ दिन या मास लग जाते हैं और इसमें एक सेकण्ड लगता है। तो यह अपनी नालेज की कमजोरी हुई न?

बातों से किनारा हो जाए तो सदा सहजयोगी हो जाएँ

कोई भी मुश्किल कार्य आत्माओं के ऊपर आता है तो किसके पास जाते हैं? या बाप के पास या देव आत्माओं के पास। जो औरों की भी मुश्किल को सहज करने वाले हैं वह स्वयं मुश्किल अनुभव कैसे करेंगे। मुश्किल अनुभव करने के समय विशेष कौन-सी बात बुद्धि में आती है जो मुश्किल बना देती है? बहुत अनुभवी हो ना। बाप को देखने के बजाए बातों को देखने लग जाते हो। बातों में जाने से फिर कई क्वेश्चन उत्पन्न हो जाते हैं। अगर बाप को देखो तो, जैसे बाप बिन्दु है, वैसे ही हर बात को बिन्दु लगा दो। बातें हैं वृक्ष और बाप है बीज। आप विस्तार वाले वृक्ष को हाथ में उठाना चाहते हो इसलिए न बाप हाथ में आता है, न वृक्ष। बाप को भी किनारे कर देते हो और वृक्ष के विस्तार को भी अपनी बुद्धि में समा नहीं सकते हो। तो जो चाहना रखते हो वह न पूरी होने के कारण दिलशिकस्त हो जाते हो। दिलशिकस्त को कोई छोटा कार्य भी मुश्किल लगता है। दिलशिकस्त की मुख्य निशानी होगी बार-बार किसी न किसी की चाहे परिस्थिति की, चाहे व्यक्ति की शिकायतें ही करते रहेंगे। और जितनी शिकायतें करते उतना ही खुद आपे ही फंसते जाते। क्योंकि यह विस्तार एक जाल बन गया है। जितना ही फिर उससे निकलने की कोशिश करते हैं उतना फंसते जाते हैं। या होंगी बातें या होगा बाप। बातें सुनना और बातें सुनाना, यह तो आधा कल्प किया। भक्तिमार्ग का भागवत या रामायण क्या है? कितनी लंबी बातें हैं। जब बातें थी तो बाप नहीं था। अब भी जब बातों में जाते हो तो बाप को खो लेते हो। फिर कौन-सा खेल करते हो? (आँख मिचौनी का) तीसरे नेत्र को पट्टी बांधकर ढूंढ़ते हो। बाप बुलाता रहता और आप ढूंढ़ते रहते। आखिर क्या होता? बाप स्वयं ही आकर स्वयं का साथ दिलाते। ऐसा खेल क्यों करते हो? क्योंकि बातों के

विस्तार में रंग-बिरंगी बातें होती हैं, वे अपनी तरफ आकर्षित कर लेती हैं। उनसे किनारा हो जाए तो सदा सहजयोगी हो जाएं।

शरीर ठीक नहीं, बुद्धि तो ठीक है न

सदा साक्षी स्थिति में स्थित होकर हर पार्ट बजाओ तो कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होंगे लेकिन न्यारे और प्यारे रहेंगे। अच्छे में अच्छा, बुरे में बुरा ऐसा नहीं होगा। साक्षी अर्थात् सदा हर कार्य करते हुए कल्याणकारी वृत्ति में रहने वाले। जो कुछ हो रहा है उसमें कल्याण भरा हुआ है। अगर माया का विघ्न भी आता तो उसमें भी लाभ उठाकर, शिक्षा लेकर आगे बढ़ेंगे, रुकेंगे नहीं। ऐसी साक्षीपन की सीट है जिस पर बैठकर ड्रामा को देखो तो बहुत मज़ा आयेगा। वाह ड्रामा वाह! का गीत गाते रहेंगे। अगर कोई बीमार भी है, बिस्तर पर भी है तो भी सेवा कर सकते हैं। भले शरीर ठीक नहीं भी है लेकिन बुद्धि तो ठीक है न? मनसा सेवा बुद्धि द्वारा ही ठीक होती है। ऐसी लगन वा उमंग-उत्साह रख सेवा करेंगे तो ये प्रकृति भी आपकी जन्म-जन्म सेवा करती रहेगी। प्रकृति भी दासी बन जायेगी।

बड़ी बात को छोटा बनाओ

सिर्फ एक बात है, छोटी बात को बड़ा नहीं बनाओ। बड़े को छोटा बनाओ। यह भी होता है क्या? यह क्वेश्चन नहीं। यह क्या हुआ? ऐसे भी होता है क्या? इसके बजाए जो होता है कल्याणकारी है। क्वेश्चन खत्म होने चाहिएँ। फुलस्टॉप। बुद्धि को ज्यादा इसमें नहीं चलाओ, नहीं तो एनर्जी वेस्ट चली जाती है और अपने को शक्तिशाली अनुभव नहीं करते। अब मधुबन की वरदान भूमि में क्वेश्चन मार्क खत्म करके, फुलस्टॉप लगाके जाओ। क्वेश्चन मार्क मुश्किल है, फुलस्टॉप सहज है।

तो सहज छोड़कर मुश्किल को क्यों अपनाते हो? तो क्या करना चाहिए? अभी वेस्ट नहीं करना। हर संकल्प बेस्ट, हर सेकण्ड बेस्ट।

जितना अनुभवीमूर्त होंगे उतना फाउन्डेशन पक्का होगा। माया हिला नहीं सकेगी। किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या अभी खेल के समान अनुभव होनी चाहिए। वार नहीं है, खेल है! तो खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे और वार समझने से घबरायेंगे भी और हलचल में भी आ जायेंगे। ड्रामा में पार्टधारी होने के कारण कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो एकरस रहेंगे, हलचल नहीं होगी।

संकल्प की तीली लगाने से बिन्दी से साँप हो जाता है

बिन्दी लगाना आता है वा बिन्दी पर क्वेश्चन आ जाता है? आजकल की दुनिया में बारूद (एक पटाखा) चलाते हैं जो इतनी छोटी बिन्दी से इतना बड़ा साँप बन जाता है। यहाँ भी लगानी चाहिए बिन्दी। बिन्दी में सब समा जाता है। अगर संकल्प की तीली लगा देते तो फिर वह साँप हो जाता। न तीली लगाओ न साँप बनो। बापदादा यह बच्चों का खेल देखता रहता है। जो होता है, सब में कल्याण भरा हुआ है। ऐसा क्यों वा क्या? नहीं। जो कुछ अनुभव करना था वह किया। परिवर्तन किया और आगे बढ़ो। यह है बिन्दी लगाना। सभी विदेशियों को भी यह खेल बताना। उन्हों को ऐसी बातें अच्छी लगती हैं।

न स्वयं कमजोर बनो, न दूसरों की कमजोरियों को देखो

परतंत्रता के बंधन अपने ही मन के व्यर्थ संकल्पों की जाल है। क्या होगा, कैसे होगा, ऐसे तो नहीं होगा, ये है जाल। पहले भी सुनाया था – संगमयुगी ब्राह्मणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि "जो होगा वह

कल्याणकारी होगा, जो होगा वह श्रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छे होगा।" ये संकल्प है जाल को समाप्त करना। जबकि बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये, संगमयुग का हर दिन, बड़ा दिन है तो फिर व्यर्थ संकल्पों की जाल में कहाँ तक फँसे रहेंगे? इसलिये जो समर्पण नहीं होंगे वह समान कैसे बनेंगे? ब्रह्मा बाप ने क्या किया? सब कुछ समर्पित किया ना! डर सिर्फ अपनी कमजोरी से होता है इसलिये कमजोरियों को देखो नहीं। न स्वयं कमजोर बनो, न दूसरों की कमजोरियों को देखो, सब बाप के हवाले कर दो।

साक्षीपन की स्टेज डबल हीरो बनाती है

सदा साक्षीपन की स्थिति में स्थित रहते हुए ड्रामा के हर दृश्य को देखते हो? साक्षीपन की स्थिति सदा ड्रामा के अंदर हीरो पार्ट बजाने में सहयोगी होती है। अगर साक्षीपन नहीं तो हीरो पार्ट बजा नहीं सकते। हीरो पार्टधारी से साधारण पार्टधारी बन जाते हैं। साक्षीपन की स्टेज सदा ही डबल हीरो बनाती है। एक, हीरे जैसे बनाती है और दूसरा, हीरो पार्टधारी बनाती है। साक्षीपन अर्थात् देह से न्यारे, आत्मा मालिकपन की स्टेज पर स्थित रहे। देह से भी साक्षी, मालिक। इस देह से कर्म कराने वाली, करने वाली नहीं। ऐसी साक्षी स्थिति सदा रहती हैं? साक्षी स्थिति सहज पुरुषार्थ का अनुभव कराती है क्योंकि साक्षी स्थिति में किसी भी प्रकार का विघ्न या मुश्किलात आ नहीं सकती। यह है मूल अभ्यास। साक्षी स्थिति का यही पहला और लास्ट पाठ है क्योंकि लास्ट में जब चारों ओर की हलचल रहेगी, तो उस समय साक्षी स्थिति से ही विजयी बनेंगे। तो यही पाठ पक्का करो।

वाह रे मैं पुण्य आत्मा, वाह रे मैं शिवशक्ति – इस स्मृति में सदा रहो

आपके जड़ चित्रों के लिए भक्त जागरण करते हैं, कभी तो आप लोगों ने भी किया है तभी तो भक्त कापी करते हैं। यह जागरण डबल कमाई वाला जागरण है। वर्तमान की कमाई हुई और वर्तमान के आधार पर भविष्य भी श्रेष्ठ हुआ। बाप ने अपने समान बना दिया। बाप कल्याणकारी तो बच्चे भी कल्याणकारी। बच्चों को अपने से भी आगे रखते हैं। डबल पूजा आपकी है, डबल राज्य आप करते हो। इतना नशा और इतनी खुशी सदा रहे – वाह रे मैं श्रेष्ठ आत्मा, वाह रे मैं पुण्य आत्मा, वाह रे मैं शिवशक्ति – इसी स्मृति में सदा रहो।

ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता

जब चाहो, जिसको चाहो सभी सेवा के लिए हाजिर हैं। इन दादियों की आपस में बहुत अंदरुनी प्रीति है, आप लोगों को पता नहीं है इसलिए समझते हो अभी क्या होगा। एक दीदी ने यह साबित किया कि हम सभी आदि रत्न एक हैं। दिखाया ना? ब्रह्मा बाप के बाद साकार रूप में ९ रत्नों की पूज्य आत्मायें सेवा की स्टेज पर प्रत्यक्ष हुई तो ९ रत्न वा आठ रत्नों की माला सदा एक-दो के सहयोगी हैं। कौन हैं आठ की माला? जो ओटे सेवा में वह अर्जुन अर्थात् अष्ट माला है। तो सेवा की स्टेज पर अष्ट रत्न अपना पार्ट बजा रहे हैं। और पार्ट बजाना ही अपना पार्ट वा अपना नंबर प्रत्यक्ष करना है। बापदादा ऐसे नंबर नहीं देंगे लेकिन पार्ट ही प्रत्यक्ष कर रहा है। तो अष्ट रत्न हैं आपस में सदा एक के स्नेही और सदा के सहयोगी इसलिए सदा आदि सेवा के सहयोगी आत्मायें सदा ही सहयोग का पार्ट

बजाती रहेंगी। समझा। और क्या क्वेश्चन है? बताया क्यों नहीं, यह क्वेश्चन है? बतलाते तो दीदी के योगी बन जाते। ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता है। हलचल का पेपर अचानक होता है। और अभी भी इस विशेष आत्मा का पार्ट, अभी तक जो आत्मायें गई हैं, उन्हों से न्यारा और प्यारा है। हर सेवा के क्षेत्र में, इस श्रेष्ठ आत्मा के साथ, सहयोग की अनुभूति करते रहेंगे। ब्रह्मा बाप का अपना पार्ट है, उन जैसा पार्ट नहीं हो सकता लेकिन इस आत्मा की विशेषता, सेवा का उमंग-उत्साह दिलाने में योगी, सहयोगी और प्रयोगी बनाने में सदा रही है। इसलिए इस आत्मा का यह विशेष संस्कार समय प्रति समय आप सबको भी सहयोगी बनने का अनुभव कराता रहेगा। यह भी हर आत्मा का अपना-अपना विचित्र पार्ट है।

जो हुआ, बहुत ही राज़ों से भरा ड्रामा हुआ। आप सबको दीदी प्रिय है और दीदी को सेवा प्रिय है। इसलिए सेवा ने अपनी तरफ खींच लिया। जो हुआ, बहुत ही परिवर्तन के पर्दे को खोलने के लिए अच्छे ते अच्छा हुआ। न भगवती (डा.) का दोष है, न भगवान का दोष है। यह तो ड्रामा का राज़ है। इसमें न भगवती कुछ कर सकता, न भगवान। कभी भी उसके प्रति नहीं सोचना कि इसने ऐसा आपरेशन कर लिया, नहीं। उसका स्नेह लास्ट तक भी माँ का रहा। इसलिए उसने अपनी तरफ से कोई कमी नहीं की। यह तो ड्रामा का खेल है, समझा, इसलिए कोई संकल्प नहीं करना।

कानपुर का मकान (सेन्टर) जला – गंगे दादी से मुलाकात
जलना भी खेल, बचना भी खेल

बापदादा बच्चों को सदा सेफ रखते हैं। सेफ्टी का साधन सदा बाप द्वारा मिला हुआ है इसलिए सदा ही बाप के स्नेह का हाथ और साथ है।

नथिंग न्यू के अभ्यासी हो गये हो इसलिए जो बीता नथिंग न्यू और जो हो रहा है नथिंग न्यू। यह रिहर्सल हो रही है। फाइनल में हाहाकार के बीच जयजयकार होनी है। अति के बाद अंत और नये युग का आरंभ हो जायेगा। ऐसे समय पर न चाहते हुए भी सबके मन से प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेंगे। तो रिहर्सल से पार हो गये, बेफिकर बादशाह बन पार्ट बजाया, बहुत अच्छा किया। सोच से तो असोच हैं ही, जो हुआ, वाह! वाह! इसमें भी कइयों का कुछ कल्याण ही होगा। इसलिए जलने में भी कल्याण, बचने में भी कल्याण। हाय जल गया! ऐसा नहीं कहेंगे। बचने के समय जैसे – वाह! वाह! कहते हैं, ऐसे जलने के समय भी वाह-वाह। इसी को ही एकरस स्थिति कहा जाता है। बचाना अपना फर्ज है लेकिन जलने वाली चीज़ जलनी ही है। इसमें भी कई हिसाब-किताब होंगे। आप तो हैं ही बेफिकर बादशाह। "एक गया लाख पाया" – ये है ब्राह्मणों का स्लोगन। गया नहीं लेकिन पाया इसलिए बेफिकर। कोई अच्छा मिलना होता है इसलिए जलना भी खेल, बचना भी खेल। यही तो देखेंगे कि जल रहा है लेकिन ये कितने बेफिकर बादशाह हैं। क्योंकि छत्रछाया के अंदर हैं। वे फिकर में पड़ जाते हैं कि क्या होगा, कैसे होगा, कहाँ से खायेंगे, कहाँ से चलेंगे और बच्चों को यह फिकर है ही नहीं।

इस दृश्य की भेंट में अंतिम दृश्य बहुत वन्डरफुल है। वह सीन देखना तो बहुत आवश्यक है। जिसने अंत किया उसने सबकुछ किया। तो क्यों नहीं बाप के साथ-साथ ये वण्डरफुल सीन देखते हुए साथ-साथ चलो। यह भी कोई-कोई का पार्ट है। तो जाने का संकल्प नहीं करो।

अनेक बार विजयी बने हैं और बनने वाले भी हैं

बाप से होली मनाना अर्थात् अविनाशी रूहानी रंग में बाप समान बनना। वह लोग तो उदास रहते हैं इसलिए खुशी मनाने के लिए यह दिन

रखे हैं। और आप लोग सदा ही खुशी में नाचते-गाते हो, मौज़ मनाते रहते हो। जो ज्यादा मूंझते हैं -- क्या हुआ, क्यों हुआ, कैसे हुआ वे मौज़ में नहीं रह सकते। आप त्रिकालदर्शी बन गये तो फिर "क्या, क्यों, कैसे" यह संकल्प उठ नहीं सकते। क्योंकि तीनों कालों को जानते हो। क्यों हुआ? जानते हैं। पेपर है आगे बढ़ने के लिए। क्यों हुआ, नथिंग न्यू, तो क्या हुआ का क्वेश्चन नहीं। कैसे हुआ? माया और मजबूत बनाने के लिए आई और चली गई। तो त्रिकालदर्शी स्थिति वाले इसमें मूंझते नहीं। क्वेश्चन के साथ-साथ रेसपाण्ड पहले आता। क्योंकि त्रिकालदर्शी हो। नाम त्रिकालदर्शी और वर्तमान को भी जान न सके। क्यों हुआ, कैसे हुआ तो उसको त्रिकालदर्शी थोड़े ही कहेंगे? अनेक बार विजयी बने हैं और बनने वाले भी हैं। पास्ट और फ्यूचर को भी जानते हैं कि हम ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता बनने वाले हैं। आज और कल की बात है। क्वेश्चन समाप्त हो फुलस्टॉप आ जाता है। होली का अर्थ ही है हो ली। पास्ट इज पास्ट। ऐसे बिन्दी लगाने आती है न? यह भी होली का अर्थ है।

बिन्दु और सिन्धु – ये दो बातें स्मृति में रख श्रेष्ठ सर्टिफिकेट लेना है

फाइनल पेपर के पहले टाइम देते हैं। छुट्टी देते हैं ना। तो बापदादा अनेक राज़ों से यह विशेष समय दे रहे हैं। कुछ राज़ गुप्त हैं, कुछ राज़ प्रत्यक्ष हैं। लेकिन हर एक इतना अटेन्शन रखना कि सदा बिन्दु लगाना है अर्थात् बीती को बीती करने का बिन्दु लगाना है। और बिन्दु स्थिति में स्थित हो राज्य अधिकारी बन कार्य करने हैं। सर्व प्रति विधाता बन, सिन्धु बन सभी को भरपूर बनाना है तो बिन्दु और सिन्धु, यह दो बातें विशेष स्मृति में रख श्रेष्ठ सर्टिफिकेट लेना है। सदा ही श्रेष्ठ संकल्प की सफलता

से आगे बढ़ते रहना। तो बिन्दु बनना, सिन्धु बनना यही सर्व बच्चों प्रति वरदाता का वरदान है।

कल हाय-हाय के गीत गाते थे, आज वाह-वाह के गीत गाते हो

सदा "वाह-वाह" के गीत गाने वाले हो ना? "हाय-हाय" के गीत समाप्त हो गये और "वाह-वाह" के गीत सदा मन में गाते रहते हो। जो भी श्रेष्ठ कर्म करते हो, मन से क्या निकलता? वाह मेरा श्रेष्ठ कर्म! या वाह, श्रेष्ठ कर्म सिखलाने वाले! या वाह, श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ कर्म कराने वाले! तो सदा "वाह-वाह" के गीत गाने वाली आत्मायें हो न? कभी गलती से भी "हाय" तो नहीं निकलता? हाय, यह क्या हो गया? नहीं, कोई दुख का नज़ारा देख करके भी "हाय" शब्द नहीं निकलना चाहिए। कल हाय-हाय के गीत गाते थे और आज वाह-वाह के गीत गाते हो। इतना अंतर हो गया! यह किसकी शक्ति है? बाप की या ड्रामा की? (बाप की) बाप भी तो ड्रामा के कारण आया ना। तो ड्रामा शक्तिशाली हुआ अगर ड्रामा में पार्ट नहीं होता तो बाप भी क्या करता? बाप भी शक्तिशाली है और ड्रामा भी शक्तिशाली है। तो दोनों के गीत गाते रहो – वाह ड्रामा वाह! वाह बाबा वाह! जो स्वप्न में भी न था, वह साकार हो गया। घर बैठे सब मिल गया। घर बैठे इतना भाग्य मिल जाए – इसको कहते हैं डायमण्ड लाटरी।

बाहर का रूप देख घबराने से अच्छी सोच बदल जाती, कर्मबन्धन में फंस जाते

छोटी बात को बड़ी बनाना अर्थात् परेशान होना, वा अधिकारीपन की शान में रहना, वह अपनी स्थिति ऊपर आधार रखता है। क्या हो गया या जो हुआ वो अच्छा हुआ..... ये अपने ऊपर है। ये निश्चय, बुरे को भी अच्छे में बदल सकता है। क्योंकि हिसाब-किताब चुक्तू होने के कारण वा

ड्रामानुसार समय प्रति समय प्रैक्टिकल पेपर होने के कारण कोई बातें अच्छे रूप में सामने आयेंगी और कई बातों का बाहर का रूप नुकसान का भी होगा लेकिन नुकसान के परदे के अंदर जो फायदा छुपा हुआ होता है, अगर थोड़ा-सा धैर्यवत् अवस्था व सहनशील स्थिति से अंतर्मुखी हो देखो, तो बाहर के परदे के अंदर जो फायदा छिपा हुआ है वही आपको दिखाई देगा। इसलिए ऊपर अर्थात् बाहर के रूप को देखते हुए भी नहीं देखो। बाहर के रूप को देख जल्दी घबरा जाते हो। जिस कारण अच्छा सोचा हुआ भी बदल जाता है और कर्मबंधन में फंसते हो। क्यों हो गया, कैसे हो गया, ऐसा तो होना नहीं चाहिए, मेरे से ही क्यों होता है, मेरा ही भाग्य शायद ऐसा है.... ये रस्सियाँ बांधते जाते हो। ऐसे व्यर्थ संकल्प ही कर्मबंधन की सूक्ष्म रस्सियाँ हैं। कर्मातीत आत्मा तो सोचेगी कि जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा, ड्रामा भी अच्छा – ये (सोच) बंधन को काटने की कैंची का काम करती है। बंधन कट गये तो कर्मातीत हो गये ना! कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकण्ड कल्याणकारी है। हर सेकण्ड का आपका धंधा ही कल्याण करना है। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है।

सारा ज्ञान एक डॉट (बिन्दी) शब्द में समाया हुआ है

जो बाप की दिल पर सदा रहता है वह सदा ही जो बोलेगा, जो करेगा वह स्वत: ही बाप समान होगा। बाप समान बनना मुश्किल नहीं है ना? सिर्फ डॉट (बिन्दी) याद रखो तो मुश्किल नॉट (Not) हो जायेगी। डॉट को भूलते हो तो नॉट नहीं होता। कितना सहज है डॉट बनाना वा डॉट लगाना (A Point is so important even it has no dimension)। सारा ज्ञान इसी एक डॉट शब्द में समाया हुआ है। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी

और जो बीत गया उसे भी बिन्दी लगा दो, बस। छोटा बच्चा भी जब लिखना शुरू करता है तो पहले पेन्सिल कागज पर रखता है तो क्या बन जाता है? डॉट बनेगा ना? तो यह भी बच्चों का खेल है। यह पूरी ही ज्ञान की पढ़ाई खेल-खेल में है। मुश्किल काम नहीं दिया है। इसलिए काम भी सहज है और हो भी सहज-योगी।

क्वेश्चन मार्क का टेढ़ा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ

ब्रह्मा की विशेष इस बात की कमाल रही जो आप सबके आगे साकार रूप में ब्रह्मा बाप एग्जैम्पल था लेकिन ब्रह्मा के आगे कोई साकार एग्जैम्पल नहीं था। सिर्फ अटल निश्चय तथा बाप की श्रीमत का आधार रहा। आप लोगों के लिए तो बहुत सहज है और जितना पीछे आये हैं, उनके लिये और सहज है क्योंकि अनेक आत्माओं के परिवर्तन का श्रेष्ठ जीवन आपके आगे एग्जैम्पल है। यह करना है, यह बनना है – क्लीयर है। इसलिए, आप लोगों को "क्यों, क्य" का क्वेश्चन उठने की मार्जिन नहीं है। क्या करना है, आगे क्या होना है, राइट कर रहा हूँ वा रांग कर रहा हूँ – यह संकल्प उठना संभव था लेकिन संभव को असंभव बनाया। एक बल एक भरोसा – इसी आधार से निश्चयबुद्धि नंबर वन विजयी बन गये। इसी समर्पणमयता के कारण बुद्धि सदा हलकी रही, बुद्धि पर बोझ नहीं रहा। मन निश्चिंत रहा। चेहरे पर सदा ही बेफिकर बादशाह के चिह्न स्पष्ट देखे। 350 बच्चे और खाने के लिए आटा नहीं और टाइम पर बच्चों को खाना मिलना है! तो सोचो, ऐसी हालत में कोई बेफिकर रह सकता है? एक बजे (घन्टा) बजना है और 11.00 बजे तक आटा नहीं, कौन बेफिकर रह सकता है? ऐसी हालत में भी हर्षित, अचल रहा। यह बाप की जिम्मेवारी है, मेरी नहीं है, मैं भी बाप का, तो बच्चे भी बाप के हैं,

मैं निमित्त हूँ – ऐसा निश्चय और निश्चिंत कौन रह सकता है? मन-बुद्धि से समर्पित आत्मा। अगर अपनी बुद्धि चलाते कि पता नहीं क्या होगा, सब भूखे तो नहीं रह जायेंगे, यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होगा – ऐसे व्यर्थ संकल्प वा संशय की मार्जिन होते हुए भी समर्थ संकल्प चले कि सदा बाप रक्षक है, कल्याणकारी है। यह विशेषता है समर्पणता की। तो जैसे ब्रह्मा बाप ने समर्पण होने का पहला कदम "हिम्मत" का उठाया, ऐसे फालो फादर करो। निश्चय की विजय अवश्य होती है। तो टाइम पर आटा भी आ गया, बेल भी बज गया और पास हो गये। इसको कहते हैं क्वेश्चन मार्क (?) अर्थात् टेढा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ। "फुलस्टॉप" – इसी विधि से ही सहज भी होगा और सिद्धि भी प्राप्त होगी। तो यह है ब्रह्मा की कमाल। आज पहला एक कदम सुनाया है। फिकर के बोझ से बेफिकर बन जाओ, इसको ही कहा जाता है स्नेह का रिटर्न करना।

व्यर्थ रचना को कन्ट्रोल करो

भाग्यवान आत्मा की निशानी है – रहे हुए हिसाब-किताब सहज चुक्त करते रहना और 95 प्रतिशत आत्माओं द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की अनुभूति करना। जन की भाग्यवान आत्मायें जन के सपर्क-संबंध में आते सदा प्रसन्न रहेंगी, प्रश्नचित्त नहीं लेकिन प्रसन्नचित्त। यह ऐसा क्यों करता वा क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए – चित्त के अंदर ये प्रश्न उत्पन्न करने वाले को प्रश्नचित्त कहा जाता है और प्रश्नचित्त कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके चित्त में सदा "क्यों" की क्यू लगी रहती है। इसलिए उस क्यू को समाप्त करने में ही समय चला जाता है और यह क्यू फिर ऐसी होती है जो आप छोड़ने चाहो तो भी नहीं छोड़ सकते, समय देना ही पड़ेगा। क्योंकि इस क्यू का रचता आप

हो। जब रचना रच ली तो पालना करनी पड़ेगी, पालना से बच नहीं सकते। चाहे कितने भी मजबूर हो जाओ लेकिन समय, एनर्जी देनी ही पड़ेगी, पालना से बच नहीं सकते। इसलिए इस व्यर्थ रचना को कन्ट्रोल करो। यह बर्थ कन्ट्रोल करो। समझा? हिम्मत है? जैसे लोग कह देते हैं ना कि यह तो ईश्वर की देन है, हमारी थोड़े ही गलती है। ऐसे ही ब्राह्मण आत्मायें फिर कहती हैं – ड्रामा की नूँध है। लेकिन ड्रामा के मास्टर क्रियेटर, मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म को श्रेष्ठ बनाते चलो।

पता नहीं विनाश कब होगा, क्या होगा? बच्चों को क्या होगा? पौत्रों-धोत्रों को क्या होगा? यह चिंता रहता है? बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि जो हो रहा है वह अच्छा, ओर जो होने वाला है वह और भी बहुत अच्छा होगा क्योंकि कराने वाला अच्छे ते अच्छा है न! इसके कहते हैं निश्चबुद्धि विजयी।

सोचने से कुछ नहीं होता, करने से होता है

बाप ने डायरेक्शन दिया है – योग से हिसाब-किताब चुक्तु करो। तो बाप के डायरेक्शन पर खुशी-खुशी से वह काम भी करो, मजबूरी से नहीं। यह तो मालूम है कि वह बंधन है लेकिन घड़ी-घड़ी कहने से और भी कड़ा बड़ा बंधन हो जायेगा। मातायें बहुत करके कहती हैं – कब तक हमारा बंधन रहेगा? यह भी क्या बंधन बन गया? यह तो मालूम है कि यह बंधन है लेकिन अब यह सोचो कि योग से बंधनमुक्त कैसे बनें। सोचने से कुछ नहीं होता है, करने से होता है। सोचते-सोचते मानो उसी समय अंतिम घड़ी आ जाये तो क्या होगा? बंधन है, बंधन है, यही सोचते जायेंगे? पिंजड़े में ही जायेंगे! अंत में अगर बंधन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवान्स पार्टी में सेवा के लिये जायेंगे, इसलिए कभी-भी अपने से तंग नहीं हो। खुश रहो। क्या

करें, कैसे करें....यह गीत नहीं गाओ। खुशी के गीत गाओ।

फंसो नहीं, मजबूर भी न बनो, हँस-हँस के काम करो

प्रवृत्ति वाले थकते तो नहीं हो ना! सेवा समझकर करो, बंधन समझकर नहीं करो। सेंटर पर भी आ जायेंगे तो वहाँ भी तो सेवा के बिना तो नहीं रहेंगे। तो वह भी सेवा समझकर करो। अपने मन से नहीं बंधो लेकिन डायरेक्शन से पिछला हिसाब-किताब चुक्तु कर रहे हैं। मजबूरी से नहीं, प्यार से करो। फंसो भी नहीं और मजबूर भी न हो। हँस-हँस के काम करो। जैसे खेल कर रहे हैं। बिजनेस करो, दफ्तर का काम करो लेकिन खेल-खेल में करो। तो खेल में मज़ा आता है ना। खेल में थकते नहीं हैं। तो यह भी एक खेल कर रहे हैं – ऐसी अवस्था सदा रहे। सदा यही याद रखना कि हमें स्वयं बाप ने कोटों में से कोई को चुना है। बाप ने ढूंढ़ा और अपना बना लिया – इसी नशे वा खुशी में हर कार्य करते सफलतामूर्त बनते चलो। यही स्मृति वरदान रूप बन जायेगी, शक्तिशाली बना देगी।

अपने पार्ट को कम नहीं समझो

अच्छा है, यह ड्रामा में लक्की कुमारियाँ बन गईं जो बचपन से श्रेष्ठ संग मिला है। फिर भी हिम्मत रखी है तो हिम्मत वालों को फल भी मिलता है। मातायें भी कुमारियों को देखकर खुश होती हैं ना! मातायें सोचती हैं – हम भी इतने जीवन में आते तो अच्छा होता लेकिन सबका एक जैसा पार्ट तो हो नहीं सकता। वैराइटी चाहिए। सर्व का पिता है तो कुमार भी चाहिएँ, कुमारियाँ भी चाहिएँ, अधरकुमार-अधरकुमारियाँ भी चाहिएँ, सर्व सैम्पल चाहिएँ। पांडव यह तो नहीं सोचते कि अगर कुमारी होते तो टीचर बन जाते, सेंटर मिल जाता। हर एक के पार्ट की अपनी-अपनी विशेषता है, हर एक की विशेषता अलग और महान है। एक-दो

के पार्ट को देखकर खुश रहो। अपने पार्ट को कम नहीं समझो। सबका पार्ट अच्छे-ते-अच्छा है।

निश्चय का फाउंडेशन पक्का है तो तूफान हिला नहीं सकता

विजयी बनने का फाउन्डेशन है "निश्चय", फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिंग हमारी हिल नहीं सकती, निश्चिंत रहते हैं। अगर फाउन्डेशन कच्चा है तो थोड़ा-सा भी तूफान आयेगा, थोड़ी भी धरनी हिलेगी तो भय होगा कि यह बिल्डिंग हमारी गिर नहीं जाए या क्रेक (दरार) नहीं हो जाए। लेकिन फाउन्डेशन पक्का होगा तो निर्भय होंगे। ऐसे ही निश्चय का फाउन्डेशन पक्का है तो कोई तूफान हिला नहीं सकता। तो ऐसे विजयी हो या कभी-कभी थोड़ी दरार पड़ जाती है? या कभी थोड़ी खिड़कियाँ, दरवाजे के शीशे हिलते हैं? तूफान लगता है या धरनी की हलचल होती है तो क्या होता है? हलचल तो नहीं होती ना! हलचल में अचल रहना – इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि विजयी रत्न। सिर्फ बाप में निश्चय नहीं, अपने आप में भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। वाह ड्रामा वाह! अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी। निश्चय में इतनी शक्ति है! दिखाई ऐसे देगी कि अकल्याण की बात है लेकिन उसमें भी कल्याण छुपा हुआ होगा। पहले हिलाने के लिये ऐसा रूप आयेगा भी लेकिन आपको हिला नहीं सकता। ऐसे पक्के हो या थोड़ा-थोड़ा हिलते हो? संकल्प वा स्वप्न में भी हिलते तो नहीं? क्योंकि संकल्प में भी अगर थोड़ी-सी कमजोरी आ गई तो संकल्प का प्रभाव वाणी पर पड़ता, वाणी का प्रभाव कर्म पर पड़ता। इसीलिए बाप ने पहले संकल्प को ही बदली किया है।

साइडसीन्स अनेक बार पार किए हैं

कोई भी परिस्थिति आ जाए लेकिन स्मृतिस्वरूप आत्मा समर्थ होने के कारण परिस्थिति को क्या समझती है? यह तो खेल है। कभी घबराएगी नहीं। भल कितनी भी बड़ी परिस्थति हो लेकिन समर्थ आत्मा के लिए मंजिल पर पहुँचने के लिए यह सब रास्ते के साइडसीन्स हैं अर्थात् रास्ते के नजारे हैं। साइडसीन्स तो अच्छी लगती हैं ना! खर्चा करके भी साइडसीन देखने जाते हैं। यहाँ भी आजकल आबू-दर्शन करने जाते हो ना! अगर रास्ते में साइडसीन्स न हों तो वह रास्ता अच्छा लगेगा? बोर हो जायेंगे। ऐसे स्मृतिस्वरूप समर्थ-स्वरूप आत्मा के लिये परिस्थिति कहो, पेपर कहो, प्रोब्लेम्स कहो, सब साइडसीन्स हैं। स्मृति में है कि ये मंजिल के साइडसीन्स अनगिनत बार पार किये हैं। ये हैं नथिंग न्यू। इसका भी फाउन्डेशन क्या हुआ? स्मृति। अगर यह स्मृति भूल जाती अर्थात् फाउन्डेशन हिला तो जीवन की पूरी बिल्डिंग हिलने लगती है। आप तो अचल हैं ना!

जिसको निमित्त बनाया उसका जिम्मेवार बाप है

सदा एक बात याद रखो, सबके लिए कह रहे हैं – कभी भी ऐसा कोई व्यर्थ वा साधारण कर्म करते हो और अपने-आपको पहचान नहीं सकते हो कि राइट है वा रांग है, जब ऐसी परिस्थिति आती है, वशीभूत हो जाते हो उस समय ऐसी परिस्थिति में सिद्धि को प्राप्त करने की श्रेष्ठ विधि क्या है? क्योंकि उस समय अपनी बुद्धि तो वशीभूत है। राइट को भी रांग समझते हो, रांग को रांग नहीं समझते हो, राइट समझते हो। फिर जिद्द करेंगे या सिद्ध करेंगे। यह निशानी है वशीभूत बुद्धि की। ऐसे समय पर सदैव एक बापदादा की श्रेष्ठ मत याद रखो कि जिन्हों को बाप ने निमित्त बनाया है वे निमित्त आत्माएँ जो डायरेक्शन देती हैं, उसको महत्व देना चाहिए। निमित्त बने हुए श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा जो शिक्षा वा डायरेक्शन

मिलते हैं उसको उस समय महत्व देने से अगर कोई बुरी बात भी होगी तो आप जिम्मेदार नहीं। जैसे बाप सदा कहते हैं कि अगर ब्रह्मा द्वारा कोई गलती भी होगी तो वह गलती भी बदल आपके प्रति सही हो जायेगी। तो ऐसी निमित्त बनी हुई आत्माओं के प्रति कभी भी यह व्यर्थ संकल्प नहीं उठाना चाहिए। मानो कोई ऐसा फैसला भी दे देते हैं जो आपको ठीक नहीं लगता है लेकिन आप उसमें जिम्मेवार नहीं हैं। आपका पाप नहीं बनेगा। आपका काम ठीक हो जायेगा क्योंकि बाप बैठा है। बाप, पाप को बदल देगा। यह गुह्य रहस्य है। गुह्य मशीनरी है। इसलिए निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ डायरेक्शन को महत्व से कार्य में लगाओ। इसमें आपका फायदा है, नुकसान भी बदलकर फायदे में हो जायेगा। यह बाप की गारंटी है। समझा? इसलिए सुनाया कि कर्मों की लीला बड़ी विचित्र है। बाप जिम्मेवार है। जिनको निमित्त बनाया उसका जिम्मेवार बाप है। आपके पाप को बदलने का भी जिम्मेवार है, ऐसे ही निमित्त नहीं बनाया है, सोच-समझ के ड्रामा के लॉ मुजिब निमित्त बनाया गया है।

निमित्त के लिए कुछ भी कहना अर्थात् बाप के लिए कहना

इसमें फायदा है, बोझ हल्का हो गया। कोई भी बात आयेगी तो कहेंगे – निमित्त बने हुए बड़े जानें। हल्के हो गये ना। लेकिन सिर्फ कहने मात्र नहीं, समझने-मात्र, स्नेह-मात्र, स्वमान-मात्र हो। इन गुह्य बातों को बाप जाने और जो समझदार बच्चे हैं वह जानें। निमित्त बनी हुई आत्मा के लिए कुछ भी कहना अर्थात् बाप के लिए कहना। निमित्त बाप ने बनाया है ना। बाप से ज्यादा आपको परखने की शक्ति है?

ब्लड कनेक्शन से पद्मगुणा ज्यादा आत्मिक कनेक्शन होता है

बाप के अव्यक्त बनने में ड्रामा में गुप्त राज़ भरे हुए थे। कई बच्चे

सोचते हैं, कम-से-कम ब्रह्मा बाप छुट्टी लेते? नहीं देते ना। तो बलवान कौन हुआ? अगर छुट्टी लेते तो कर्मातीत नहीं बन सकते। क्योंकि ब्लड कनेक्शन से पद्मगुणा ज्यादा आत्मिक कनेक्शन होता है। ब्रह्मा को तो कर्मातीत होना था या स्नेह के बंधन में जाना था? ब्रह्मा बाप भी कहते हैं – ड्रामा ने कर्मातीत बनाने के बंधन में बांधा। और बांधा कितने टाइम में? समय होता तो और पार्ट हो जाता। इसलिए घड़ी का खेल हो गया। बच्चों को भी अनजान बना दिया। इसको कहते हैं कि वाह, ड्रामा वाह! ऐसा है ना! नहीं तो कम से कम बच्चे पूछ तो सकते थे कि क्या हो रहा है। लेकिन बाप भी चुप, बच्चे भी चुप रहे। इसको कहते हैं ड्रामा का फुलस्टॉप। उस घड़ी तो फुलस्टॉप ही लगा ना। पीछे भल क्वेश्चन कितने भी उठे लेकिन उस घड़ी नहीं। तो "वाह ड्रामा वाह" कहेंगे ना! "बाबा-बाबा" बुलाया भी पीछे, पहले नहीं बुलाया। यह ड्रामा की विचित्र नूँध होनी ही थी और होनी ही है। परिवर्तनशील ड्रामा पार्ट को भी परिवर्तन कर देता है।

पहले थे "हाय-हाय" के गीत, अभी हैं "वाह-वाह" के गीत

सदा अपने दिल में बाप के गुणों के गीत गाते रहते हो ना! सभी को यह गीत गाना आता है? ब्राह्मण बने और यह गीत ओटोमेटिक बजता रहता है, यह कितना मीठा गीत है! खुशी का गीत है, दुख या वियोग का गीत नहीं है। योगयुक्त होने का यह गीत है। योगी आत्मा ही यह गीत गा सकती है, दुखी आत्मा नहीं गा सकती। गीत है ही – "वाह बाबा वाह और वाह मैं श्रेष्ठ आत्मा वाह, वाह ड्रामा वाह"। तो वाह-वाह का गीत है, "हाय-हाय" का नहीं। पहले थे "हाय-हाय" के गीत, अभी हैं "वाह-वाह" के गीत। कुछ भी हो जाए लेकिन आपके दिल से "वाह" निकलेगा, "हाय" नहीं। दुनिया जिस बात को "हाय-हाय" कहती, आपके लिए वही बात "वाह-वाह" है। तो सभी यह गीत गाते हो ना! यह दिल के गीत

हैं, मुख के नहीं। कोई भी बात होती है तो यह ज्ञान है कि नथिंग न्यू, हर सीन अनेक बार रिपीट की है। नथिंग न्यू की स्मृति से कभी भी हलचल में आ नहीं सकते, सदा अचल-अटल रहेंगे। कोई नई बात है तो आश्चर्य से निकलता है – यह क्यों ऐसा होता है? लेकिन नथिंग न्यू है तो "क्या" और "क्यों" का क्वेश्चन नहीं, फुलस्टॉप आ जाता है। तो फुलस्टॉप वाले हो या क्वेश्चन मार्क वाले हो? जो फुलस्टॉप देना जानते हैं वह फुल पास होते हैं। तो फुल पास होने वाले हो या धक्के से पास होने वाले हो? पास होना है तो फुल। धक्के से पास होने वाले को पास नहीं कहेंगे।

कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पावर कम होने के कारण – तीन शब्द

बापदादा आज मुसकरा रहे थे। बच्चों में तीन शब्दों के कारण कंट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर कम हो जाती है। वह तीन शब्द हैं 1. व्हाई (क्यों), 2. व्हॉट (क्या), 3. वान्ट (चाहिए)। यह तीन शब्द खत्म कर, "व्हाई" आये तो बोले – वाह, "व्हॉट" शब्द आये तो भी बोलो – वाह। "वाह" शब्द तो आता है ना। वाह बाबा, वाह मैं और वाह ड्रामा। सिर्फ "वाह" बोलो तो यह तीन शब्द खत्म हो जायेंगे। उस दिन भी सुनाया कि बापदादा ने कौन-सा खेल देखा! आप लोगों का एक चित्र पहले का बनाया हुआ है जिसमें दिखाया है – योगी योग लगा रहा है, बुद्धि को एकाग्रचित्त कर रहा है, बैलेंस रख रहा है, बैलेंस की तराजू दिखाई है, जितना बुद्धि का बैलेंस करता उतना कोई-बंदर आकर बैठ जाता। इन तीनों बातों के बंदर आ जाते हैं तो बैलेंस क्या होगा? हलचल हो जायेगी, बैलेंस नहीं रहेगा। तो यह तीन शब्द बैलेंस को समाप्त कर देते हैं, बुद्धि को नचाने लगते है। बंदर आराम से बैठ सकता है क्या? और कुछ नहीं तो पूंछ को ही हिलाता रहेगा। तो इसमें भी बैलेंस न होने के कारण बाप द्वारा हर कदम में जो दुआयें मिलती हैं वा आत्मिक स्नेह के कारण परिवार द्वारा जो दुआयें

मिलती हैं उनसे वंचित हो जाते हैं।

ब्राह्मणों की दृष्टि में बुरा होता नहीं, बुरा सुनाई देता नहीं

अचल-अडोल आत्माएँ हैं, ऐसा अनुभव करते हो? एक तरफ है हलचल और दूसरी तरफ आप ब्राह्मण आत्माएँ सदा अचल हैं। जितनी वहाँ हलचल है उतना आपके अंदर अचल-अडोल स्थिति का अनुभव बढ़ता जा रहा है। कुछ भी हो जाये, सबसे सहज युक्ति है – नथिंग न्यू। कोई बात नहीं है। कभी आश्चर्य लगता है कि ये क्या हो रहा है? क्या होगा? आश्चर्य तब हो जब नई बात हो। कोई भी बात सोची नहीं हो, सुनी नहीं हो, समझी नहीं हो और अचानक होती है तो आश्चर्य लगता है। तो आश्चर्य नहीं लेकिन फुलस्टॉप हो। दुनिया मूंझने वाली और आप मौज़ में रहने वाले हो। दुनिया वाले छोटी-छोटी बात में मूंझेंगे, क्या करें, कैसे करें और आप सदा मौज़ में हो, मूंझना खत्म हो गया। ब्राह्मण अर्थात् मौज़, क्षत्रिय अर्थात् मूंझना। कभी मौज़, कभी मूंझ। आप सभी अपना नाम ही कहते हो ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी। क्षत्रिय कुमार और क्षत्रिय कुमारी तो नहीं हो ना? सदा अपने भाग्य की खुशी में रहने वाले हो। दिल में सदा, स्वत: एक गीत बजता रहता – वाह बाबा और वाह मेरा भाग्य। यह गीत बजता रहता है, इसको बजाने की आवश्यकता नहीं है। यह अनादि बजता ही रहता है। हाय-हाय खत्म हो गई, अभी है वाह-वाह। हाय-हाय करने वाले तो बहुत मैजारिटी हैं और वाह-वाह करने वाले बहुत थोड़े हो। तो नये वर्ष में क्या याद रखेंगे? वाह-वाह। जो सामने देखा, जो सुना, जो बोला सब वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। हाय ये क्या हो गया! नहीं, वाह, यह बहुत अच्छा हुआ। कोई बुरा भी करे लेकिन आप अपनी शक्ति से बुरे को अच्छे में बदल दो। यही तो परिवर्तन है ना। अपने ब्राह्मण जीवन में बुरा होता ही नहीं। **चाहे कोई गाली भी देता है तो बलिहारी गाली देने**

वाले की, जो सहनशक्ति का पाठ पढ़ाया। बलिहारी तो हुई ना, जो मास्टर बन गया आपका! मालूम तो पड़ा आपको कि सहनशक्ति कितनी है, तो बुरा हुआ या अच्छा हुआ? ब्राह्मणों की दृष्टि में बुरा होता ही नहीं। ब्राह्मणों के कानों में बुरा सुनाई देता ही नहीं। इसलिए तो ब्राह्मण जीवन मौज़ों की जीवन है। अभी-अभी बुरा, अभी-अभी अच्छा, तो मौज़ नहीं हो सकेगी। सदा मौज़ ही मौज़ है। सारे कल्प में ब्रह्माकुमार और कुमारी श्रेष्ठ हैं। देव आत्माएँ भी ब्राह्मणों के आगे कुछ नहीं हैं। सदा इस नशे में रहो, सदा खुश रहो और दूसरों को भी खुश रखो। मैं तो खुश रहता हूँ, ये भी स्वार्थ है। ब्राह्मणों की सेवा क्या है? ज्ञान देते ही हो खुशी के लिए।

समाचार सुनते कल्प पहले की स्मृति से समर्थ रहें

सभी बच्चों को नथिंग न्यू का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। ब्राह्मण जीवन अर्थात् क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की रेखा हो नहीं सकती। कितने बार यह समाचार भी सुना होगा। नया समाचार है क्या? नहीं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर समाचार सुनते कल्प पहले की स्मृति में समर्थ रहें, जो होना है वह हो रहा है, इसलिए क्या होगा, यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। त्रिकालदर्शी हो, ड्रामा के आदि-मध्य-अंत को जानने वाले हो तो क्या वर्तमान को नहीं जानते हैं? घबराते तो नहीं हो ना! ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है। घबराने की बात नहीं है। आप सबका कर्तव्य है अपनी शान्ति की शक्ति से अशान्त आत्माओं को शान्ति की किरणें देना। अपने ही, आपके भाई-बहनें हैं, तो ईश्वरीय परिवार के संबंध से सहयोगी बनो। जितना ही युद्ध में तीव्र गति है, आप योगी आत्माओं का योग उन्हों को शान्ति का सहयोग देगा। इसलिए और विशेष समय निकाल शान्ति का सहयोग दो। ये ब्राह्मण आत्माओं का कर्तव्य हैं।

बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती, यह कल्प-कल्प की नूंध निश्चित है

निश्चयबुद्धि विजयी आत्माएँ हैं, ऐसा अनुभव करते हो? सदा निश्चय अटल रहता है? वा कभी डगमग भी होते हो? निश्चयबुद्धि की निशानी है, वो हर कार्य में चाहे व्यवहारिक हो, चाहे परमार्थी हो लेकिन हर कार्य में विजय का अनुभव करेगा। कैसा भी साधारण कर्म हो लेकिन विजय का अधिकार उसको अवश्य प्राप्त होगा क्योंकि ब्राह्मण जीवन का विशेष जन्म-सिद्ध अधिकार विजय है। कोई भी कार्य में स्वयं से दिलशिकस्त नहीं होगा क्योंकि उसे निश्चय है कि विजय जन्म-सिद्ध अधिकार है। तो इतना अधिकार का नशा रहता है? जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कल्प पहले का यादगार भी दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है वहाँ विजय है। चाहे पाँच पाण्डव दिखाते हैं लेकिन विजय क्यों हुई? भगवान साथ है, तो जब कल्प पहले यादगार में विजयी बने हो तो अभी भी विजयी होंगे ना? कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिए कि ये होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं होगी, यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। कभी भी बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती। यह कल्प-कल्प की नूंध निश्चित है।

देखो बच्चे, समय के समाचार सुनते ऊंचे ते ऊंचे साक्षीपन के आसन और बेफिकर बादशाह के सिंहासन पर बैठ सब खेल देख रहे हो ना? इस ब्राह्मण जीवन में घबराने का तो स्वप्न में भी संकल्प उठ नहीं सकता। यह तपस्या वर्ष के निरंतर लगन की अग्नि में बेहद की वैराग्य-वृत्ति प्रज्वलित करने का पंखा लगा रहा है। आपने बाप समान संपन्न बनने का संकल्प किया अर्थात् विजय का झण्डा लहराने का प्लान बनाया, तो दूसरे तरफ

समाप्ति की हलचल भी तो साथ-साथ नूंधी है ना? रिहर्सल ही ड्रामा के रील को समाप्त करने का साधन है इसलिए नथिंग न्यू।

समय के सरकमस्टांस प्रमाण आने-जाने में व किसी वस्तु के मिलने में कुछ खींचतान हो, मन के संकल्प की खींचातान में नहीं आना। जहाँ जिस परिस्थिति में रहो, दिलखुश मिठाई खाते रहो। खुशहाल रहो, फरिश्तों की चाल में उड़ो। साथ-साथ इस समय हरेक सेन्टर पर विशेष तपस्या का प्रोग्राम चलता रहे। जो ज्यादा समय निकाल सकते हैं, उतना साइलेन्स का सहयोग दो।

अपने लिए सोचते, यह तो होता ही है, दूसरे के लिए सोचते, क्यों होता है?

फुल पास होने के लिए सबसे सहज साधन है, जो भी कोई पेपर आते हैं और इस तपस्या वर्ष में भी आयेंगे। ऐसे नहीं कि नहीं आयेंगे। लेकिन पेपर समझकर पास करो। बात को बात नहीं समझो, पेपर समझो। पेपर के क्वेश्चन के विस्तार में नहीं आते – यह क्यों आया, किसने किया? पास होने का सोचकर पेपर को पार करते हैं। तो पेपर समझकर पास करो। यह क्या हो गया, ऐसा होता है क्या या अपनी कमजोरी में भी यह नहीं सोचो कि यह तो होता ही है। अपने लिये सोचते हो – यह तो होता ही है, इतना तो होगा ही और दूसरों के लिए सोचते हो यह क्यों किया, क्या किया। इन सब बातों को पेपर समझकर फुल पास होने का लक्ष्य रख करके पास करो। पास होना है, पास करना है और बाप के पास रहना है तो फुल पास हो जायेंगे।

सन्तुष्टमणि अर्थात् जो भी प्रश्न अपने प्रति या किसके भी प्रति उठता, उसका उत्तर स्वयं को पहले आता

एक होता है प्रसन्नचित्त, दूसरा है प्रश्नचित्त। प्रश्न अर्थात् क्वेश्चन। प्रसन्नचित्त ड्रामा के नॉलेजफुल होने कारण प्रसन्न रहता, प्रश्न नहीं करता। जो भी प्रश्न अपने प्रति या किसके प्रति भी उठता, उसका उत्तर स्वयं को पहले आता। पहले भी सुनाया था, व्हाट (What) और व्हाई (Why) नहीं, लेकिन डॉट। क्या, क्यों नहीं, फुलस्टॉप, बिन्दु। एक सेकण्ड में विस्तार, एक सेकण्ड में सार। ऐसा प्रसन्नचित्त सदा निश्चिन्त रहता है। तो चेक करो, ऐसी निशानियाँ मुझ संतुष्टमणि में हैं? बापदादा ने सबको टाइटल दिये हैं – संतुष्टमणि। तो बापदादा पूछ रहे हैं कि हे सन्तुष्टमणियो, सन्तुष्ट हो? फिर प्रश्न है – स्वयं से अर्थात् स्वयं के पुरुषार्थ से, स्वयं के संस्कार परिवर्तन के पुरुषार्थ से, स्वयं के पुरुषार्थ की परसेन्टेज में, स्टेज में सदा सन्तुष्ट हो? अच्छा, दूसरा प्रश्न – स्वयं के मनसा, वाचा और कर्म अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सेवा में सदा सन्तुष्ट हो? तीनों ही सेवा, सिर्फ एक सेवा नहीं। तीनों ही सेवा में और सदा सन्तुष्ट हो? सोच रहे हैं, अपने को देख रहे हैं कि कहाँ तक सन्तुष्ट हैं? अच्छा तीसरा प्रश्न – सर्व आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्वयं द्वारा वा सर्व द्वारा सदा सन्तुष्ट हो? क्योंकि तपस्या वर्ष में तपस्या का, सफलता का फल यही प्राप्त करना है। स्वयं में, सेवा में और सर्व में सन्तुष्टता। चार घण्टा तो योग किया, बहुत अच्छा और चार से आठ घण्टा तक भी पहुँच जायेंगे। यह भी बहुत अच्छा। योग का सिद्धिस्वरूप हो। योग विधि है लेकिन इस विधि से सिद्धि क्या मिली? योग लगाना यह विधि है, योग की प्राप्ति यह सिद्धि है। तो जैसे आठ घण्टे का लक्ष्य रखा है तो कम-से-कम यह तीन प्रकार की सन्तुष्टता की सिद्धि का श्रेष्ठ लक्ष्य रखो। कई बच्चे मियाँ मिट्ठू माफिक

भी स्वयं को सन्तुष्ट समझते हैं। ऐसे सन्तुष्ट नहीं बनना। एक है दिल माने, एक है दिमाग माने। दिमाग में अपने को समझते हैं सन्तुष्ट हैं ही, क्या परवाह है। हम तो बेपरवाह हैं। तो दिमाग से स्वयं को सन्तुष्ट समझना – ऐसी सन्तुष्टता नहीं, यथार्थ समझना है। सन्तुष्टता की निशानियाँ स्वयं में अनुभव हों। चित्त प्रसन्न हो, पर्सनलिटी हो। स्वयं पर्सनलिटी समझें और दूसरे नहीं समझें, इसको कहा जाता है – मियांमिट्ठू। ऐसे सन्तुष्ट नहीं लेकिन यथार्थ अनुभव द्वारा सन्तुष्ट बनो। सन्तुष्टता अर्थात् दिल-दिमाग सदा आराम में होंगे, सुख-चैन की स्थिति में होंगे। बेचैन नहीं होंगे। सुख-चैन होगा। ऐसी सन्तुष्टमणियाँ सदा बाप के मस्तक में मस्तक-मणियों समान चमकती हैं। तो स्वयं को चेक करो। सन्तुष्टता बाप की और सर्व की दुआएँ दिलाती है। सन्तुष्ट आत्मा समय प्रति समय सदा अपने को बाप और सर्व की दुआओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। दुआ मांगेगा नहीं लेकिन दुआएँ उसके आगे स्वत: ही आयेंगी। ऐसे सन्तुष्टमणि अर्थात् सिद्धि स्वरूप तपस्वी।

ब्राह्मणों के चरण पड़ रहे हैं जगह-जगह पर, इसमें भी राज़ है

सभी खुश-राज़ी हो, सन्तुष्ट हो? बाहर रहने में भी सन्तुष्ट हो? यह भी ड्रामा में पार्ट है। जब कहते हो सारा आबू हमारा होगा तो वह कैसे होगा? पहले आप चरण तो रखो। फिर अभी जो धर्मशाला नाम है वह अपना हो जायेगा। देखो विदेश में अभी ऐसे होने लगा है। चर्च इतने नहीं चलते हैं तो बी.के.को दे दी हैं। जो ऐसे बड़े-बड़े स्थान हैं, चल नहीं पाते हैं तो ऑफर करते हैं ना तो ब्राह्मणों के चरण पड़ रहे हैं जगह-जगह पर, इसमें भी राज़ है। ब्राह्मणों को रहने का ड्रामा में पार्ट मिला है। तो सारा ही अपना जब हो जायेगा फिर क्या करेंगे? आपे ही ऑफर करेंगे, आप सम्भालो। हमें भी सम्भालो, आश्रम भी सम्भालो। जिस समय जो पार्ट

मिला है, उसमें राज़ी हो करके पार्ट बजाओ।

(ड्रामा में) सदा एक सीन तो अच्छी लगती नहीं

दादियों से – सदैव कोई नई सीन होनी चाहिए ना। यह भी ड्रामा में नई सीन थी जो रिपीट हुई। यह सोचा था कि यह हाल भी छोटा हो जायेगा? **सदा एक सीन तो अच्छी लगती नहीं।** कभी-कभी की सीन अच्छी लगती है। यह भी एक रूहानी रौनक है ना! इन सभी आत्माओं का संकल्प पूरा होना था, इसलिए यह सीन हो गई। यहाँ से छुट्टी दे दी, भले आओ। तो क्या करेंगे? अभी तो नये और बढ़ने हैं। और पुराने तो पुराने हो गये। जैसे उमंग से आये हैं वैसे अपने को सेट किया है, यह अच्छा किया है। विशाल तो होना ही है। कम तो होना है नहीं। जब विश्वकल्याणकारी का टाइटल है तो विश्व के आगे यह तो कुछ भी नहीं है। वृद्धि भी होनी है और विधि भी नये से नई होनी है। कुछ न कुछ विधि होती रहनी है। अभी वृत्ति पावरफुल होगी। तपस्या द्वारा वृत्ति पावरफुल हो जायेगी तो स्वत: ही वृत्ति द्वारा आत्माओं की भी वृत्ति चेंज होगी।

फुटबाल के खेल में बॉल की तरह विघ्न आएगा तभी तो ठोकर लगाएँगे

तपस्या अर्थात् खुशी में नाचना और बाप के और अपने आदि-अनादि स्वरूप के गुण गाना। तो यह गीत कितना बड़ा और कितना सहज है। इसमें गला ठीक है वा नहीं ठीक है, इसकी भी जरूरत नहीं है। निरंतर यह गीत गा सकते हो। निरंतर खुशी में नाचते रहो। तो तपस्या का अर्थ क्या हुआ? नाचना और गाना, कितना सहज है? माथा भारी उसका होता है जो छोटी-सी गलती करते हैं। ब्राह्मण जीवन में कभी किसका माथा भारी हो नहीं सकता। हास्पिटल बनाने वालों का माथा भारी हुआ? ट्रस्टी

सामने बैठे हैं ना! जब करनकरावनहार बाप है तो आपको क्या बोझ है? यह तो निमित्त समझकर भाग्य बनाने का साधन बना रहे हो। आपकी जिम्मेवारी क्या है? बाप के बजाय अपनी जिम्मेवारी समझ लेते हैं तो माथा भारी होता है। बाप सर्वशक्तिवान मेरा साथी है तो क्या भारीपन होगा? छोटी-सी गलती कर देते हो, मेरी जिम्मेवारी समझते हैं तो माथा भारी होता है। तो ब्राह्मण जीवन है, नाचो-मौज़ करो। सेवा चाहे वाचा है, चाहे कर्मणा, यह सेवा भी एक खेल है। सेवा कोई और चीज़ नहीं है। कोई दिमाग के खेल होते हैं, कोई हल्के खेल होते हैं लेकिन हैं तो खेल ना। दिमाग के खेल में दिमाग भारी होता है क्या? तो यह सब खेल करते हो। तो चाहे कितना भी बड़ा सोचने का काम हो, अटेन्शन देने का काम हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के लिए सब खेल है, ऐसे है? इस तपस्या वर्ष में जो कुछ हो रहा है इसका कारण क्या? बड़े-बड़े प्रोजेक्ट कर रहे हो, इसका कारण क्या? कोई समझते हैं कि यही तपस्या का फल है। कोई समझते हैं, तपस्या वर्ष में यह क्यों? दोनों वायब्रेशन आते हैं लेकिन यह समय की तीव्रगति और तपस्या के वायब्रेशन से आवश्यकता का पूर्ण होना, यह तपस्या के बल का फल है तो खाना तो पड़ेगा ना। यह ड्रामा दिखाता है कि तपस्या सर्व आवश्यकताओं को समय पर सहज पूर्ण कर सकती है। क्वेश्चन नहीं उठ सकता कि यह क्यों हो रहा है। तपस्या अर्थात् सफलता की सहज अनुभूति हो। आगे चलकर असंभव कैसे संभव होता है, यह अनुभव ज्यादा से ज्यादा करेंगे। विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अंत तक नूंध है। यह विघ्न भी असंभव से संभव की अनुभूति कराते हैं और आप सभी तो अनुभवी हो ही गये हैं। इसलिए विघ्न भी खेल लगता है। जैसे फुटबाल का खेल करते हो। तो क्या करते हो? बॉल आता है तभी तो ठोकर लगाते हो। अगर बॉल ही न आये तो

ठोकर कैसे लगायेंगे? खेल कैसे होगा? यह भी फुटबॉल का खेल है। खेल खेलने में मज़ा आता है ना या मूंझते हो? कोशिश करते हो ना कि बॉल मेरे पांव में आये, मैं लगाऊँ। यह खेल तो होता रहेगा। नथिंग न्यू। ड्रामा खेल भी दिखाता है और सम्पन्न सफलता भी दिखाता है।

कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है, सहनशक्ति को बढ़ा देता है

बेहद की खुशी है? ऐसे नहीं, आज थोड़ी खुशी कम हो गई, थोड़ा-सा उदास हो गये। उदास कौन होता है? जो माया का दास बनता है। क्या करें, कैसे करें, ये क्वेश्चन आना माना उदास होना। जब भी क्यों का क्वेश्चन आता है, क्यों हुआ, क्यों किया तो इससे सिद्ध है कि चक्र का ज्ञान पूरा नहीं है। अगर ड्रामा के राज़ को जान जायें तो क्यों, क्या का क्वेश्चन उठ नहीं सकता। जब स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी है तो यह क्या क्वेश्चन उठ सकता है? तो ड्रामा का ज्ञान और ड्रामा में भी समय का ज्ञान इसकी कमी है तो क्यों और क्या का क्वेश्चन उठता है। तो कभी उठता है कि क्या यह मेरा ही हिसाब है, मेरा ही कड़ा हिसाब है, दूसरे का नहीं, मेरे को ही ऐसा परिवार मिला है, मेरे को ही ऐसा काम मिला है, ऐसे साथी मिले हैं, लेकिन जो हो रहा है बहुत अच्छा। यह कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है। सहनशक्ति को बढ़ा देता है। तेज आग के आगे कोई भी चीज़ परिवर्तन न हो, यह हो ही नहीं सकता। तो यह कभी नहीं कहना, कड़ा हिसाब है। कमजोरी ही सहज को मुश्किल बना देती है। ईश्वरीय शक्ति का बहुत बड़ा महत्व है। तो सदा स्व को देखो, स्वदर्शनचक्रधारी बनो। और बातों में जाना, औरों को देखना माना गिरना और बाप को देखना, बाप का सुनना अर्थात् उड़ना।

परिस्थिति रूपी बड़े से बड़ा पहाड़ भी आ जाए, अचल रहना

कुछ भी आए, कुछ भी हो जाये, परिस्थिति रूपी बड़े ते बड़ा पहाड़ भी आ जाये, संस्कार टक्कर खाने के बादल भी आ जायें, प्रकृति भी पेपर ले लेकिन अंगद समान मन-बुद्धि रूपी पाँव हिलाना नहीं, अचल रहना। बीती में अगर कोई हलचल भी हुई हो, उसको संकल्प में भी स्मृति में नहीं लाना, फुलस्टॉप लगाना। वर्तमान को बाप समान श्रेष्ठ सहज बनाना और भविष्य को सदा सफलता के अधिकार से देखना। इस विधि से सिद्धि को प्राप्त करना। कल से नहीं, अभी से करना। स्मृति-मास के थोड़े समय को बहुत काल का संस्कार बनाओ। यह विशेष वरदान विधिपूर्वक प्राप्त करना। वरदान का अर्थ यह नहीं है कि अलबेले बनो। अलबेला नहीं लेकिन सहज पुरुषार्थी बनना।

कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा निर्णय शक्ति को बढ़ाओ

तो जब कर्म में ऐसे बिज़ी हो, मुश्किल काम हो, उस समय योग मुश्किल कर्म को सहज करेगा। तो ऐसे नहीं सोचना कि यह काम हम पूरा करेंगे, फिर योग लगायेंगे! कर्म के साथ-साथ योग को सदा साथ रखो। दिन-प्रतिदिन समस्यायें, सरकमस्टांश और टाइट होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट ठीक नहीं कर सकती। इसलिए योग और कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। समझा? फिर ऐसे नहीं कहना कि यह तो मालूम नहीं था, ऐसे भी होता है। यह पहले पता होता तो मैं योग ज्यादा कर लेता लेकिन अभी से यह अभ्यास करो।

बाहर से दिखने वाली हलचल में भी गुप्त कल्याण समाया है

जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते हैं उनके संकल्पों में

कभी भी "यह क्या हुआ", "यह क्यों हुआ" यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा, यह क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है अत: कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के सम्बन्ध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है। **ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो सकता? अकल्याण नहीं हो सकता।** इतना निश्चय है या थोड़ा बहुत आयेगा तो हिल जायेंगे? समस्यायें आयें तो मिक्की माउस का खेल तो नहीं करेंगे? मिक्की माउस का खेल देखा भले लेकिन करना नहीं।

प्रकृतिपति हो, प्रकृति के खेल को देख हर्षित रहो

आपके सतयुगी राज्य में प्रकृति का स्वरूप कितना श्रेष्ठ, सतोप्रधान, सुन्दर होगा! वहाँ के बगीचे और यहाँ के बगीचे में कितना अन्तर है! वह रीयल खुशबू अनुभव की है ना? फिर भी प्रकृति अन्त तक भी अपना अच्छा पार्ट बजा रही है लेकिन प्रकृति-पति आप श्रेष्ठ आत्मायें हो। प्रकृति-पति हो, इस प्रकृति के खेल को देख हर्षित होते हो? चाहे प्रकृति हलचल करे, चाहे प्रकृति सुन्दर खेल दिखाए – दोनों में प्रकृति-पति आत्माएं साक्षी हो खेल देखती हो? खेल में मज़ा लेते हैं, घबराते नहीं हैं। इसलिए बापदादा तपस्या द्वारा साक्षीपन के स्थिति के आसन पर अचल-अडोल रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं। अचल आसन अच्छा लगता है ना। कोई भी बात हो जाए प्रकृति की, चाहे व्यक्ति की, दोनों अचल स्थिति के आसन को जरा भी हिला नहीं सकते हैं। इतने पक्के हो ना या अभी होना है?

माया और प्रकृति के पाँच-पाँच खिलाड़ी खेल के बिना नहीं रह सकते, आप एन्जवाय करो

प्रकृति के भी पाँच खिलाड़ी हैं और माया के भी पाँच खिलाड़ी हैं। इन दस खिलाड़ियों को अच्छी तरह से जानते हो ना? खिलाड़ी खेल के बिना रहेंगे क्या? कभी कोई खिलाड़ी सामने आ जाता है, कभी कोई सामने आ जाता है। आजकल भी पुरानी दुनिया में खेल देखने के बहुत शौकीन हैं ना? कितना प्यार से खेल देखते हैं। वो हैं पुरानी दुनिया वाले और आप हो संगमयुगी ब्राह्मण आत्माएँ, तो खेल देखना, एन्जवाय (Enjoy) करना है या घबराना है? कोई गिरता है, कोई गिराता है लेकिन खेल देखने वाले को, गिरता हुआ देख भी मज़ा आता है और विजय प्राप्त करता हुआ देख भी मज़ा आता है। तो यह भी बहुत बड़ा खेल है। सिर्फ आसन को नहीं छोड़ो, बस। कितना भी कोई हिलाए लेकिन आप शक्तिशाली आत्माएँ हिल नहीं सकती हो। बापदादा आज हर एक रूहानी गुलाब को देख रहे हैं।

जो भूलना है, सेकण्ड में भूल जाए, जो याद करना है वह सेकण्ड में याद आए

होली अर्थात् हो ली, बीती सो बीती। जो बात गुज़र गई उसको कहते हैं हो ली। जो होना था वह हो ली। तो बीती सो बीती करना माना होली जलाना। और जब बाप के सामने आते हो तो कहते हो, मैं तो बाप की हो ली, हो गई। तो मनाया भी और हो ली, बीती सो बीती। बीती को भूल जाना यह है जलाना। तो एक ही होली शब्द में जलाना और मनाना है। गीत गाते हो ना, मैं तो बाप की हो ली। पक्के हो ना? क्योंकि बापदादा ने सबके तपस्या का पोतामेल देखा। तपस्या अगर कभी भी कम हुई तो उसका कारण क्या बना है? बीती सो बीती करने में बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क लगा दिया है। और छोटी-सी गलती करते हो, है छोटी

लेकिन नुकसान बहुत बड़ा होता है। वह क्या गलती करते हो? जिसको भुलाना है उसको याद करते हो और जिसको याद करना है उसको भुला देते हो। तो भुलाना आता है ना? बाप को भूलने नहीं चाहते हो तो भी भूल जाते हो और जिस समय भूलना चाहिए उस समय क्या कहते हो? भूलना चाहते हैं लेकिन भूलते नहीं, बार-बार याद आ जाता है। तो याद करना और भूलना दोनों ही बातें आती हैं। लेकिन क्या याद करना है और क्या भूलना है? जिस समय भूलना है उस समय याद करते हो और जिस समय याद करना है उस समय भूल जाते हो। छोटी-सी गलती है ना? तो इसको हो ली कर दो, जला दो। अंश से खत्म कर दो। ज्ञानी तू आत्मा हो ना? ज्ञानी का अर्थ ही है समझदार। और आप तो तीनों कालों को समझते हो। इसलिये होली मनाना अर्थात् इस गलती को जलाना। जो भूलना है वह सेकण्ड में भूल जाये और जो याद करना है वह सेकण्ड में याद आए। कारण सिर्फ बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क है। क्यों सोचा और क्यू शुरू हो जाती है। ऐसा, वैसा, क्यों, क्या.... बड़ी क्यू शुरू हो जाती है सिर्फ क्वेश्चन मार्क लगाने से। और बिन्दी लगा दो तो क्या होगा? आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और व्यर्थ को भी बिन्दी, फुलस्टॉप। स्टॉप भी नहीं, फुलस्टॉप। इसको कहा जाता है होली। और इस होली से सदा बाप के संग के रंग की होली, मिलन होली मनाते रहेंगे।

अच्छाई उठाने से ही नम्बर मिलते हैं

हर बात में अच्छा-अच्छा कहते, अच्छा बनते जाते, क्योंकि हर बात में अच्छाई समाई हुई जरूर होती है। चाहे सारी बात बुरी हो लेकिन एक-दो अच्छाई भी जरूर होती हैं। वह अच्छा ही पाठ पढ़ाती हैं। पाठ पढ़ाने की अच्छाई हर बात में समाई हुई है। धीरज का भी पाठ पढ़ाती हैं। **अगर दूसरा आवेश कर रहा हो तो आप क्या पढ़ रही हो? जितना आवेश उतना ही**

वह बात आपको धीरज और सहनशीलता सिखाती है। इसलिए कहते हैं, जो हुआ, वह अच्छा और जो होना है, वो और अच्छा। अच्छाई उठाने की सिर्फ बुद्धि चाहिए। ऐसे अच्छाई उठाने से ही नंबर मिलते हैं।

राजधानी में आना अर्थात् ब्राह्मण परिवार में सन्तुष्ट रहना

कई बच्चे और क्या कहते हैं कि बाबा आपमें तो निश्चय है लेकिन अपने आपमें इतना निश्चय नहीं है। कभी होता है, कभी अपने में निश्चय कम हो जाता है। फिर उन्हों की भाषा क्या होती है? एक ही गीत गाते हैं। पता नहीं, पता नहीं, पता नहीं...। पता नहीं ऐसे क्यों होता है, पता नहीं, मेरा भाग्य है, पता नहीं, बाप की मदद मिलेगी वा नहीं, पता नहीं, सफलता होगी वा नहीं। जब मास्टर सर्वशक्तिमान हो तो इस निश्चय में कमी है, तब पता नहीं, पता नहीं का गीत गाते हैं। और तीसरे फिर क्या कहते हैं कि बाबा हमने आपको देख करके सौदा किया। आप हमारे हो, हम आपके हैं, इस ब्राह्मण परिवार से हमने सौदा नहीं किया। ब्राह्मण परिवार खिटखिट है, आप ही ठीक हो। ब्राह्मणों के संगठन में चलना मुश्किल है, एक आपसे चलना सहज है। तो बापदादा क्या कहेंगे? बापदादा मुसकराते हैं, ऐसे बच्चों से बापदादा का एक प्रश्न है, क्योंकि ऐसी आत्माएँ प्रसन्न-चित्त नहीं रहती, प्रश्न बहुत करती हैं। ये ऐसा क्यों, ऐसा होता है क्या, तो वह प्रसन्न-चित्त आत्मा नहीं है। प्रश्न-चित्त आत्मा है। बापदादा भी उन्हों से प्रश्न करते हैं कि आप आत्मा मुक्तिधाम में रहने वाली हो या जीवनमुक्ति में आने वाली हो? मुक्ति में रहना है, फिर जीवनमुक्ति में आना है ना। तो जीवनमुक्ति में सिर्फ बाबा ब्रह्मा होगा या राजधानी होगी? सिर्फ ब्रह्मा और सरस्वती राजा-रानी होंगे? जीवनमुक्ति का वर्सा पाना है ना। आप लोग चैलेन्ज करते हो कि आदि सनातन धर्म में सबसे बड़ा अंतर है कि वो सिर्फ धर्म स्थापना करते हैं और आप धर्म और राज्य दोनों की

स्थापना कर रहे हो। यह पक्का है ना। धर्म की स्थापना और राज्य की भी स्थापना कर रहे हो ना, तो राज्य में क्या होगा? सिर्फ एक राजा, एक रानी होंगे? एक राजा-रानी और आप एक बच्चा और बच्ची, बस। ऐसा राज्य होता है? तो हमें राजधानी में आना है। यह याद रखो। राजधानी में आना अर्थात् ब्राह्मण परिवार में संतुष्ट रहना।

माया द्वारा ऊपर-नीचे करने में भी कल्याण है, आपको अनुभवी बना रही है

बाप में निश्चय है कि वह कल्प पहले वाला फिर से आकर मिला है? ऐसे ही अपने में भी निश्चय है कि हम वही कल्प पहले वाली बाप के साथ पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मायें हैं? या बाप में निश्चय ज्यादा है, अपने में कम है? अच्छा, ड्रामा में जो भी होता है उसमें भी पक्का निश्चय है? जो ड्रामा में होता है वह कल्याणकारी युग के कारण सब कल्याणकारी है या कुछ अकल्याणकारी हो जाता है? कोई मरता है उसमें कल्याण है? वो मर रहा है, आप कल्याण कहेंगे? कल्याण है? बिजनेस में नुकसान हो गया, यह कल्याण हुआ? तो नुकसान भी कल्याणकारी है। ज्ञान के पहले जो बातें कभी आपके पास नहीं आई, ज्ञान के बाद आई तो उसमें कल्याण है? माया ऊपर-नीचे कर रही है, कल्याण है? इसमें क्या कल्याण है? माया आपको अनुभवी बनाती है। अच्छा, तो ड्रामा में भी इतना अटल निश्चय हो, चाहे देखने में अच्छी बात न भी हो लेकिन उसमें भी गुप्त अच्छाई क्या भरी हुई है, वो परखना चाहिए। तो ड्रामा की बात को परखने की बुद्धि चाहिए। निश्चय की पहचान ऐसे समय पर होती है। परिस्थिति सामने आए और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति हो, तब कहेंगे निश्चयबुद्धि विजयी। तो तीनों में पक्का निश्चय चाहिए, बाप में, अपने में और ड्रामा में। दर्द में तड़प रहे हों और कहेंगे – "वाह ड्रामा वाह"। उस

समय चिल्लायेंगे या "वाह-वाह" करेंगे? "हाय बाबा बचाओ" यह नहीं कहेंगे? जब निश्चय है तो निश्चय का अर्थ ही है संशय का नाम-निशान न हो। कुछ भी हो जाए लेकिन अटल-अचल निश्चयबुद्धि। कोई भी परिस्थिति हलचल में नहीं ला सकती।

बेफिक्र आत्मा बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन कर लेती है

बेफिक्र बादशाह की विशेषता, वह सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं। हर कर्म में, स्व के संबंध में वा सर्व के संबंध में, प्रकृति के भी संबंध में, किसी भी समय, किसी भी बात में संकल्पमात्र भी क्वेश्चन मार्क नहीं होगा कि "यह ऐसा क्यों" वा "यह क्यों हो रहा है", "ऐसा भी होता है क्या?" प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है। प्रश्नचित्त आत्मा "क्या", "क्यों", "ऐसा", "वैसा" – इस उलझन में स्वयं को बेफिक्र से फिक्र में ले आती है और बेफिक्र आत्मा बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन कर लेती है, इसलिए वह सदा प्रसन्न रहती है।

बुराई को, नॉलेजफुल रूप से समझने के बाद, अपनी बुद्धि में धारण मत करो

आजकल के साइन्स के साधन से भी, जो वेस्ट (खराब) माल होता है, उसको परिवर्तन कर अच्छी चीज़ बना देते हैं। तो प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेन्स की शक्ति से, चाहे बात बुरी हो, संबंध बुरे हों, संबंध बुरे अनुभव होते हों लेकिन वह बुराई को अच्छाई में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरे को अपनी शुभ भावना व श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी। कई बच्चे सोचते हैं, कहते हैं

कि "जब है ही बुरी वा गलत बात, तो गलत को गलत तो कहना ही पड़ेगा ना! वा गलत को गलत तो समझना ही पड़ेगा ना!" लेकिन गलत को गलत समझना, यह समझने के हिसाब से समझा। वह राइट और रांग – समझना, जानना अलग बात है लेकिन नॉलेजफुल रूप से जानने वाले, समझने के बाद किसी भी आत्मा की बुराई को, बुराई के रूप में अपनी बुद्धि में धारण नहीं करेंगे। तो समझना अलग चीज़ है, समझने तक राइट है लेकिन स्वयं में वा अपने चित्त पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई के रूप में धारण नहीं करना है, समाना नहीं है। तो समझना और धारण करना – इसमें अंतर है।

नई बात नहीं, बहुत पुरानी है

विघ्न-विनाशक आत्मा कभी विघ्न से न घबराती है, न हार खाती है। ऐसी हिम्मत है? क्योंकि जितनी हिम्मत रखते हैं, एक गुणा बच्चों की हिम्मत और हज़ार गुणा बाप की मदद। तो जब इतनी बाप की मदद है तो विघ्न क्या मुश्किल होगा! इसलिए कितना भी बड़ा विघ्न हो लेकिन अनुभव क्या होता है? विघ्न नहीं है लेकिन खेल है। तो खेल में कभी घबराया जाता है क्या? खेल करने में खुशी होती है ना! ऐसे खेल समझने से घबरायेंगे नहीं, खुशी-खुशी से विजयी बनेंगे। सदा ड्रामा के ज्ञान की स्मृति से हर विघ्न को "नथिंग न्यू" समझना। नई बात नहीं, बहुत पुरानी है।

बिन्दी लगाने से बिंदु रूप सहज याद आ जाता है

अचल-अडोल बनने के लिये रोज़ तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। अपने को त्रिकालदर्शी अनुभव करते हो? संगमयुग पर बाप सभी आत्माओं को त्रिकालदर्शी बनाते हैं। क्योंकि संगमयुग है श्रेष्ठ, ऊँचा। तो जो ऊँचा

स्थान होता है वहाँ खड़ा होने पर सब-कुछ दिखाई देता है। तो संगमयुग पर खड़े होने से तीनों ही काल दिखाई देते हैं। एक तरफ दुखधाम का ज्ञान है, तो दूसरी तरफ सुखधाम का ज्ञान है और वर्तमान काल संगमयुग का भी ज्ञान है। तो त्रिकालदर्शी बन गये ना! तीनों ही काल का ज्ञान इमर्ज है? तीनों ही काल स्मृति में रखो – कल दुखधाम में थे, आज संगमयुग में हैं और कल सुखधाम में जायेंगे। जो भी कर्म करो वह त्रिकालदर्शी बन कर करो तो हर कर्म श्रेष्ठ होगा। व्यर्थ नहीं होगा, समर्थ होगा! समर्थ कर्म का फल समर्थ मिलता है। त्रिकालदर्शी बनने से "यह क्यों हुआ", "यह क्या हुआ", "ऐसा नहीं, वैसा होना चाहिए"..... यह सब क्वेश्चन मार्क खत्म हो जाते हैं। नहीं तो बहुत क्वेश्चन उठते हैं। "क्यों" का क्वेश्चन उठने से व्यर्थ संकल्पों की क्यू लग जाती है और त्रिकालदर्शी बनने से फुलस्टॉप लग जाता है। नथिंग न्यू, तो फुलस्टॉप लग गया ना! फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी लगाने से बिन्दु रूप सहज याद आ जाता है।

कितनी भी बड़ी समस्या हो लेकिन आप तो मास्टर सर्वशक्तिमान हो ना! तो बड़े हुए ना! बड़े के आगे समस्या नहीं है लेकिन खेल है

बापदादा सदा कहते हैं कि अमृतवेले सदा तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और हो जो हो गया, जो हो रहा है, नथिंग न्यू, तो फुलस्टॉप भी बिन्दी। यह तीन बिन्दी का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक। मस्तक स्मृति का स्थान है इसलिए तिलक मस्तक पर ही लगाते हैं। तीन बिन्दियों का तिलक लगाना अर्थात् स्मृति में रखना। फिर सारा दिन अचल-अडोल रहेंगे। यह "क्यों" और "क्या" ही हलचल है। तो अचल रहने का साधन है – अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। यह भूलो नहीं। जिस समय कोई बात होती है उस समय फुलस्टॉप

लगाओ। ऐसे नहीं कि याद था लेकिन उस समय भूल गया। गाड़ी में यदि समय पर ब्रेक न लगे तो फायदा होगा या नुकसान? तो समय पर फुलस्टॉप लगाओ। नथिंग-न्यू, होना था, हो रहा है और साक्षी होकर के देखकर आगे बढ़ते चलो। तो त्रिकालदर्शी अर्थात् आदि, मध्य, अन्त – तीनों को जान, जैसा समय, वैसा अपने को सदा सेफ रख सको। ऐसे नहीं कहो कि "यह समस्या बहुत बड़ी थी ना। छोटी होती तो मैं पास हो जाती लेकिन समस्या बहुत बड़ी थी।" कितनी भी बड़ी समस्या हो लेकिन आप तो मास्टर सर्वशक्तिमान हो ना! तो बड़े हुए ना! बड़े के आगे समस्या नहीं है लेकिन खेल है! इसको कहा जाता है त्रिकालदर्शी। त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही निश्चिंत रहती है क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है।

क्वेश्चन तब उठता है जब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकण्ड अच्छे ते अच्छा

संगम का हर सेकण्ड अच्छे ते अच्छा है – इस निश्चय से सहजयोगी बनो। सभी प्वाइंट्स का सार क्या है? प्वाइंट बनना। सब प्वाइंट्स का इसेन्स हुआ प्वाइंट बनना। सहज है या मुश्किल है? जो सहज बात होती है वो सदा होती है और मुश्किल होती है तो (समटाइम Sometime) कभी-कभी होती है। सबसे इज़ी (सहज) क्या है? प्वाइंट। प्वाइंट को लिखना सहज है ना! जब भी प्वाइंट रूप में स्थित नहीं होते हो तो क्वेश्चन-मार्क की क्यू होती है ना! क्वेश्चन मार्क मुश्किल होता है। तो जब भी क्वेश्चन मार्क आये तो उसके बदली इज़ी "प्वाइंट" लगा दो। किसी भी बात को समाप्त करना होता है ना! फुलस्टॉप लगाने का सहज स्लोगन याद रखो – जो हुआ, जो हो रहा है, जो होगा, वह अच्छा होगा! क्योंकि क्वेश्चन तब उठता है जब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संगमयुग

है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकण्ड अच्छे ते अच्छा। इससे सदा सहजयोगी जीवन का अनुभव करेंगे। "अच्छा" कहने से अच्छा हो ही जाता है। स्वयं भी अच्छे और जो एक्ट करेंगे वह भी अच्छी! अच्छे को देखकर के दूसरे आकर्षित होंगे। सभी अच्छा ही पसंद करते हैं। सेवा अच्छी चल रही है ना! संख्या भी बढ़ाओ और क्वालिटी भी बढ़ाते चलो। ऐसे माइक तैयार करो जो एक के नाम से अनेकों का कल्याण हो जाए। स्वयं सदा सन्तुष्ट हो? अपने लिए तो कोई क्वेश्चन नहीं है ना! निश्चय है फाउन्डेशन, निश्चय का फाउन्डेशन होगा तो कर्म ओटोमेटिकली श्रेष्ठ होंगे। पहले स्मृति निश्चय की होती है। संकल्प में निश्चय अर्थात् दृढ़ता होगी तो कर्म ओटोमेटिकली फल देंगे। सभी खुश और सन्तुष्ट हैं? सदा खुशी में नाचने वाले हैं? हलचल का समय समाप्त हो गया। पास्ट को पास्ट किया और फ्यूचर तो है ही बहुत सुंदर! गोल्डन फ्यूचर है!

जो विश्व का कल्याण करने वाला है उसका अकल्याण हो ही नहीं सकता

ज्ञान में तीन का महत्व है। त्रिकालदर्शी भी बनते हैं। तीनों काल को जानते हो या सिर्फ वर्तमान को जानते हो? कोई भी कर्म करते हो तो त्रिकालदर्शी बनकर कर्म करते हो या सिर्फ एकदर्शी बनकर कर्म करते हो? क्या हो, एकदर्शी या त्रिकालदर्शी? तो कल क्या होने वाला है, वह जानते हो? कहो – हम यह जानते हैं कि कल जो होगा, वह बहुत अच्छा होगा। ये तो जानते हो ना! तो त्रिकालदर्शी हुए ना। जो हो गया वो भी अच्छा! यह निश्चय है ना कि अच्छे से अच्छा होना है, बुरा नहीं हो सकता, क्यों? अच्छे से अच्छा बाप मिला, अच्छे से अच्छे आप बने, अच्छे से अच्छे कर्म कर रहे हो। तो सब अच्छा है ना कि थोड़ा बुरा, थोड़ा अच्छा है? जब मालूम पड़ा कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, तो श्रेष्ठ आत्मा का

संकल्प, बोल और कर्म अच्छा होगा ना! तो सदा यह स्मृति रखो कि कल्याणकारी बाप मिला तो सदा कल्याण ही कल्याण है। बाप को कहते हैं विश्व कल्याणकारी और आप मास्टर विश्व कल्याणकारी हो! तो जो विश्व का कल्याण करने वाला है उसका अकल्याण हो ही नहीं सकता। इसलिए निश्चय रखो कि हर समय, हर कार्य, हर संकल्प कल्याणकारी है। संगमयुग को भी नाम देते हैं – कल्याणकारी युग। तो अकल्याण हो नहीं सकता। तो क्या याद रखेंगे? जो हो रहा है वह अच्छा और जो होने वाला है वह बहुत-बहुत अच्छा। तो यह स्मृति सदा आगे बढ़ाती रहेगी। अच्छा, सभी कोने-कोने में बाप का झण्डा लहरा रहे हो। सभी बहुत हिम्मत और तीव्र पुरुषार्थ से आगे बढ़ रहे हो और सदा बढ़ते रहेंगे। फ्यूचर दिखाई देता है ना। कोई भी पूछे – आपका भविष्य क्या है? बोलो – हमको पता है, बहुत अच्छा है।

अटल निश्चय तो अटल विजय होगी

चिंताओं से फ्री, सदा निश्चिंत वा बेफिक्र बादशाह रहने के लिए निश्चयबुद्धि बनो, सदा अपने को कल्प-कल्प की अधिकारी आत्मा अनुभव करते हो? अनेक बार यह अधिकार प्राप्त किया है और आगे के लिए भी निश्चित है कि कल्प-कल्प करते ही रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना। क्योंकि निश्चय है ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन। अगर निश्चय का फाउन्डेशन पक्का है तो कभी हिलेंगे नहीं क्योंकि फाउन्डेशन पक्का है। अभी भी देखो प्रकृति का तूफान आता है तो कौन-सी बिल्डिंग गिरती है? जो कच्ची होती। पक्के फाउन्डेशन वाली नहीं गिरेगी। तो आपका फाउन्डेशन कितना पक्का है? हिलने वाला है क्या? हिलेगी नहीं लेकिन थोड़ी दरार आयेगी? थोड़ी भी नहीं। क्योंकि कोई तो गिर जाते हैं, कोई गिरते नहीं लेकिन थोड़ी दरार आ जाती है। तो आप उनसे भी पक्के हो। तो निश्चय

की निशानी है, हर कर्म में मनसा में भी, वाणी में भी, कर्म में भी, संबंध-सम्पर्क में भी, हर बात में सहज विजय हो। मेहनत करके विजयी बने, यह विजय नहीं है। सहज विजयी। निश्चय की निशानी है सहज विजय। अगर मेहनत लगती है तो समझो कुछ मिक्स है। संशय नहीं भी हो लेकिन कुछ व्यर्थ मिक्स है इसलिए सहज विजय नहीं होती। नहीं तो विजय, निश्चयबुद्धि आत्माओं के लिए तो सदा एवररेडी है। उसका स्थान ही वह है। जहाँ निश्चय है वहाँ विजय होगी। निश्चय वालों के पास ही जायेगी ना। तो निश्चय सब बातों में चाहिए। सिर्फ बाप में निश्चय नहीं लेकिन अपने आप में निश्चय, ब्राह्मण परिवार में निश्चय, ड्रामा के हर दृश्य में निश्चय। तभी कहेंगे संपूर्ण निश्चयबुद्धि। अगर बाप में निश्चय है लेकिन अपने आप में नहीं है, चलते-चलते अपने से दिलशिकस्त होते हैं तो निश्चय नहीं है। वह अधूरा निश्चय कहेंगे। ड्रामा में भी फुल निश्चय हो। जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसको कहते हैं ड्रामा में निश्चय। ऐसे सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि हैं? कभी तो फुल हैं, कभी आधा हैं। जब अनेक बार नशा है तो अनेक बार विजयी बने हो, अब रिपीट कर रहे हो। कोई नई बात नहीं कर रहे हो, रिपीट कर रहे हो। तो रिपीट करना सहज होता है ना। तो "निश्चयबुद्धि विजयी" – सदा यह स्मृति में रहे। निश्चय भी है और विजय भी है। ये नशा हो कि हमारी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी। विजय है और सदा रहेगी। तो अटल निश्चय हो। टलने वाला नहीं हो, थोड़ी-सी बात हुई और निश्चय अटल नहीं रहे, ऐसा निश्चय नहीं हो। अटल निश्चय तो अटल विजय होगी। विजय की भावी टल नहीं सकती। अटल है। तो ऐसे निश्चयबुद्धि सदा हर्षित रहेंगे, निश्चिंत रहेंगे। क्योंकि चिंता खुशी को खत्म करती है और निश्चिंत हैं तो खुशी सदा रहेगी। तो निश्चयबुद्धि की दूसरी निशानी है निश्चिंत। नहीं तो थोड़ी बात भी होगी तो

चिंता होगी कि ये क्या हुआ, ये ऐसा हुआ। इस क्यों, क्या से भी निश्चिंत। क्या, क्यों, कैसे – ये चिंता की लहरें हैं। अभी बड़ी चिंता नहीं होगी, इस रूप में होगी, होना नहीं चाहिये था, हो गया, ऐसा, वैसा, क्यों, क्या, कैसा ये शब्द बदल जाते हैं। तो ऐसा है या कभी-कभी क्वेश्चन मार्क होता है? कई कहते हैं ना कि मेरे पास ही ये क्यों होता है? मेरे से ही क्यों होता है? मेरे पीछे माया क्यों आती है, मेरा हिसाब-किताब कड़ा है, क्यों? तो "क्यों" आना माना चिंता की लहर है। तो इस चिंताओं से भी परे, इसको कहा जाता है निश्चिंत। तो कौन हो? निश्चिंत हो या थोड़ी-थोड़ी क्यों, क्या है? निश्चिंत आत्मा का सदा स्लोगन है, अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है। बुराई में भी अच्छाई अनुभव करेंगे। बुराई से भी अपना पाठ पढ़ लेंगे। बुराई को बुराई के रूप में नहीं देखेंगे। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, निश्चिंत। "चिंता" शब्द से भी अविद्या हो। जैसे गायन है ना, इच्छा मात्रम् अविद्या। ऐसे चिंता की भी अविद्या हो। चिंता क्या होती है – यह अनुभव नहीं हो। तो ऐसी अवस्था, इसको कहा जाता है निश्चिंत। कोई भी बात आये तो "क्या होगा" नहीं आयेगा, फौरन ही आयेगा, अच्छा होगा, बीत गया, अच्छा हुआ। जहाँ अच्छा है वहाँ सदा बेफिक्र बादशाह हैं। तो निश्चयबुद्धि का अर्थ है बेफिक्र बादशाह। तो ऐसे या थोड़ा-थोड़ा फिक्र कभी आ जाता है? तो बेफिक्र बादशाह ही बाप समान हैं। बाप को फिक्र है क्या? इतना बड़ा परिवार होते भी फिक्र है क्या? सबकुछ जानते हुए, देखते हुए बेफिक्र।

जो भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ आती हैं, उनमें ड्रामा का ज्ञान अति आवश्यक है

अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनाने के लिए अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। सदा अमृतवेले स्वयं को तीन बिन्दियों का तिलक देते हो?

तिलक का अर्थ क्या है? स्मृति का तिलक। तो तिलक का बहुत महत्व होता है। तिलक राज्य की भी निशानी है। जब राज्य देते हैं तो राजतिलक कहा जाता है और भक्ति में भी तिलक की निशानी जरूर रखेंगे और सुहाग और भाग्य की निशानी भी तिलक है। तो तिलक का महत्व है। क्योंकि तिलक स्मृति की निशानी है। तो ज्ञानमार्ग में भी स्मृति का महत्व है ना। जैसी स्मृति, वैसी स्थिति होती है। अगर स्मृति श्रेष्ठ है तो स्थिति भी श्रेष्ठ होगी। अगर स्मृति व्यर्थ है तो स्थिति भी समर्थ के बजाय व्यर्थ हो जाती है। तो बाप ने तीन बिन्दियों का तिलक अर्थात् तीन स्मृतियों का तिलक दिया है। क्योंकि तीनों ही स्मृति आवश्यक हैं और तीनों ही बिन्दी सहज हैं। छोटे बच्चे को भी कहो कि बिन्दी लगाओ तो लगा देगा ना। तो मैं आत्मा हूँ, यह स्व की स्मृति और फिर श्रेष्ठ कर्म के लिए ड्रामा की स्मृति। ड्रामा चलता रहता है, बीत जाता है। जो अभी प्रेजेन्ट है वो सेकण्ड में पास्ट होता जाता है। तो बीती सो बीती, फुलस्टॉप (.)। तो बिन्दी हो गई ना। तो यह तीनों स्मृति सदा हैं तो स्थिति भी श्रेष्ठ है। सिर्फ आत्मा की स्मृति नहीं। आत्मा के साथ बाप की स्मृति है ही है और बाप के साथ ड्रामा की स्मृति भी अति आवश्यक है। अगर ड्रामा का ज्ञान नहीं है तो भी कर्म में नीचे-ऊपर होंगे। जो भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ आती हैं, उनमें ड्रामा का ज्ञान अति आवश्यक है। अनुभवी हो ना। क्या स्मृति रहती है? होना ही है, नथिंग न्यू। पहले से ही जानते हैं कि यह होना है तो विचलित नहीं होंगे। जब नॉलेज है कि होना ही है तो खेल समझकर देखेंगे। तूफान नहीं लेकिन खेल है। नाटक में भी तूफान-बाढ़ सब देखते हैं ना लेकिन विचलित होते हैं क्या? क्योंकि समझते हैं कि यह ड्रामा है। तो अचल हो या थोड़ा-थोड़ा हिलते हो? क्यों, क्या होता है? क्या होगा, कैसे होगा.... यह आता है? जब ड्रामा का ज्ञान है तो अचल-अडोल हैं। ड्रामा का ज्ञान नहीं है तो

हलचल है। तो सदा अचल हो? अभी नहीं लेकिन सदा। "सदा" शब्द नहीं भूलना। सदा माना अविनाशी।

माया अपनी स्क्रीन द्वारा आत्मा के बजाय व्यक्ति वा बातें बार-बार सामने लाती है जिससे आत्मा छिप जाती है

ज्ञाता तो नंबरवन हो गये हो, सिर्फ एक बात में अलबेले बन जाते हो, वो है – "स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करना।" समझते भी हो कि यही कमजोरी सुख की अनुभूति में अंतर लाती है, शक्ति स्वरूप बनने में वा बाप समान बनने में विघ्न स्वरूप बनती है, फिर भी क्या होता है? स्वयं को परिवर्तन नहीं कर सकते, फुलस्टॉप नहीं दे सकते। ठीक है, समझते हैं, कॉमा (,) लगा देते हैं वा क्वेश्चन मार्क की क्यू (लाइन) लगा देते हो, "क्यों" की क्यू लगा देते हो। फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दु, तो फुलस्टॉप तब लगा सकते हो जब बिन्दु स्वरूप आत्मा तथा ड्रामा दोनों की स्मृति हो। यह स्मृति फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दु लगाने में समर्थ बना देती है। उस समय कोई-कोई अंदर सोचते भी हैं कि मुझे आत्मिक स्थिति में स्थित होना है लेकिन माया अपनी स्क्रीन द्वारा आत्मा के बजाय व्यक्ति वा बातें बार-बार सामने लाती है जिससे आत्मा छिप जाती है और बार-बार व्यक्ति और बातें सामने स्पष्ट आती हैं। तो मूल कारण, स्व के ऊपर कन्ट्रोल करने की कन्ट्रोलिंग पावर कम है। दूसरों को कन्ट्रोल करना बहुत आता है लेकिन स्व (अपने) पर कन्ट्रोल अर्थात् परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाना कम आता है।

"बदलने" शब्द को आध्यात्मिक भाषा में आगे बढ़ना मानो। "बदलना" माना बढ़ना

बापदादा कोई-कोई बच्चों के शब्द पर मुसकराते रहते हैं। जब स्वयं के परिवर्तन का समय आता है वा सहन करने का समय आता है वा समाने का समय आता है तो क्या कहते हो? बहुत करके क्या कहते हैं कि "मुझे ही मरना है", "मुझे ही बदलना है," "मुझे ही सहन करना है" लेकिन जैसे लोग कहते हैं ना कि "मरा और स्वर्ग गया," उस मरने में तो कोई स्वर्ग में जाते नहीं हैं लेकिन इस मरने में तो स्वर्ग में श्रेष्ठ सीट मिल जाती है, तो यह मरना नहीं है, स्वर्ग में स्वराज्य लेना है। तो मरना अच्छा है ना? क्या मुश्किल है? उस समय मुश्किल लगता है। मैं गलत हूँ ही नहीं, वो गलत है लेकिन गलत को मैं राइट कैसे करूँ, यह नहीं आता। रांग वाले को बदलना चाहिए या राइट वाले को बदलना चाहिए? किसको बदलना है? दोनों को बदलना बड़े। "बदलने" शब्द को आध्यात्मिक भाषा में आगे बढ़ना मानो। "बदलना" माना बढ़ना। उल्टे रूप का बदलना नहीं, सुल्टे रूप का बदलना। अपने को बदलने की शक्ति है? कि कभी तो बदलेंगे ही।

"मुझे करना है" ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआएँ मिलती हैं

पवित्रता का अर्थ है ही, सदा संकल्प, बोल, कर्म, संबंध और सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना। कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने में स्वयं को पहले ऑफर करो। "मुझे करना है" ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआएँ मिलती हैं (1) स्वयं को स्वयं की भी दुआएँ मिलती हैं, खुशी मिलती है, (2) बाप द्वारा और (3) जो भी श्रेष्ठ आत्माएँ ब्राह्मण परिवार की हैं उन्हों

के द्वारा भी दुआएँ मिलती हैं। तो मरना हुआ या पाना हुआ, क्या कहेंगे? पाया ना। तो फुलस्टॉप लगाने के पुरुषार्थ को वा कन्ट्रोलिंग पावर द्वारा परिवर्तन शक्ति को तीव्र गति से बढ़ाओ। अलबेलापन नहीं लाओ। ये तो होना ही है, ये तो चलना ही है.. ये अलबेलेपन के संकल्प हैं। अलबेलापन परिवर्तन कर एलर्ट बन जाओ।

ये तूफान भी गिफ्ट बन जाती है अनुभवी बनने की, तो तोहफ़ा बन गया ना

कई सोचते हैं, बाप तो बाप है, कैसे समान बन सकते हैं? लेकिन जो निमित्त आत्मायें हैं वो तो आपके हमजिन्स हैं ना? तो जब वे बन सकती हैं तो आप नहीं बन सकते? तो लक्ष्य सभी का सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने का है। अगर हाथ उठवायेंगे कि 16 कला बनना है या 14 कला तो किसमें उठायेंगे? 16 कला। 16 कला का अर्थ क्या है? सम्पूर्ण ना। जब लक्ष्य ही ऐसा है तो बनना ही है। मुश्किल है नहीं, बनना ही है। छोटी-छोटी बातों में घबराओ नहीं। मूर्ति बन रहे हो तो कुछ हेमर (हथौड़े) लगेंगे ना, नहीं तो ऐसे कैसे मूर्ति बनेंगे! जो जितना आगे होता है उसको तूफान भी सबसे ज्यादा क्रॉस करने होते हैं लेकिन वो तूफान उन्हों को तूफान नहीं लगता, तोहफ़ा लगता है। ये तूफान भी गिफ्ट बन जाती है अनुभवी बनने की, तो तोहफ़ा बन गया ना। तो गिफ्ट लेना अच्छा लगता है या मुश्किल लगता है? तो ये भी लेना है, देना नहीं है। देना मुश्किल होता है, लेना तो सहज होता है। ये नहीं सोचो, मेरा ही पार्ट है क्या, सब विघ्नों के अनुभव मेरे ही पास आने हैं क्या! वेलकम करो, आओ। ये गिफ्ट हैं। ज्यादा से ज्यादा गिफ्ट मिलती हैं, इसमें क्या? ज्यादा एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात् हेमर लगना। हेमर से ही उसे ठोक-ठोक करके ठीक करते हैं। आप लोग तो अनुभवी हो गये हो, नथिंग न्यू। खेल लगता है। देखते रहते हो और

मुसकराते रहते हो, दुआयें देते रहते हो। टीचर्स बहादुर हो या कभी-कभी घबराती हो? ये तो सोचा ही नहीं था, ऐसे होगा, पहले पता होता तो सोच लेते....। डबल फोरेनर्स समझते हो, इतना तो सोचा ही नहीं था कि ब्राह्मण बनने में भी ऐसा होता है? सोच-समझकर आये हो ना या अभी सोचना पड़ रहा है? कितना भी, कोई भी हो लेकिन बापदादा अच्छाई को ही देखते हैं। इसलिए बापदादा सभी को अच्छा ही कहेंगे, बुरा नहीं कहेंगे। चाहे नौ बुराई हों और एक अच्छाई हो तो भी बाप क्या कहेंगे? अच्छे हैं।

बाबा कहा और बाप के साथ का अनुभव उसी सेकण्ड, उसी संकल्प में होता है

विजयी आत्माओं का यादगार क्या है? विजय माला, विजयी रत्नों की यादगार है। अनेक बार विजयी बने हैं तब तो यादगार बना है ना। अनेक बार के विजयी हैं, इस स्मृति में सदा समर्थ रहेंगे। जब अनेक बार किया हुआ कार्य है तो क्वेश्चन नहीं उठेगा कि कैसे करें, क्या करें। कोई नई बात तो है नहीं। कोई नई बात सुनी जाती है या करनी होती है तो क्वेश्चन उठता है, ऐसे करें, कैसे करें....। तो आपकी आत्मा में अनगिनत बार करने के संस्कार भरे हुए हैं। क्या होगा, ये संकल्प नहीं लेकिन अच्छा ही हुआ पड़ा है। बाबा कहा और बाप के साथ का अनुभव उसी सेकण्ड, उसी संकल्प में होता है। सेकण्ड की बात है।

सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींची हुई है

ब्राह्मणों की जन्मपत्री में तीनों ही काल अंच्छे से अच्छे हैं। जो हुआ वह भी अच्छा और जो हो रहा है, वो और अच्छा और जो होने वाला है, वह बहुत-बहुत अच्छा। सिर्फ कहने मात्र नहीं लेकिन ब्राह्मण जीवन की जन्मपत्री सदा ही अच्छे से अच्छी है। सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ तकदीर

की लकीर खींची हुई है। अपने तकदीर की लकीर देखी है? अच्छी है ना? कितने जन्मों की गैरेन्टी है?

ड्रामा में जो भी बातें आती हैं उन बातों में बहुत अच्छा अकल है। इसलिए तो बात आती है और चली भी जाती है लेकिन कभी-कभी ब्राह्मण बच्चों में अकल थोड़ा कम होने के कारण बात को पकड़ कर बैठते हैं, छोड़ते ही नहीं।

जैसा समय वैसा अपने को एडजेस्ट कर सको, ऐसा अभ्यास आगे चलकर आपके बहुत काम आयेगा

संगठन का मज़ा भी प्यारा है। आदत ऐसी होनी चाहिए जो सब में एडजेस्ट कर सको। एडजेस्ट करने की पावर सदा विजयी बना देती। ब्रह्मा बाप को देखा तो बच्चों से बच्चा बनकर एडजेस्ट हो जाता है। बड़ों से बड़ा बनकर एडजेस्ट हो जाता है। चाहे बेगरी लाइफ, चाहे साधनों की लाइफ दोनों में खुशी-खुशी से एडजेस्ट हुए ना। सोचकर नहीं। सोचने वाले को एडजेस्ट होने में कुछ समय लग जाता। कंपनी में हो या अकेले हो लेकिन दोनों में एडजेस्ट होना, ये है ब्राह्मण जीवन। ऐसे नहीं, संगठन हो और माथा भारी हो जाये और कहो, मुझे एकांत चाहिए। ये घमसान में नहीं, मुझे अकेला चाहिए... मन अकेला अर्थात् बहिर्मुखता से अंतर्मुख में चला जाये तो वह अकेलापन ही हुआ ना! कई कहते हैं, कमरा भी अकेला चाहिए। लेकिन अकेला मिले तो भी मौज़ में सोओ और दस के बीच भी मौज़ से सोओ। दुनिया की हालतें नाज़ुक हो रही हैं और अधिक भी होंगी। होनी ही हैं। अभी सिर्फ एक स्थान पर अलग-अलग होती हैं, आखिर में सब तरफ इकट्ठी होंगी। तो नाज़ुक समय तो आना ही है। समय नाज़ुक हो लेकिन आपकी नेचर नाज़ुक नहीं हो। कइयों की ऐसी नाज़ुक नेचर होती जो थोड़ा-सा आवाज वा कुछ हुआ तो डिस्टर्ब हो जायेंगे।

लेकिन जैसा समय वैसा अपने को एडजेस्ट कर सको, ऐसा अभ्यास आगे चलकर आपके बहुत काम आयेगा। क्योंकि आपका फाइनल पेपर नाज़ुक समय पर ही होना है, आराम के समय पर नहीं। तो जितना अभी से अपने को एडजेस्ट करने की शक्ति होगी तो नाज़ुक समय पर पास विद् ऑनर हो सकेंगे। चारों ओर की नाज़ुक परिस्थितियों के बीच में पेपर तो बहुत थोड़े समय पर ही होगा। इसलिए अपनी नेचर को शक्तिशाली बनाओ। क्या करें, मेरी नेचर ऐसी है, ऐसा नहीं चलेगा। स्थापना के आदि में बापदादा ने सब अनुभव करा लिया। राजकुमार और राजकुमारी से भी ज्यादा पालना का अनुभव कराया और आगे चलकर बेगरी लाइफ का भी पूरा अनुभव कराया। तो जिन्होंने दोनों अनुभव किया उनकी आदत बन गई। आप लोगों के आगे तो ऐसा समय आया नहीं है लेकिन आना है। जहां भी रहते हो, सभी हिलने हैं, सब आधार टूटने हैं। ऐसे समय पर कौनसा आधार चाहिए? एक ही बाप का आधार। आखिर में यही आधार काम में आना है।

संगम पर सारा खेल ही तीन बिन्दियों का है

आपकी कमाई वा जमा का खाता बढ़ाने का सबसे सहज साधन है – बिन्दी लगाते जाओ और बढ़ाते जाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में भी बीती को बिन्दी लगाना। तो कमाई का आधार है बिन्दी लगाना और कोई मात्रा तो है ही नहीं। क्या, क्यों, कैसे – ये क्वेश्चन मार्क की मात्रा, आश्चर्य की मात्रा, किसी की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल बन गये। तो "कैसे" शब्द "ऐसे" में बदल गया या अभी भी "कैसे-कैसे" कहते हो? "पता नही" ये शब्द संकल्प में भी बदल गया? त्रिकालदर्शी ये शब्द स्वप्न में भी नही सोच सकते तो मुख से तो बोलने का सवाल ही नहीं है। संगम पर सारा खेल ही तीन

बिन्दियों का है। सबसे सहज बिन्दी होती है या क्वेश्चन मार्क सहज है? बिन्दी सहज है ना? बिन्दी लगाने में कितना टाइम लगता? सेकण्ड से भी कम। बिन्दी लगाना आता है या कलम खिसक जाती है? कई बार बिन्दी के बजाए कलम भी लम्बी लकीर खींच लेती है। बिन्दी लगाने से आपके कितने खज़ाने बच जाते हैं। खज़ानो की लिस्ट तो जानते हो ना? अगर बिन्दी के बजाय और कोई मात्रा लगाते हो वा लग जाती है, तो ज्ञान का खज़ाना गया, शक्तियों का खज़ाना गया, गुणों का खज़ाना गया, संकल्प का खज़ाना गया, एनर्जी गई, श्वास सफल के बजाए असफल में गया, समय गया।

जब व्हाई शब्द आये तो फ्लाय शब्द याद रखो

उत्साह में रहने वाले अर्थात् सदा उत्सव मनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिए। पहले भी सुनाया था – ब्राह्मण जीवन का सांस है उमंग-उत्साह। अगर सांस चला जाये तो जीवन सेकण्ड में खत्म हो जायेगी न! तो ब्राह्मण जीवन में यदि उमंग-उत्साह का सांस नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। जो सदा उमंग-उत्साह में होगा, वो फलक से कहेगा कि ब्राह्मण हैं ही उत्साह-उमंग के लिए और जिसका उमंग-उत्साह कम हो जाता है उसके बोल ही बदल जाते हैं। वो कहेगा, हैं तो सही....., होना तो चाहिए....., हो जायेगा....तो ये भाषा और उस भाषा में कितना अंतर है! उसके हर बोल में "तो" जरूर होगा। तो ये जो "तो-तो" होता है ना, ये उमंग-उत्साह का प्रेशर कम होने से ही ऐसे बोल, कमजोरी के बोल निकलते हैं। तो उमंग-उत्साह कभी कम नहीं होना चाहिए। उमंग-उत्साह कम क्यों होता है? बापदादा कहते हैं, सदा वाह-वाह कहो और कहते हैं व्हाई-व्हाई (Why-Why)। अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आ जाता है तो उमंग-उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है।

बापदादा ने अगले साल भी विशेष डबल फोरेनर्स को कहा था कि व्हाई शब्द को ब्राह्मण डिक्शनरी में चेंज करो, जब व्हाई शब्द आये तो फ्लाय शब्द याद रखो और व्हाई खत्म हो जायेगा। कोई भी परिस्थिति छोटी भी जब बड़ी लगती है तो व्हाई शब्द आता है, ये क्यों, ये क्या...और फ्लाय कर लो तो परिस्थिति क्या होगी? छोटा-सा खिलौना। तो जब भी व्हाई शब्द मन में आवे तो कहो, ब्राह्मण डिक्शनरी में व्हाई शब्द नहीं है क्योंकि व्हाई-व्हाई, हाय-हाय करा देता है। बापदादा को हंसी भी आती है, एक तरफ कहेंगे, नहीं, हमारे जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसका नहीं है। अभी-अभी यह कहेंगे और अभी-अभी उत्साह कम हुआ तो कहेंगे, पता नहीं मेरा भाग्य ही ऐसा है! मेरे भाग्य में इतना ही है! तो हाय-हाय हो गया ना! तो जब भी हाय-हाय का नज़ारा आवे तो वाह-वाह कर लो तो नज़ारा भी बदल जायेगा और आप भी बदल जायेंगे।

बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें, बंधन के वश नहीं

एक सेकण्ड में डॉट लगा सकते हो? अभी-अभी कर्म में और अभी-अभी कर्म से न्यारे, कर्म के संबंध से न्यारे हो सकते हो? यह एक्सरसाइज आती है? किसी भी कर्म में बहुत बिज़ी हो, मन-बुद्धि कर्म के संबंध में लगी हुई है, बंधन में नहीं, संबंध में लेकिन डायरेक्शन मिले, फुलस्टॉप, तो फुलस्टॉप लगा सकते हो कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे? यह करना है, यह नहीं करना, यह ऐसे है, यह वैसे है...तो ये प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ। क्योंकि अंतिम सर्टिफिकेट एक सेकण्ड के फुलस्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा ले, सार स्वरूप बन जाये। तो यह प्रैक्टिस जब भी चांस मिले, कर सकते हो तो करते रहो। ऐसे नहीं, योग में बैठते तो फुलस्टॉप लगेगा,

हलचल में भी फुलस्टॉप, इतनी पावरफुल ब्रेक है? कि ब्रेक लगायेंगे यहाँ और ठहरेगी वहाँ! और समय पर फुलस्टॉप लगे, समय बीत जाने के बाद फुलस्टॉप लगाया तो उसमें फायदा नहीं है। सोचा और हुआ। सोचते नहीं रहो कि मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ...आत्मा हूँ, मेरे को फुलस्टॉप लगाना है और कुछ नहीं सोचना है, यह सोचते भी टाइम लग जायेगा। ये सेकण्ड का फुलस्टॉप नहीं हुआ। ये अभ्यास स्वयं ही करो। कोई को कराने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि नये, पुराने सभी यह विधि तो जानते हैं ना! तो अभ्यास बहुत काल का चाहिए। उस समय समझो कि नहीं, मैं फुलस्टॉप लगा दूंगी! नहीं लगेगा, यह पहले से ही समझना। उस समय, समय अनुसार कर लेंगे! नहीं, होगा ही नहीं। बहुतकाल का अभ्यास काम में आयेगा क्योंकि कनेक्शन है। यहाँ बहुतकाल का अभ्यास बहुतकाल का राज्य-भाग्य प्राप्त करायेगा। अगर अल्पकाल का अभ्यास है तो प्राप्ति भी अल्पकाल की होगी। तो यह अभ्यास सारे दिन में जब भी चांस मिले करते रहो। एक सेकण्ड में कुछ बिगड़ता नहीं है। फिर काम करना शुरू कर दो लेकिन हलचल में फुलस्टॉप लगता है या नहीं – ये चेक करो। न्यारे होकर कर्म के संबंध में आना और कर्म के बंधन में आना, इसमें भी फर्क है। अगर कर्म के संबंध में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुलस्टॉप नहीं लगाने देगा और न्यारे-प्यारे होकर किसी भी कर्म के संबंध में हो तो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगेगा क्योंकि बंधन नहीं है। बंधन भी खींचता है और संबंध भी खींचता है लेकिन न्यारे होकर संबंध में आना यह अन्डरलाइन करना। इसी अभ्यास वाले ही पास विद् ऑनर होंगे। ये लास्ट कर्मातीत अवस्था है। बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें, बंधन के वश नहीं।

देखो आप द्वारा (दादी जानकी) ये विदेश सेवा नूंधी हुई थी तो ड्रामा

को कोई बदल नहीं सकता। आपको जाना पड़ा और निमित्त बनना पड़ा।

(मधुबन के प्रफुल्ल भाई ने एक्सीडेंट में शरीर छोड़ा है) बच्चा अच्छा था और सेवा के उमंग-उत्साह में भी रहा लेकिन हिसाब-किताब का टाइम बनता है तो कोई न कोई कारण से बन ही जाता है। बाकी बच्चा स्वयं ठीक था।

(जब बाबा बच्चों को मदद करता है तो उस टाइम क्यों नहीं की?) उनका हिसाब उसी ड्राइवर से, उसी स्थान से होता है। भावी को नहीं टाल सकते। (डॉक्टरों ने बचाने के बहुत प्रयास किये) सभी का प्यार भी था। मृत्यु की डेट टल नहीं सकती। भगवान भी बदल नहीं सकता।

बाप भी कहते हैं – बना बनाया ड्रामा है, यह बदल नहीं सकता। रिपीट होना है लेकिन बदल नहीं सकता। ड्रामा में इस आपके अंतिम जन्म को पावर्स हैं। है ड्रामा लेकिन ड्रामा में इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म में बहुत ही पावर्स मिली हुई हैं। बाप ने विल किया है इसलिये विल पावर है। तो कौन-सा शब्द याद रखेंगे? "करन-करावनहार"। पक्का या प्लेन में जाते-जाते भूल जायेंगे? भूलना नहीं।

"मैं आत्मा हूँ", यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खज़ाना जमा होना

लोग रिचेस्ट बनने के लिए कितनी मेहनत करते हैं और आप कितना सहज मालामाल बनते जाते हो। जानते हो ना साधन! सिर्फ छोटी-सी बिन्दी लगानी है, बस। बिन्दी लगाई, कमाई हुई। आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा का फुलस्टॉप लगाना, वह भी बिन्दी है। तो बिन्दी आत्मा को याद किया, कमाई बढ़ गई। वैसे लौकिक में भी देखो, बिन्दी से ही संख्या बढ़ती है। एक के आगे बिन्दी लगाओ तो क्या हो जाता? 10, दो बिन्दी लगाओ, तीन बिन्दी लगाओ, चार बिन्दी लगाओ, बढ़ता जाता है।

तो आपका साधन कितना सहज है। "मैं आत्मा हूँ", यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खज़ाना जमा होना। फिर "बाप" बिन्दी लगाओ और खज़ाना जमा। कर्म में, संबंध-संपर्क में ड्रामा का फुलस्टॉप लगाओ, बीती को फुलस्टॉप लगाया और खज़ाना बढ़ जाता। तो बताओ सारे दिन में कितने बार बिन्दी लगाते हो? और बिन्दी लगाना कितना सहज है! मुश्किल है क्या?

अगर विदेही बनते हो, अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है

सबसे सहज बिन्दी लगाना है। कोई इन आँखों से ब्लाइन्ड भी हो, वह भी अगर कागज पर पेन्सिल रखेगा तो बिन्दी लग जाती है और आप तो त्रिनेत्री हो इसलिए इन तीन बिन्दियों को सदा यूज़ करो। क्वेश्चन मार्क कितना टेढ़ा है, लिखकर देखो, टेढ़ा है ना? और बिन्दी कितनी सहज है। इसलिए बापदादा भिन्न-भिन्न रूप से बच्चों को समान बनने की विधि सुनाते रहते हैं। विधि है ही बिन्दी। और कोई विधि नहीं है। अगर विदेही बनते हो तो भी विधि है, बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा है, अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ, वह लाल बिन्दियों का तिलक लगाने नहीं शुरू करना लेकिन स्मृति का तिलक लगाओ और चेक करो, किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं।

जमा का खाता बढ़ाने की विधि है "बिन्दी" और गंवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, क्वेश्चन-मार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना

जमा करने की विधि जानते हो? बहुत सहज है। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। बिन्दी याद है तो जमा होता है। जैसे स्थूल खज़ाने में भी एक के साथ बिन्दी लगाते जाओ तो बढ़ता जाता है ना! ऐसे ही आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीत चुका वह भी फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी। अगर हर खज़ाने को बिन्दी रूप से याद करो तो जमा होता जाता। अनुभव है ना! बिन्दी लगाई और व्यर्थ से जमा होता जाता है। बिन्दी लगाने आती है? कई बार ऐसे होता है, जो कोशिश करते हो बिन्दी लगाने की लेकिन बिन्दी के बजाए लम्बी लाइन लग जाती है। बिन्दी के बजाए क्वेश्चन-मार्क हो जाता है, आश्चर्य की लाइन लग जाती है। तो जमा का खाता बढ़ाने की विधि है "बिन्दी" और गंवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, क्वेश्चन-मार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना। सहज क्या है? बिन्दी है ना! तो विधि बहुत सहज है, स्वमान और बाप की याद तथा फालतू को फुलस्टॉप लगाना।

अभी तक भी जमा का खाता जितना चाहिए उतना नहीं है

बापदादा ने पहले भी कहा है, रोज़ अमृतवेले अपने आपको तीन बिन्दियों की स्मृति का तिलक लगाओ तो एक खज़ाना भी व्यर्थ नहीं जायेगा। हर समय, हर खज़ाना जमा होता जायेगा। बापदादा ने सभी बच्चों के हर खज़ाने के जमा का चार्ट देखा। उसमें क्या देखा? अभी तक भी जमा का खाता जितना चाहिए उतना नहीं है। समय, संकल्प, बोल व्यर्थ भी जाता है। चलते-चलते कभी समय का महत्व इमर्ज रूप में कम होता है। अगर समय का महत्व सदा याद रहे, इमर्ज रहे तो समय को और

ज्यादा सफल बना सकते हो। सारे दिन में साधारण रूप से समय चला जाता है। गलत नहीं लेकिन साधारण। ऐसे ही संकल्प भी बुरे नहीं चलते लेकिन व्यर्थ चले जाते हैं।

व्याधि को भी वाह-वाह कहो

तकदीर की तस्वीर देखो और सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह-वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार! परिवार भी वाह-वाह है! ऐसे नहीं, यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोड़ा ऐसा है! नहीं। वाह मेरा परिवार! वाह मेरा भाग्य! और वाह मेरा बाबा! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह! हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह! यह भी बोझ उतरता है। अगर 10 मण से आपका 3-4 मण बोझ उतर जाए तो अच्छा है या हाय-हाय? क्या है? वाह मेरा बोझ उतरा! हाय मेरा पार्ट ही ऐसा है! हाय मेरे को व्याधि छोड़ती ही नहीं है। आप छोड़ो या व्याधि छोड़ेगी? वाह-वाह कर ते जाओ तो वाह-वाह करने से व्याधि भी खुश हो जायेगी। देखो, यहाँ ऐसे होता है ना, किसकी महिमा करते हो तो वाह-वाह करते हैं। तो व्याधि को भी वाह-वाह कहो। हाय यह मेरे पास ही क्यों आई, मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है। प्राप्तियाँ सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो तो वह क्या लगेगा? बहुत छोटी-सी चीज़ लगेगी। मतलब तो ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पॉजिटिव रूप में देखो।

ब्रह्मा बाप का यही हर बात में शब्द था, "नथिंग न्यू"

जो भी आप बिजनेसमैन आये हैं उन्हों को चिंता है? क्या होगा, कैसे होगा, चिंता है? चिंता नहीं है तो हाथ उठाओ। कल कुछ हो जाये तो? बेफिकर बादशाह हैं? बिजनेसमेन बेफिकर बादशाह हैं? थोड़ों ने हाथ

उठाया? जिसको थोड़ा-थोड़ा फिकर है, वह हाथ उठा सकते हो या शर्म आयेगा? बापदादा ने टाइटल दिया है, बेफिकर बादशाह, बेग़मपुर के बादशाह। तो जब भी कोई ऐसी बात आये, आयेगी तो जरूर लेकिन आप बेग़मपुर में भले चले जाना। बेग़मपुर में बैठ जाना। तो बादशाह भी हो जायेंगे और बेगमपुर में भी हो जायेंगे। आपने ही आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया जाये और नई दुनिया आये, तो जायेगी कैसे? नीचे-ऊपर होगी तब तो जायेगी। कुछ भी हो जाए, आपको बेफिकर बादशाह बनना ही है। आपने ही आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया खत्म हो। तो पुरानी दुनिया में, पुराने मकान में क्या होता है? कभी क्या टूटता है, कभी क्या गिरता है, तो यह होगा ही। नथिंग न्यू। ब्रह्मा बाप का यही हर बात में शब्द था, "नथिंग न्यू", होना ही है, हो रहा है और हम बेफिकर बादशाह। ऐसे बेफिक्र हो? निर्णय अच्छा होगा तो बच जायेंगे। टचिंग होगी, अभी समय अनुसार यह करें या नहीं करें! इसीलिए फिक्र माना बिजनेस भी गिराना और अपनी स्थिति भी गिराना। तो सदैव यह याद रखो, बेफिक्र बादशाह हैं। फिक्र की बात भी बदल जायेगी, हिम्मत नहीं हारो। दिलशिकस्त कभी नहीं हो। हिम्मत से बाप की मदद मिलती रहेगी। बाप मदद के लिए बंधा हुआ है लेकिन हिम्मतहीन का मददगार नहीं है।

जब कोई कारण सामने बनता है तो कारण का सेकण्ड में निवारण सोचो

जब कोई कारण सामने बनता है तो कारण का सेकण्ड में निवारण सोचो, यह सोचो कि जब मैं विश्व का निवारण करने वाली हूँ तो क्या स्वयं की छोटी-छोटी समस्याओं का स्वयं निवारण नहीं कर सकती! नहीं कर सकता! अभी तो आत्माओं की क्यू आपके सामने आयेगी – "हे मुक्तिदाता, मुक्ति दो" क्योंकि मुक्तिदाता के डायरेक्ट बच्चे हो, अधिकारी

बच्चे हो। मास्टर मुक्तिदाता तो हो ना। लेकिन क्यू के आगे आप मास्टर मुक्तिदाताओं के तरफ से एक रुकावट का दरवाजा बन्द है। क्यू तैयार है, कौन-सा दरवाजा बन्द है? पुरुषार्थ में कमजोर पुरुषार्थ का, एक शब्द का दरवाजा है, वह है "क्यों"। क्वेश्चन मार्क (?) क्यों, यह क्यों शब्द अभी क्यू को सामने नहीं लाता। तो बापदादा अभी देश-विदेश के सभी बच्चों को यह स्मृति दिला रहे हैं कि आप समस्याओं का दरवाजा "क्यों", इसको समाप्त करो।

समय भी ब्राह्मणों को बार-बार देखता रहता है कि ब्राह्मण तैयार हैं?

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि बापदादा के पास प्रकृति भी आती है कहने के लिए कि मैं एवररेडी हूँ, समय भी ब्राह्मणों को बार-बार देखता रहता है कि ब्राह्मण तैयार हैं? ब्राह्मणों का चक्कर लगाता है। तो बापदादा पूछते हैं, हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हो, बापदादा भी खुश हो जाते हैं। अब ऐसे एवररेडी बनो जो हर संकल्प, हर सेकण्ड, हर श्वास जो बीते वह वाह, वाह हो। व्हाई नहीं हो, वाह, वाह हो। अभी कोई समय वाह-वाह होता है और कोई समय वाह के बजाए "व्हाई" हो जाता है। कोई समय बिन्दी लगाते हो, कोई समय क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की मात्रा लग जाती है। आप सबका मन भी कहे वाह! और जिसके भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, चाहे ब्राह्मणों के, सेवा क्षेत्र वालों के, वाह! वाह! शब्द निकले।

निश्चयबुद्धि की निशानी है – समस्या के समय समाधान स्वरूप

ऐसे ही ड्रामा में भी पूरा-पूरा निश्चय चाहिए। सफलता और समस्या दोनों प्रकार की बातें ड्रामा में आती हैं लेकिन समस्या के समय निश्चयबुद्धि

की निशानी है – समाधान स्वरूप। समस्या को सेकण्ड में समाधान स्वरूप द्वारा परिवर्तन कर देना। समस्या का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों? आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही माया को चैलेन्ज किया है। किया है ना या भूल गये हो? चैलेन्ज है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप, माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी ना। वह भिन्न-भिन्न समस्याओं के रूप में आपकी चैलेन्ज को पूरा करने के लिए आती है। आपको निश्चयबुद्धि विजयी स्वरूप से पार करना है, क्यों? नथिंग न्यू। कितने बार विजयी बने हो? अभी एक बार संगम पर विजयी बन रहे हो वा अनेक बार बने हुए को रिपीट कर रहे हो? इसलिए समस्या आपके लिए नई बात नहीं है, नथिंग न्यू। अनेक बार विजयी बने हैं, बन रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे। यह है ड्रामा में निश्चयबुद्धि विजयी।

समय प्रमाण सन शोज़ फादर का पार्ट ड्रामा की नूंध थी

आज विशेष ब्रह्मा बाप को याद किया ना! ब्रह्मा बाप ने भी सभी बच्चों को समृति और समर्थी स्वरूप से याद किया। कई बच्चों ने ब्रह्मा बाप से रूहरूहान करते मीठा-मीठा उलहना भी दिया कि आप इतना जल्दी क्यों चले गये? और दूसरा उलहना दिया कि हम सब बच्चों से छुट्टी लेकर क्यों नहीं गये? तो ब्रह्मा बाप ने बोला कि मैंने भी शिव बाप से पूछा कि हमें अचानक क्यों बुला लिया? तो बाप ने बोला – अगर आपको कहते कि छुट्टी लेकर आओ तो क्या आप बच्चों को छोड़ सकते थे या बच्चे आपको छोड़ सकते थे? आप अर्जुन का यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप ही रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप मुसकराये और बोले कि यह तो कमाल थी जो बच्चों ने भी नहीं समझा कि जा रहे हैं और

ब्रह्मा ने भी नहीं समझा कि जा रहा हूँ। सामने होते भी दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज़ फादर का पार्ट ड्रामा की नूंध थी, इसको कहते हैं वाह ड्रामा वाह! सेवा का परिवर्तन नूंधा हुआ था। ब्रह्मा बाप को बच्चों का बैकबोन बनना था। तो अव्यक्त रूप में फास्ट सेवा का पार्ट बजाना ही था।

एक सेकण्ड में कोई भी व्यर्थ बात, कोई भी निगेटिव बात, कोई भी बीती बात, उसको मन से बिन्दी लगाना आता है?

डबल फारेनर्स को एक सेकण्ड में कोई भी व्यर्थ बात, कोई भी निगेटिव बात, कोई भी बीती बात, उसको मन से बिन्दी लगाना आता है? डबल फारेनर्स जो समझते हैं कि कैसी भी बीती हुई बात, अच्छी बात तो भूलनी है ही नहीं, भूलनी तो व्यर्थ बात ही होती हैं तो कोई भी बात जिसको भूलने चाहते हैं, उसको सेकण्ड में बिन्दी लगा सकते हो? जो फारेनर्स लगा सकते हैं, वह सीधा, लम्बा हाथ उठाओ! मुबारक हो। अच्छा, जो समझते हैं कि एक सेकण्ड में नहीं एक घण्टा तो लगेगा ही? सेकण्ड तो बहुत थोड़ा है ना! एक घण्टे के बाद बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। जो एक घण्टे में बिन्दी लगा सकते हैं, वह हाथ उठाओ। देखा, फारेनर्स तो बहुत अच्छे हैं। भारतवासी भी जो समझते हैं, एक घण्टे में नहीं, आधे दिन में बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। (कोई ने हाथ नहीं उठाया) हैं तो सही, बापदादा को पता है। बापदादा तो देखता रहता है, हाथ नहीं उठाते लेकिन लगता है। लेकिन समझो, आधा दिन लगे, एक घण्टा लगे और आपको एडवांस पार्टी का निमंत्रण आ जाए तो? तो क्या रिजल्ट होगी? अन्त मते सो गति क्या होगी? समझदार तो हो ना?

पैसे में भी बिन्दी की कमाल, श्रेष्ठ आत्मा बनने में भी बिन्दी की कमाल

कर्म में जब आते हो तो इस सृष्टि-मंच पर कर्म करने के लिए आये हो, यह सृष्टि मंच ड्रामा है। तो ड्रामा में जो भी कर्म किया, बीत गया, उसको फुलस्टॉप भी किया है? इसलिए तीन बिन्दु सदा याद रखो। सारी कमाल देखो, आजकल की दुनिया में सबसे ज्यादा महत्व किसका है? पैसे का। पैसे का महत्व है ना! माँ-बाप भी कुछ नहीं हैं, पैसा ही सब कुछ है। उसमें भी देखो अगर एक के आगे, एक बिन्दी लगा दो तो क्या बन जायेगा! दस बन जायेगा। दूसरी बिन्दी लगाओ, 100 हो जायेगा। तीसरी बिन्दी लगाओ, 1000 हो जायेगा। तो बिन्दी की कमाल है ना। पैसे में भी बिन्दी की कमाल है और श्रेष्ठ आत्मा बनने में भी बिन्दी की कमाल है। और करनकरावनहार भी बिन्दु है। तो सर्व तरफ किसका महत्व हुआ! बिन्दु का ना। बस बिन्दु याद रखो और विस्तार में नहीं जाओ, बिन्दु तो याद कर सकते हो। बिन्दु बनो, बिन्दु को याद करो और बिन्दु लगाओ, बस। यह है पुरुषार्थ।

बापदादा क्या चाहते हैं? आपस में रूहरिहान करते हो ना तो एक-दो से पूछते हो, बापदादा क्या चाहते हैं? तो बापदादा यह चाहते हैं, सेकण्ड में बिन्दी लगे। जैसे कागज में बिन्दी लगती है, उससे भी फास्ट, परिवर्तन में जो अयथार्थ है उसमें बिन्दी लगे। बिन्दी लगाने आती है? आती है ना! लेकिन कभी-कभी क्वेश्चन मार्क हो जाता है। लगाते बिन्दी हैं और बन जाता है क्वेश्चन मार्क। यह क्यों, यह क्या? यह क्यों और क्या... यह बिन्दी को क्वेश्चन मार्क में बदल लेता है।

प्वाइंट याद रखो, प्वाइंट लगाओ, प्वाइंट बन जाओ

एक सेकण्ड में मन के मालिक बन मन को ऑर्डर कर सकते हो? कर सकते हो? मन को एकाग्र कर सकते हो? फुलस्टॉप लगा सकते हो कि लगायेंगे फुलस्टॉप और लग जायेगा क्वेश्चन मार्क? क्यों, क्या, कैसे, यह क्या, वह क्या आश्चर्य की मात्रा भी नहीं। फुलस्टॉप। सेकण्ड में प्वाइंट बन जाओ। और कोई मेहनत नहीं है, एक शब्द सिर्फ अभ्यास में लाओ "प्वाइंट"। प्वाइंट स्वरूप बनना है, वेस्ट को प्वाइंट लगानी है और महावाक्य जो सुनते हो उस प्वाइंट पर मनन करना है। और कोई भी तकलीफ नहीं है। प्वाइंट याद रखो, प्वाइंट लगाओ, प्वाइंट बन जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बीच-बीच में कितने भी बिज़ी हो लेकिन यह ट्रायल करो। एक सेकण्ड में प्वाइंट बन सकते हो? एक सेकण्ड में प्वाइंट लगा सकते हो? जब यह अभ्यास होगा, बार-बार का अभ्यास, तब ही आने वाले अन्तिम समय में फुल प्वाइंट्स ले सकेंगे। पास विद् ऑनर बन जायेंगे। यही परमात्मा की पढ़ाई है, यही परमात्मा की पालना है।

सदैव यह संकल्प इमर्ज करो, मर्ज नहीं, इमर्ज करो, मुझे करना ही है। बनना ही है। होना ही है। हुआ ही पड़ा है। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि विजयन्ती। ड्रामा विजय का बना ही पड़ा है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आबू पर्वत (राजस्थान)- 307501